

(2)

विजय मुक्तावली

सूत्रकाविकृत

Hindi Ms.

294.592

B 594

428

विजय मुक्तावली ; चूड़ाग्रणि
लिपिक ; बुधवार, १३ कार्तिक,
शुक्ल पक्ष, १८८२ वि.लि.
१८७ पत्रक ॥ ल० भ० १५ पं० प्र० पु०

ह० ल०

। श्रीगणेशाय नमः

स्वस्तिम्ह गङ्गाधिपते नमः प्रसूतादूरवनी चै
तं जितस्वर्गो गेवी सरहं पाककोपकावाको मतरसरीम
प्रगसतं कुंभकरं चै सनं चै विष्वा नीलमप्रहार
प्रीपाकार

वि. ३। ३।

गम

विजयगुणवली
रुचक विवृत

॥१॥

दोहा ॥ ब्रजराजम्

३५४

मल १

कथाएऽ

नेत्राये।

सेरिसि।

शरमहा

८३०४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

कसल।

गिवाल

लतें ३४

कीकरज

कहेमन

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

विज्ञे०

॥१॥

कौं चतुरानन चारि हों वेदवता वै ॥ जे
रिषि ब्रह्मप्रसिद्ध है सिद्ध सदा मन कांछित
सिद्धि सुपावे ॥ नारद सारद जो वत्त है सन
कादि सुकादि सबै गुन गावें ॥ बंदत ए सब
से ससुरे सदन सधने सगने सहि ध्यावै ॥ ४ ॥
॥ वा ॥ जगजननी जगबंदनी जगपा।
वनि सुषकारि ॥ गिराथिराम ति दीजिये
वरनौ ग्रंथि बीचारि ॥ ५ ॥ मथुरा मंडल
मेव सैं ॥ देस भदावर ग्राम ॥ उषलतहां
प्रसिद्धि महि ॥ छेत्र बटे स्वरनांम ॥ ६ ॥ ता
मगत न कौं पग परत ॥ अथ कोले सर है न
विकट जटे संकट कटत उरत सदा शिव।
नेन ॥ ७ ॥ सुख मथुल समूल अति जरि जा
त दुष सुल ॥ फूल होत उर में तही निरधि

कालिंदीकूल ॥ ८ ॥ सबैया ॥ चंगरपंगम
दंगकहसुक ॥ हं ध्वनिसंघनकीसुनियें क
हंरिषत्रधप्रसिद्धकहकधूसोवतसाधुम।
हामुनियें ॥ वेदनवेदितवेदनेसोंकहनृत
तगावतहेंगुनियें ॥ स्तलबटेस्वरकेछिनुवां।
दतदेतहैमुक्तिसदाडुनियें ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सु
जससुवासमुनिकटहीपुरअटेरिइहनाम
जगजजनहोमादिब्रत ॥ रचितधामप्रतिधां
म ॥ १० ॥ नगरआहिअमरावती ॥ बासीबि
बुधिसमांन ॥ आषंडलसौलसतुतहांभूपा
तिसंघकल्यान ॥ ११ ॥ कीरतिदांनक्रपान
कीकौरवमेंविस्तारि ॥ जयजुतसुजसप्र
तापसोंछाईरहीदिसिचारि ॥ १२ ॥ दोहा ॥
वेदरबदकसांनबंगसतिलंगछाई ॥ छाईर

विज्ञे०

॥२॥

हींदरमेंवारिधिकेघाटलौं॥ मांडूकुरकां
बरुं फिरंगरोहरोहितासथाईहैकुमाउवि
दिवंधवकुहाटलौं॥ गोडवानेंमारवाडमा
ह्रवठडीसाथाईथाईहैंसुदेसदेसहूबिरा
टलौं॥ थाईधराकेहरिकल्यानसंघनकी
रतिसोंकाविलकलिंगकीसमीरकरनाट
लौं॥ १३॥ दोहा॥ श्रीवास्तकाईस्थहेश्च
त्रसंघदुहिनांम॥ वसतमदावरदेसमें।
ग्रहअटेरिसुषधाम॥ १४॥ कौरवपांडवा
कीकथातिनसबसुन्योपुरान॥ तातेभा
षाग्रंथकौकीनोंछत्रबषान॥ १५॥ संव
तसतरहसैरवरषसप्तवाटिपंचास॥ शु
क्लपक्षएकादशीरच्योग्रेश्वरममांस
१६॥ नामविजयमुक्तावलीहितकरिसु

नौं जु कोई ॥ अष्टादसों पुराण कौ ताहि म
हाफल होय ॥ १७ ॥ लसतु हस्तना पुर अव
नि अमरावती समान ॥ सुरपति सो संतन
तहां चहु चक्र में आन ॥ १८ ॥ साई ररिष के
आपतैं सांतन भयों नरेस ॥ भुजवर करव
ग रषर्व वरजी तिलयो बडु देस ॥ १९ ॥ ताघरि
तरुनी सुरसुरी पति ब्रता सुषकारि ॥ प्रजा
सकल आनंद मय नि सिवा सरन नारि ॥ २० ॥
बचन सुरस होल यो सांतन यैं सुषपाय ॥
पुत्र होत मो प्रमैं दीजै भूपवहाय ॥ २१ ॥ जब
इह विधिकरि होन ही ॥ तवै तजौ तु वगेह जौ
लौं बचन न टुठरहौ ॥ तौं लौं तजौ न नेह ॥ २२ ॥
सातु पुत्र नृप कै भए दीने गंग बहाय ॥ अष्ट
सुत गंगे वतव भूतल जन मे आय ॥ २३ ॥ दो

बिज्ञे० मु० ॥ भूपतियों मन मां हि वीचारी कौं
॥ ३ ॥ न कहौ नृपता अधिकारी ॥ पुत्र भये सब गं
ग बहाए ॥ मंत्रि सबे नृप सो धिबु लाये ॥ वा
त सबे भूव भूप बधानी ॥ मंत्र कहा करिये सु
षदां नी ॥ जौवर जौग्रह गंग नरै हैं ॥ पुत्र हि
राषत प्रसमै हैं ॥ २४ ॥ मंत्री उवाच ॥ राषि
ये पुत्र रहे नृपताई ॥ गंग रहै ग्रह कौं नृप जाई
मंत्र सुन्यो इह भूपति भायो ॥ सोचलिकें त्रि
यपैत बआयो ॥ २५ ॥ राजा उवाच ॥ देसु मंग
ग अवई क मोही ॥ मांगत हो हित सैं इहतो
ही ॥ लै त्रिय पुत्र तबै कर दीनों ॥ चंद सौ आ
नन रूप नबीनों ॥ २६ ॥ दोहा ॥ पति सों कही
प्रब कथारही समाइ प्रबाह ॥ महा दुष उ
रमें भयों ॥ चक्र तचित नर नाह ॥ २७ ॥ नाग

गयोविपनसरितानिकट॥लैप्रियलोगसमाज३१॥

स्वपनी छंद॥ भयो नरेसकौं महा सु
दुष्पकौंक हों कहा॥ मही पदेषिये इसो
निसा बिना ससी जिसौ॥ २७॥ **मंत्रावाच**
नभूपसोककीजीये॥ सुपुत्र देषिजा जि
ये॥ अनेक भांति पारिये॥ सुई सुता सुधा
रिये॥ २८॥ **दोहा॥** बीते वासर जब घने
तव गंगे व कुमार॥ अस्त्र सस्त्र विद्या प
टी॥ सीधे मंत्र अपार॥ ३०॥ **षेवट तनया**
इंदु मुख॥ जो जन गंधानांम॥ निरषि भूप
मोहित भयो विज्जुलता सी बाम॥ ३२॥
अति आसक्त भयो नृपति॥ **षेवट लियो बु**
लाय॥ देहु मोहि आपनी सुता॥ मन बच
कर्म सुषपाय॥ ३३॥ **षेवट उवाच॥** तुम प्र
थीपति भूपहौ॥ मैनी चजाति मद्वाह॥

८ २२ पत्ति सातन एक दिन चलो १० घंटे का हो
गयो विपन सरितानिकट हे प्रिय लो ग समाज ३१

विज्ञे०

॥४॥

आपुही कहो बिचारी कै॥ किहि विधिय
बिवाह ॥३४॥ तो बिवाह तुम कों करों जो ई
ह ममा गै देह ॥ न पता या को सुत लहे
करो आप करि नेह ॥ ३५ ॥ ^{चो}इह सुनि राजा
मन बल पानों ॥ ग्रह तन कों तव की पोष
यानों ॥ अब सोई कहैं बिचारी ॥ जो
जन गंधा को विस्तार ॥ पाग सर सुनि बि
पन पगध स्यो ॥ तरुनी बचन प्रगट्यो
कस्यो ॥ किंति बरष बन जे है वीति ॥ क
हि संतान होइ कहरीति ॥ ३६ ॥ ~~पाग सर~~
~~रति वंती~~ ॥ रति वंती कै अबही नाही ॥ स
ब दी कै मोपास पठाई ॥ ग्यान उमंग की
दुपटर काई ॥ सुक करै लै तो पास पठाई
३७ ॥ तुजल मैं करिली ज्यों पान ॥ इहि संजो

गहोई आधान ॥ इह कहि कै मुनि बिपन-
में धाये ॥ तिहि हित महा विपन में आये ॥ ४०
रितु वंती मंजन की ये सुकियो निज तमु पास
पौहो चौ पारा सर निकट ॥ तव ही ठार अवा-
स ॥ ४१ ॥ देषत ध्यान रिषी स्वर ध्याये ॥ मन
मथित वै मृडनु उल धास्यो ॥ धस्यो पुत्र सुक-
र करषयो ॥ रिषिनी हित सोली नौ गयो ॥ आ-
यो सरिता नीकट सुकीर ॥ गिस्यो मदन जल
अच यो नीर ॥ एक मीन सों की नौ पांन ता
कौ प्रगट भयौ आधान ॥ ४३ ॥ सेष रह्यो सो
तव ही लयो ॥ रिषनी पास की रलै गयो ॥ बी-
ते पुरन मास तव ॥ गर्भ मुच्यो तिहि काल
भयो पुत्र क बिष्ट्र कहि ॥ उर आनंदति
बाल ॥ ४४ ॥ चौ पड ॥ तिहि मीन ही प्रन गर्भ

बिज्ञे०

॥५॥

मे

भयो ॥ चलि कै बटिता सुसीकार गयो ॥ ल
हिमीन संगे हगई जबई ॥ नीक सीत नया
तिहि गर्भ जही ॥ चपला जनु सोहत देह ध
रे ॥ रतिमान कों प्रदुतरूप रे ॥ दिन ताक
ऊके ते वितोत भये ॥ तनया बडूरूप अतंक
भये ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ नाम सुता मछोदरी क
रत आप कुल धरम ॥ पथिक उतारत आपने
रचित मछाह के कर्म ॥ ४५ ॥ कीनों वा दश।
आ वर्षतव ॥ पारासर मुनि राय ॥ निरषिरूप म
छोदरी ॥ गीसो भूमि अकुलाय ॥ ४६ ॥ निर
षि निरषि आसक्त के ॥ कही बात मुनि राय ॥
मोहि नोहि मृगलोचनी ॥ सरीत होय मुषया
य ॥ ४७ ॥ मछोदरी उवाच ॥ सुंदरी ॥ बात।
अबूजित कैं कहि आवहि ॥ कैं कहि आ

पुकलंक लगावहि ॥ **रिषोवाच** ॥ दै
 कृति कौति आपु अवेतिय ॥ नाहिरह्यो
 कष्ट धीरज मोहिय ॥ त्रास भयो सुनिता
 उरमें अब ॥ जानि न जाय कष्ट बिधिकी
 गति ॥ आतुर कै रीष राज दर्शति ॥ ताहि
 असन्न भयो जमहामति ॥ ५२ ॥ **दोहा** ॥ त
 व मन की दुर्गंध तानि सिजै हे सुनिवाल
 होहि सुगंध सरीरमें ॥ जो जन लौं सब काल
 ५३ ॥ लषेन को उगर्भतुव ॥ जाहु अनादि
 तधाम ॥ कै ध है पुत्र प्रसिद्धि महि ॥ तीन भु
 वन जानांम ॥ ५४ ॥ **चौपई** ॥ इह कहि कै
 रिषि ग्रह को गयो ॥ प्रगट गर्भ तरुनी को भ
 यो ॥ लषेन को कैं ताहि अवास ॥ तीनों ज

वि० मु०

॥६॥

नममयोरिषिमास ॥ ५५ ॥ बमउठिच
ल्योतहारिषिराय ॥ अतिहितवचन।
कह्योसुनिमाय ॥ जबसुधिकरेतहांच
लिआउ ॥ तेरौकठिनकलेसनसाऊ ॥ ल
प्योनकाकुमोव्योहार ॥ जिहिविधिली।
नो। रीषिअवतार ॥ जोजनइगंधाइहि
विधिभई ॥ परमरूपविधिना नर्मई ॥ ५७ ॥
॥ दोहा ॥ ताकैंसंतनुदेषिकै ॥ आयेग्रह
नरनाथ ॥ कुमिलानैमनमनमहाधीर
जधरैनहाथ ॥ ५८ ॥ ॥ राजोवाच ॥ दोहा ॥
जबतैसुतगंगागई ॥ बातेबरषैंसात ॥ श्री
नश्रीनबीततवर्षसम ॥ जुगभरिजाम।
बिहात ॥ ५९ ॥ ॥ चौपई ॥ त्रियबिनुधर्मक
र्मनहीहोई ॥ जातनुलहैबडाईकोई ॥ ध

नसंपतिलागेनहिनीकी॥ तातिनसक
लवलुहैफीकी॥ ६१॥ दोहा॥ जोजनगं
धाकीनृपतिसबबिधिकहीबषानिदे
हिनाहीअपनीसुता॥ करेंनषेवटकांने
६१॥ चलिगंगेवगयेतहां॥ ताषेवटकें।
पास॥ देईसुताभूपालकौं॥ कीनेबचन
प्रकास॥ ६२॥ षेवटवाच॥ होईराजया
पुत्रकौं॥ तीऊकरौबीवाह॥ मनसावा
चाकरमना॥ बचनदेहनरनाह॥ ६३॥
चौपई॥ तवगंगेवबचनयौकहैं॥ तुव
तनयासुतनृपतालहे॥ कैंविवाहनहि
त्रियसंग्रहैं॥ सत्यबचनमैतोसौंक
ऊं॥ मैटैबचनसोनर्कहिजाय॥ करौं
सेवऊंजानौंमाई॥ साधुजानितापितइ

वि० मु०

७॥

हमांनी ॥ आये आहन नृप सुषदां नी
करि बिवाह ले त्रियहि सिधाये ॥ तबहि
भीषम निकट बुलाये ॥ ते अति गति सु
षदी नों मोहि ॥ मै प्रसन्न बर दी नों तोहि
६४ ॥ **सवैया** ॥ मीच बुलाये विना नहि आ
यहे ॥ चाहै विना मरि है नही मासो ॥ तेरे
नन फल जाये गोवां न टरे गो नही रन का
ऊ कौटा सो ॥ तामो नही सर ओर नही डर अतरे के सब सो चनिग सो धन्य घरी जही जनमली
यो भुव ॥ धन्य तु पुत्र पिता पन पासो ॥ ६५ ॥
॥ इति श्री महाभारते पुराणे विजय सु
क्तावली कवि छत्रविरची तायां नाम
मथ मोधायः ॥ ॥ छंद तोटक ॥ नृप।
सांतन कै सुत दोय भये ॥ सुभना वसुचि
त्रविचित्र छये ॥ एन ग्यान कृपान सवे

सिधिरै॥ दिनसीषतकर्मसुकर्मनर
१॥ वडभूपतिकैउरमुष्यभयो॥ छिति
तेजमुभूपनिभूपलयो॥ इहिभांतिकि
तेकदिनबीतगर॥ सबबासरआनद
मैबीतर॥ २॥ दोहा॥ आवभुगतिन
रनाहतव॥ बासलयौहरिलोक पु
त्रकलत्रकुटंबकौ॥ उरबादौवडसो
क॥ ३॥ सुरसरिसुतसमुगईसब॥ कीया
कर्मतहकीन॥ जेठेसुततवचीत्रकौ
राजभारसीरदीन॥ ४॥ बडुरिषिराजन
बोलीकै॥ कस्यौराजअभीषेक॥ सब
परिवारप्रजानकौ॥ आवंदभयोअ
नेक॥ ५॥ सोरठा॥ काशिराईकैग्रेह
झतीसुताद्वैइमुष॥ इकअंवाअंवेह

वि० मु० ॥ मगनैनीचंपकवरन ॥ ६ ॥ अंबादी
नीबिचित्रकौं ॥ करि विवाह सुषचा
रु ॥ अंबेवाम विचित्रग्रह ॥ भईस
कल सुषसारु ॥ ७ ॥ खोर ॥ वाढ्यो
जब ॥ प्रपार ॥ प्रपनी नृपसंपतिनी र
षि ॥ सकल सहन भंडार ॥ बरन कहा
लोक बिकहे ॥ ८ ॥ चौपई ॥ दिनदि
तराजनीति बिसराई ॥ रचेकु कर्म नि
के सब भाई ॥ कल के धर्म सकल नि सि
गयो ॥ बड़ु संदेह मातु उर भयो ॥ ९ ॥ जा ॥
न्यौं जवे राज कौं नास ॥ जो जन गंधा सु
म सो व्यास ॥ प्राय गयो तब हीरी वारा
ई ॥ धाई जननी के परसे पाई ॥ १० ॥ जो ॥
जन गंधा उवाच ॥ जद्यपि मो सुत पायो

राज॥ करेंन राजनीति कौ काज॥ अैसे
कधूकीजे उपदेस॥ राजनीति मति च
लेन रेस ११॥ **आसोवाच॥** दोहा॥ सुनि
माता तो सो कहै राजनीति समगई सो
सीष दीजे सुतनि कौ सुजसर है धरषाई
१२॥ दिन प्रति व्यास कहै कथा राजनीति
सवधर्म॥ चित्रनृपति रहवात सुनि मन
मैव स्यो कुकर्म॥ १३॥ कोइ कहि जमाता
निकट॥ बैठतनि सि दिन आय॥ ताको
हतन बिचारि कै॥ गुप्त भयो तहां जाय १४॥
गीतिका॥ आय कै रिषि व्यास माता नि
कट बैठि कथा कहै॥ सुनत पारासर सु
ता सुत बचन दुष दीरघ कहै॥ मार्श कहि
कहि राजनीति हि॥ सकल विधि सो उच

वि० मु०

ए०

चरे ॥ पुत्र कहि दूजे जननी ॥ इहि भांति
श्रवण कथा करै ॥ १५ ॥ अर्ध निसीबीती
तहां रिषि मास पग्रह को धरै ॥ नारिषि
इहि विधि चित्र नृप तव वचन तिन सों उ
चरे ॥ होम हारिष राज तुम सब भांति बु
द्धि प्रवीन हों ॥ लोक की परलोक की स
ब वेद विध सों लीन हों ॥ १६ ॥ भयो मन
सा पाप या कहु सो कहौ कौं उचरै ॥ दे
हु बुद्धि निधान सिद्ध काज कै सै कै सरै
मास साध अगाध मति तव वचन तिन
सो भाषियो ॥ कहों तो सों विधि सब मन
माहि दितु करि राषियो ॥ १७ ॥ दोहा ॥
चल दल द्रुम कौं घांड़ि कै तामे अमि प्र
जारि ॥ धर्म घटि पान नित जे सब अंग

डारैजारि॥१८॥ सीषलईजोवास्येंसो
इकीयोउपाव॥ धूमधूटितिहिभांति
ही॥ गयौदेवपुरगऊ॥१९॥ दोहरा॥
इहिभांतिनरेसविलोकितवै॥ बज्रदी
नभयेनरनारिसवै॥ तबमातुमहाउर
दुषभयो॥ उडिमांनकुभीषमप्रांनगयो
॥२०॥ तबभूपतिभूमविचित्रकस्यो॥ वि
धिसौसिरउपरयत्रधस्यो॥ बरनोनृपके
सबकर्मकहा॥ सुअषेटकसोंहितआ
हिमाहा॥२१॥ इकद्योसगयौअतिहीव
नमै॥ भयनाहिकछुनृपकेमनमै॥ उठि
स्पंदतहांनरनाहहयो॥ प्रियलोगनके
उरदुषभयो॥२२॥ दोहा॥ सबसाधिनपु
रमैकही॥ बनमैबी॥ तीबात॥ सोकजुक
माताभई॥ अतिभीषमपश्रीतात॥२३॥

विजे०

॥१०॥

तबहीमाताचित्रकी॥ सुतहितबहुडष
पाय॥ हितुकैअरुअतिमोहकैभीषम
लीयोबुलाय॥ २४॥ राजावाच॥ चौपडी
नृपवीनपुरवासीनकैसंक॥ जैसीदससी
रहीनलंक॥ अबसोभईकरीजगदीस॥ रा
जभारसुततेरैसीस॥ २५॥ प्रजापालियेसुत
ज्योंमात॥ राषिराजजोबूडोजात॥ नावन
पतिसांतनकौरहे॥ भीषमसौयोंमाताक
हे॥ २६॥ भीषमउवाच॥ मातासत्यहिये
हेराघों॥ सत्यहियेहैंअसतनभाघों॥ नृप
ताकरौनतरुनीकरौ॥ तवसेवानिसिदिन
वरधरौ॥ २७॥ जोजनगंधाउवाच॥ भयो
राजसंदेहउर॥ कीजेकहाउपाय॥ प्रगटी
भीषमसौकथा॥ लज्जाजुतअकुलाय॥ २८॥
पारासरसंजोगको॥ औरवासअवतारब

रनि सुनायो भीष्म ही ॥ विधि सौ सब वो
 हार ॥ २८ ॥ जन्म त कानन को गयो व्यास
 महारिषि राई ॥ तिहि छिन मो सों प्रगट
 हि ॥ बचन सुषद सुषयाय ॥ ३० ॥ जहां कथु
 संकट परै ॥ कष्ट होय कष्टू आय ॥ सुमरत
 हि जहां प्रगट के ॥ डारों सकल न साई ॥ ३१ ॥
 दोषक ॥ भीषेयो सुनि सुषम भयो मन ॥ बैन
 क ह्यो हित वंत तत छिन ॥ मांतु बुला वहि
 तारिषि राज हि ॥ दुषद है सब कारज काज
 हि ॥ ३२ ॥ भीषम को अनुगिर ह्यो चित व्या
 स तहां सुमिरे करि कै हित ॥ सो भित आय की
 योरिषी सो थल ॥ जूट कसे कर दंड कमंडल
 ३३ ॥ बंदतु है पगमातु महामति ॥ भीषम के
 उर सुषव द्यौ अति ॥ बात बीचारि कहि स

विज्ञे०

॥११॥

गरीगुनि ॥ राजचले किहिभांतिनकेमु
नि ॥ ३४ ॥ ~~राजा राजा~~ राक उपावकरो
जोमाई ॥ तोसंतानप्रगटिहैआई ॥ चित्र
विचित्रनृपतिकीरानी ॥ होहिनससब
बसतरडारि ॥ ३५ ॥ मोआगेआवैतजिला
ज ॥ देऊअसीसहोईसबकाज ॥ होंतपसी
नहिचीतबीकार ॥ तातैजिनिकछुकरो
बिचार ॥ ३६ ॥ रानीगईमहलमेधाईपुत्र
बधूनसोबिनयोजाई ॥ उनसुनिबातअ
चंभोभयौ ॥ कैसोहैमातातोहियौ ॥ ३७ ॥
~~कोहा~~ ॥ इहिविधिआगेजेठैके ॥ कठैकौन
कहिवाल ॥ औसीकौननिलज्जत्रियक
रेजुकर्मकराल ॥ ३८ ॥ ~~चौपई~~ ॥ रानीकही ॥
समुजाईवाल ॥ भईनगनवैतैहीकाल ॥ व

ऊधकेशदेहपेडारि॥ नैनमुदिकैअंबा
नारि॥ ३९॥ आईसोसामुहीरीषीस॥ कै
उदारितीनकहीअसीस॥ इहिविधिकै
रिषिवोल्पोवेन॥ होयअंधसुतलहेनने
न॥ ४०॥ फीरिगानीअंबापैजाई॥ लेआई
ताकौंसमुमाय॥ तिनहुबसनादीयेस
बडारि॥ अंगमृतिकाल्याईनारि॥ ४१॥
सावाच॥ दोहा॥ पांडुपुत्रयागर्भतैकैहै
बहु^{पु}उषकारि॥ मृतिकाल्याईअंगरुनिभे
दकह्योनिरधारि॥ ४२॥ बांछितवरमात
हिदीयो॥ ग्रेहगयेरिषिराय॥ चित्रविचि
त्रत्रियानकौगर्भभयौसुषकारि॥ ४३॥
धक॥ पूरनमासभयेतितकौंसब॥ मातन
कैउरसुषभयौतब॥ अंधभयौसुतचित्र

विज्ञे०

॥१२॥

कीनारिहि ॥ पांडुविचित्रवधुसुषकार
हि ॥ ४४ ॥ वासरुनिसिडुंभीवाजत ॥ ज्ये
ध्वनिसोमधवाघनगाजत ॥ मंगलचारस
षीसवगावहि ॥ भांतिनभांतिनअनंद
वठावहि ॥ ४५ ॥ भीषमकरमबीचारिकी
येसब ॥ दीनडुनीबडुदानदीयेतब ॥ वि
तिगयेइहभांतिकितेदिन ॥ बाढतआ
नदहेछीनहीछीन ॥ ४६ ॥ भाढतहांबी
रदावलीगावत ॥ वारनअश्वसमूहनिपा
वत ॥ पंडितआयतहांगुनसागर ॥ नृत्य
तहेबडुधानटनागर ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ कौर
वनैआनंदकौ ॥ सुषसमूहसबिलास ॥ ज
बहीफीरसुमिरेजननि ॥ आईगयेरिषिवा
स ॥ ४८ ॥ जोजनगंधावाच ॥ तोप्रसादतै

पुत्रद्वैप्रगटभयेइहिग्रह॥ औरपुत्र
करिकैकपा॥ मोमांगेसुतदेह॥ ४९॥
॥ श्री आस ववाच ॥ बिनाबसनउहिभां
तिही॥ आवैमोतटवाल॥ आसिषदेऊ
उदारकै॥ ताकौंतैहिकाल॥ पूरे॥ अनि
दासीनगनकरिजोजनगंधामाई॥ कर
तकटाछनलाजउर॥ मंदमंदमुसका
ई॥ ५१॥ पुनः आसोवाच॥ कासिराजकी
सुतानहोई॥ इहमांतादासीहैकोई॥ या
कगर्भहोयसुतराक॥ विष्णुभक्तउरजा
नबिसेष॥ ५२॥ देआसीषतबहरीषग
यो॥ गर्भप्रगटदासीकौंभयो॥ पुत्रसरूप
तबही॥ अवतसो॥ नामविदुररिषियोउ
चसो॥ ५३॥ तीनोसुतषेलैयेकसंग॥ ल

॥वि०॥

॥१३॥

विष्णु उपजत मातत अंग ॥ लरे भी
रै धै लै इहिरीति ॥ केती वर्ष गये दिन
बित ॥ ५४ ॥ सोरठा ॥ भीषम सकल स
माज ॥ बोले बुधि जनु जोतसी ॥ दयो
अंध कहराज ॥ तिलक सीस सीर छत्र
धरि ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ राजनीति मार गथ
के भीषम बुद्धि नीधान ॥ सुजस सुबस
आरोवरण ॥ आयुध मजुत ज्ञान ॥ ५६ ॥
बिजे करन कौतव सज्यो भीषम दल च
तुरंग ॥ जीते अरि पुर जाय के लखि सुख
उपजत अंग ॥ ५७ ॥ चौपई ॥ एक नृपति पै
लीनो दंड ॥ पाटन नगर जीति वहु खंड ॥
कते करि करि अपने थपे ॥ वहुत नरे स
अंध डर कपे ॥ ५८ ॥ भीषम करि कै दिग

बिजै ॥ प्राये अपने ग्रेह पांडु ग्रंथ ध
तराष्ट्रसौ ॥ दिन दिन वटत सनेह ॥ ५८
चौपई ॥ धतराष्ट्र की चकलै झाई स
व विधिकरै पंड नृपताई ॥ इहि विधि सों
बीतौ वक्रकाल ॥ रहत जथा क्रमत ह
भूपाल ॥ ६० ॥ इति श्री महाभारते पुरा
णे विजै मुक्तावली कवि धतराष्ट्र पांडव
जन्म वर्णन नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥
दोहा ॥ सुवसभूमि कनवजपुरी ॥ व्या
वरण की भीर ॥ गंधर्व राय महीपत हं
परम सील गंभीर ॥ १ ॥ सारदा ॥ सुरपति
गंधर्व राज ॥ प्रमरपुरी कनवजनगर
पुरजन विबुध समाज ॥ हजो सरि दीजे क
हा ॥ २ ॥ ताकौं दुहिताइं दुमुख गंधारी इ

विज्ञे ० ॥

॥ १४ ॥

हनांम ॥ सची की धौ है इंडुरा कै मन सि
ज की बांम ॥ ३ ॥ धतराष्ट्र कौ पितु दर्शदी
नील ग्रपठाय ॥ करि विवाह सो चारु
सब मंगल चारु कराय ॥ ४ ॥ तब भीषम
आनंद मति ॥ आये सबै बरात ॥ अंध
राय डुलहा बन्यो ॥ सुष समुह सखा स
॥ ५ ॥ विनु लोचन कौ पति सुन्यो गांधा
री दुष पाय ॥ सखी आपनी सों कहि इ
ह सब विधिस मुखाय ॥ ६ ॥ कोमेटे वि
धि कौ लीष्यो ॥ पायौ पति विनु नैन सो
ई प्रभु है आन पति ॥ सत्य कहौ सुनि बेन
॥ ७ ॥ चौपई ॥ तब ही यौ गांधारी कहै प
रम पति जत मो उर रहै ॥ कैसी तरुणी
वेज गमाही ॥ पति कै दुष्य आपु दुष्य ना

ही॥८॥ गुरुदेवतां आपपतिज्जामें ता
की आगपानीसी दिनमोनै॥ पगनुदेहकें
सासुनभंग॥ रचै पतिव्रतके जोरंग॥ ९॥ सु
भगतितीनकी करताकरै॥ तबगांधारी
यौ अनुसरै॥ अंधराघ्रपतिकै ईगहन ले
पठीतिनवांधै नैन॥ १०॥ दोहा॥ जोविधि
दोउकुलनकी॥ व्याहभयोतिहिरीतिक
न्यादैदासीदर्शभूषनरतनसमीति॥ ११॥
भुजंगप्रयात॥ मतंगजेतुरंगसरसाजसौं
तेसाजियौ॥ अनेकभांतिदायजौ असेष
बस्तकौदयौ॥ स्पामसेतनीलपीतआ
सनेविष्ठावनै॥ दीयेसुवरनमालुमुक्तर
क्ततेघनेघने॥ १२॥ विवाहकै नरेसआ
पुग्रेहकै सिधाइयो॥ दरीइदीहदीनही

॥ दि० ॥

॥ १५ ॥

नकेसवैनसाईयों ॥ गीतनादहोतठो
रठोरसुषसुधनैघनै ॥ उपंगचंदइदभीनि
भेरिहंदनिकोगनै ॥ १३ ॥ **बिहा** ॥ कहीनृ
पतिधृतराष्ट्रहभीषमसौंसमुजायक
रोपंडकोवाहअब ॥ उतिमठोरसुधाई ॥
१४ ॥ **भीषमदोहा** ॥ नगरनकीरतनावली
मध्यनाईककुतवार ॥ कुंतलराजवषा ॥
नियंतहांभूमिभरतार ॥ १५ ॥ **सुरसैननृप**
कीसुताहितुकैंआनीग्रह ॥ जन्मकाल
केकर्मसबकीनेसहितसनेह ॥ १५ ॥ **नाम**
धरूपोकौंतातहांसकलवुधिसबुलाई
दिनदिनइहिताइंमुष ॥ अतिइतिसोस
रसाय ॥ १६ ॥ **दशद्वादशबीतेवरष** ॥ करि
कौंताचितग्यान ॥ सेयोरिषिडुरवासतब

मनवत्कर्मसुज्ञान ॥ १७ ॥ रिषि उवाच ॥
रिषिराजप्रसन्नभयोतवही ॥ प्रतिनी
श्चलध्यानधस्योजवही ॥ सिषियेसु।
अकर्षनमंत्रतवै ॥ हितुकैतिहि सीषी
लयेसुसवै ॥ १८ ॥ रिषि ॥ सुरजकौशक
धर्मकोतीजौपवनबषांन ॥ चौथोसी
सीषीयेइंद्रकोसबगुनगणननिधान ॥
चौपई ॥ पंचमतहप्रश्ननीकुमार ॥ दी
नीरीषतहपरमउदार ॥ जाकोमंत्रजपे
सुषदाई ॥ सोईदेवप्रगटीहै ॥ आई ॥ २० ॥
तोटक ॥ उनसुरजमंत्रजप्योजवही
प्रगटेसविताघरआईतही ॥ सकुची
उरपीइहभांतिषगै ॥ नरमोजगमांहि।
कलंकलगे ॥ २१ ॥ श्रीसूर्य उवाच ॥

॥ वि० ॥

॥ ६॥

बिन योजवतैं ब्रह्म जापक हो ॥ २२ ॥
अति भक्ति किये पग भूमि ॥ २३ ॥
धर्यो ॥ तब दृष्टि संजोग आधान रह्यो
त्रिय सौ तब ही इह बैन कह्यो ॥ २४ ॥ सु
त होय कली तुव गर्भ महा ॥ ब्रह्म धाव
र नौ गुन ता सु कहा ॥ प्रगटे तन बर्म
अभेद धरै ॥ घर बारि धिलैं अतिकी
र्तिकरै ॥ २५ ॥ चौपड़ ॥ लखै न कोउ तु
व आधान ॥ यो कहि भांन सिधा यो धा
म ॥ आई कोता अपने गेह ॥ धाई वु
लाई परम सनेह ॥ २६ ॥ रविकौर मित्रो
सब विधिक हो ॥ तब उन मरम सक
ल विधिल हो ॥ जब दस मास गये त
हां बीत कही धाई सौ तब यह रीति ॥ २७ ॥

आजु मुचै गोमो आधान कहै पुत्र
कह गयो भांन ॥ ल्याव मज्ज सातुरतग
ढाई ॥ तामै धरि सुत देऊ बहाई ॥ २६ ॥
॥ दोहा ॥ आन्यो धाय मज्ज सतहां ॥ क
रि मन मांह बिचारि ॥ अर्ध निमा बी
ती जहां लयो पुत्र अवतार ॥ २७ ॥ पहि
रै कवच अभेद तन ॥ कुंडल फल कत
कांन ॥ सुकुमार निभ निचंद सो षोड
स कलानिधान ॥ २८ ॥ धरि मज्जु सै मेधा
य बह दीनों सरित बहाय ॥ प्रष्टिय लो
सुत धार की हितु करि लयो उठाय ॥ २९ ॥
॥ तामरा ॥ लसै महा पुत्र स्वरूप सूर सौ
नुदै कीयो ॥ गयो सुसंघ आपनै झुला
स सौं महा हीयों ॥ दयौ तयाहि जात

॥वि०॥

॥१७॥

कर्म ॥ प्रादिकर्म ते करै ॥ अनंद भो
महाधनौ ॥ असेष दुष्पवी सरे ॥ ३० ॥ ध
स्यो विचारि नाम कर्न पुत्रयो सिधा
वई ॥ नित्य नित्य ॥ अंग मै मुजो ति ॥ आ
वई ॥ भयो प्रवीन ॥ अस्त्र सस्त्र सिधि
बोहिये धस्यो ॥ सहस्र वाहजीति पेग
यो विचारयो कस्यो ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ आ
राधेत व कमल पद पर सरा म के जाई
दिज सुत व पु विद्या पटै ॥ मन वच कर्म
चित लाई ॥ ३२ ॥ इहि विधि वहु विद्या प
ढी सिधि ई सो रिषि राज ॥ अस्त्र सस्त्र
सीषेत हां कर्ण सजे सुष साज ॥ ३३ ॥ पर
सरां म रिषि राज तव ॥ आल ससौ अल
साई ॥ कर्न जंघ परिसी सधरि ॥ सो ई रहे

सुषपाई॥३४॥ चौपई॥ कीटरूपनाराय
णआए॥ भृगुनंदनतहांसोवतपाए क
र्णजंघतनपहुब्यौजाई॥ मंडिरह्यौरुधि
रधरषाई॥३५॥ तुचाकाटिबहुआमिष
कोस्यौ॥ कर्णसुभटअंगनैकनमोस्यौ
सोवततैंभृगुपतितहांजागेदेषिरुधिर
तबष्टनलागे॥३६॥ परससमउवाच॥
सुतइहरुधिरकहांतेआयो तबरबिनं
दनभेदबतायो॥ जान्यौकर्नविप्रनही
होई॥ इहश्त्रीवालकहैकोई॥३७॥ दो
हा॥ जयपिछत्रिवंससौंहैविरोधअति
मोहि॥ कपटरूपविद्यापटी॥ अंतकु
रोमतिमोहि॥३८॥ ओटिस्त्रायआयोस
दनरबिनंदनअकुलाय॥ उतकौंताग्र

विजे०

॥१८॥

हकौगई॥ तनकेचिह्नमिटाइ॥ ३५॥ भीष्म
इतीकथाकही॥ सबनिसुनीसुषपाय
तबहीकोंतलराइपेंनेगीदयेपठाय॥ ४०॥
॥सारठा॥ कुंतलनृपपैजाइ॥ कहीबातस
मगायसब॥ तबभूपतिसुषपायपठयेने
गीलयंदै॥ ४१॥ सुनतसुषदइहवातसुभ
घटिकालीनीलगन॥ भीष्मसजीविरात
हयगयंदपरिघहुघेनों॥ ४२॥ भुजंगमप्रया
त॥ चलेमत्तमातंगअैसेविराजे॥ मनौंस्पा
मभारेमहामेघगाजे॥ चलेतेजसोंतेजती
तेतुरंगा॥ मनौंलेतलोगोंफलागोंकरंगा॥ ४३॥
चलेसाजसाजेरथीसरसेनां॥ चलेवीरयो
वकिंकडंसंकहेनां॥ चलेडुंडुभीआदिदे
सर्ववाजे॥ चलेनृत्यकारीमदंगीबीराजे

१
दोहा॥ नियराने कुतवारयु॥ अडुतगई
बरात॥ निरषिसकलविधिनगरकीआ
नदउरनसमात॥ ४५॥ हुंडकुलनकीरी
तिजोतिहिविधिकियोविवाह॥ दैकसा
वक्रधनदीयोसमद्योतवनरनाह॥ ४६॥ क
रिवविवाहनृपपंडकोभीषमपहोचोजा
य॥ भयेसगुनपेठतनगरहोहिसकलम
नकाम॥ ४७॥ सवेया॥ सगुनकोसारदेख्यो
दाहिनौंकुरंगदारभरदमयूरचारुदारसदि
षायोहै॥ दाहिनौंहीजंवूकउलूकभयो
दाहिनौंहीदाहिनौंहीलीलसुभसगुनज
नायोहै॥ दाहिनौंहीस्वानघरसूसरभो
दाहिनौंही॥ उज्जलबसनलेरजककर
धायोहै॥ अन्नपकवानरूवमृत्तिकासुगं

विज्ञे०

॥१९॥

ध्यानपूर्व सकीमालकौं विलोकि सुषया
यो है ॥४८॥ चौपई ॥ कौंताग्रह भीतरियग
धारी ॥ देखि सनमुष आई गंधारी ॥ सब गु
न सुभल छिन लपिनैन ॥ मन मेह विलषा
कहत बेत ॥४९॥ दूमी सगुनन की बिधि
सबै ॥ सकल सगुनीया वरनै तवै ॥ पठत
नगर सगुन सुभ भये ॥ नित नित आनंद दे
षे नये ॥५०॥ दोहा ॥ धर्म धुरंधर होय सुत
कौंता गर्भ प्रसविन ॥ एक ध्रुव महि भो
गवै ॥ करि समूह अरिहीन ॥५१॥ छंद वि
जोहा ॥ सज्जन मन रंजै दुर्जन गंजै भंजै दु
षद रिद्धनै ॥ सत्य कहै मुख सत्य लहै मुख
दुष्यद कहै कबि ध्रुव भनै ॥ धर्म निषारे अ
सतु निषारे जारै रोरि किते जग के ॥ भारी ॥

भयमानैनिर्भयठामें जाके गुनजसके
मगके ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ मुकिगंधारीसगु
नीयादीनोंतुरतनिकारि ॥ लोभग्रसत
लोभीकहै ॥ बातनएकविचारि ॥ ५३ ॥ व
ट्योपंडनृपतरुनिसों ॥ दिनदिनप्रेम
अपार ॥ क्रीडानिसिबासररची सुज
ससकलसंसार ॥ ५४ ॥ हूजोकस्योवि
वाहतव ॥ आनीतरुनीधाम ॥ नाममा
झीलसतसोविजलतासीवाम ॥ ५५ ॥ ग
योवियनकौंपंडनृप ॥ आषेटककैका
ज ॥ तहांहुतेतपजुक्तविजरिषिनीअ
रुषिरीगज ॥ ५६ ॥ तवहीमनमद्यमन
मथ्योकामातुररिषिराइ ॥ रतिमांगी
त्रियपैतहां ॥ अंगअंगअकुलाय ॥ ५७ ॥

विज्ञे ० रिषिनी उवाच ॥ पतिरतिनिसिमें जुक्त
॥ २० ॥ है ॥ वासर जुक्त न आहि ॥ किती विनैत
रुनी करी धीर ज होय न ताहि ॥ ५८ ॥ रि
षि उवाच ॥ पसुपंछी दिन मै रति करै
हम तुम रूप मृग निको धरै ॥ रिषिनी
मृगी आपु मृग भयो ॥ इह विधि त्रिय
सौ रतिर सठ्यो ॥ ५९ ॥ तोल गि घंड आ
ईत हांगयो ॥ विषम बांन सौं रिषि मृ
ग हयो ॥ ६० ॥ लागत बांन भयो संता
प ॥ प्रानत जतत तां दीनो आय ॥ ६१ ॥
॥ निहि विधि घंडो देह मै ॥ लागत
ही विष बांन ॥ इह विधि त्रिय सौं रति क
रत जै है तेरो प्रांन ॥ ६२ ॥ ओदि आपरि
षि राजको ॥ ग्रह आयो इष पाय ॥ महा

मलीननिसिकैंसमैं॥ योदोसेज्याजा ॥ ६२ ॥ तबकैंतानृपपैगई करिषो
उशसिंगार॥ मिसुकरिनृपसोवतल।
ष्यो॥ प्रईनिसासुषसार॥ ६३ ॥ सेवक
रतपतिकीत्रिया॥ औरपलोटीयाइ
अंगअंगदुषसौदहौ॥ उत्तरदेतनसाइ
६४ ॥ बडीवाराजाग्योनृपतितवैकौंता
सुषपाई॥ रतिमांगीतजिताअत्रियका
मातुरअकुलाय॥ ६५ ॥ विषसइषसोउ
रलग्योसुनतत्रियाकीबात॥ बचनन
हीनासीनिसाजोलोभयौप्रभात॥ ६५ ॥
दोषक॥ उठिबाहरपंडुमहीपगयौन
सुहायकछुवहुइषमए॥ गसबाजि
सवेसंगसाजितहो॥ चलिक्कैगहुचैव

वि० मु० नघोर जहां ॥ ६७ ॥ **सवेया ॥** देखितहां
॥ २१ ॥ **वनमाल के जाल तमाल विसाल न कों**
नगमें ॥ चंदन चंपक अंबक दंब सदा
फल श्रीफल बेलि घने ॥ केवरो केतकी
और करना कुलि कुंद कुम्हनि कोबरने
बेलि चमेली जुही बझ कुंज निपुंज निपुं
जनि मोहै मने ॥ ६८ ॥ **दोहा ॥** सुब सवसा
गोइं प्रपथ कानन मैति हिठोर ॥ रह्यो वि
रमि नृप पंडित है भूपनि को सिरमौर ॥ ७०
॥ **निशि नहा मारि पुराणे विजे मुक्त**
बली क विष्ट्र विर चितायां गतां पंडित
नवास ज राग नं नाम तृतीया अध्याय ॥ ३ ॥
दोहा ॥ तब कोंता मन दुष करि चली पंडु
नृपति कै पास ॥ ग्रहरक्षा कोष्ट कहि ।

गणोदासीदास ॥ १ ॥ पहोची भूपतिके
निकट नगर इंश्यमां ह ॥ रहत सुचै
नें लोग सब पंडित की छाह ॥ २ ॥ चौ
पई ॥ जानी तरुनी आवत जवही सो क
भयौ भूपति उरत बही ॥ निसिस तौ न
पसे जस वारि ॥ इंडु बदन त्रियत बषा
धारी ॥ ३ ॥ पतिको मन त्रियल है न सोई
बहु संदेस ता सु उर होई ॥ तजिल आयौ
बोली बेंन ॥ सुन कुप्रान पति बहु सुषदे
न ॥ ४ ॥ कौंता वाच ॥ काहे रचत न मो
सौं मोह ॥ कहल पि मो उर वाट तछोह
तुम सौं कहैं बचन तजिला ज ॥ कौंन
रचौरति संतति काज ॥ ५ ॥ दोहा ॥ वज्र

विज्ञे०

॥२२॥

तुल्य उर मै लगी ॥ तरुनी की इह बात बर
नीकानन की कथा विकल देत अकुलात
द ॥ **पदुवाच ॥ दोहा ॥** मृग मृगनी के रू
परिषि निरषिर तिरत मैं ॥ हयौ क ह्यौ यौ भू
प द्विज के उर सर सुध मैं ॥ ७ ॥ **दोहा ॥** आ
प दयौ रियि यौ क ह्यौ ज्यों छाडे मैं प्रांन ॥ त्यों
तरुनी संजोग ही मरन आय नों जांन ॥ ८ ॥
यों सुनि त्रिय लरि रिरि गिरी तन की न।
ही संहार ॥ सुधि आये वोली तबे इहि
विधि वारं बार ॥ **ए ॥ सवैया ॥** कै धौ हे
महस्यो अपमान कस्यो विप्रन को कै।
मौं धन धस्यो जा को ताहि मैं न दीनो है कै
धौ मैं विछो ह्यो काइ तरुनी को प्राण प

ति॥ कैंधौनीदेनिगमकिगुरदोषतीनों
 हे॥ होममैवजायोजलचरतविडारिधे
 नु॥ गूठीसाधिवोलिकैंवचनमहाहीनों
 हैं॥ कोंताकैंविलापगहिदीनोंरिषिआ
 पजाकोंअंगअंगतापु॥ ऐसेकोंनपाप
 कीनोहैं॥ १०॥ **राजोनाच॥** हौनहारकै
 इरहेनहिसुमेटीजाय॥ समाधानकैहि
 वचनकहिराषीत्रियसमागई॥ ११॥ इह
 विधिवितेदिनघनेचिंताकरिभुवार॥ कि
 हिविधिउपजैबंस॥ ग्रहहोईसकलसुख
 सार॥ १२॥ **दोहा॥** देवअकर्षनमंत्रमो
 दानेरिषीडुर्वास॥ तुमआइसुलहिजोभा
 जोसोआवैमोपास॥ १३॥ धर्मजपनपति
 तबकह्योतरुनीसोसुखपाय॥ अग्या॥

विज्ञे ०

॥२३॥

लहि सुमरंनिकियों सो पङ्कचौ ढिग आ
इ ॥१४॥ भयो दृष्टि संजोगतव ॥ सनै मह
ल संगार ॥ धर्म असी सदई धनी इह वि
धि वारं वार ॥१५॥ **धर्म उवाच ॥** ते रैग
भ होय सुत जैसे ॥ षोडस कला ससी
हे जैसो ॥ धर्म धुरंधर धर्म हि जानौ द
त्त मत्त के सब मग ठानौ ॥१६॥ भूमि भो
ग वैष्णव कछ तराज सब विधिसारे जग को
काज ॥ इह कहि धर्म गयो सुर लोक ग
र्भ धस्यो त्रियता से स्वेक ॥१७॥ दूसरा
मास पुत्र अवतस्यो ॥ मनौ प्रजनन न
भू मै धस्यो ॥ जै सै सय प्रकाशे भयो ॥ ध
र्म जन्म सहि मंडल धस्यो ॥१८॥ दो ॥
॥१९॥ नीलि दिन नारी नर सबै गावत

५५

मंगलचारु॥ होतवधाइछत्रकहि नृ
पतिपंडुदरवार॥ २०॥ तबवृग्यौनृपजो।
तिसीकहिप्रभलगनविचारि॥ कोन
मझरतसुतभयोसोवरनौविस्तारि॥ २१॥
॥ जोतसीउवाच॥ सुभदिनसुमधटिका
अयोभागवंतवहुहोइ॥ एकछत्रमहि
भोगवे॥ अरिकहुवेचैनकोइ॥ २२॥ छं
द॥ सज्जनहुलासकरिहुर्जनकोत्रासक
मंत्रवसवासकरप्रथिवीकोष्टंगारहै॥ क
मलानिवासकरपाटनविलासकर॥ मि
थुकअवासकरभूमिभरतारहै॥ जगजा
कोआसकर॥ सत्रुकोविनासकरि॥ दी
ननिकोजासकररत्नकोभंडारहै॥ पुण्य
कोप्रकासकरि॥ पापीनकोनासकर॥ नृ
पताकोभास्कर॥ धर्मअवतारहै॥ २२॥ दोहा॥

विज्ञे • ५ ॥ उपर्यो प्ररणभागतै ॥ तुवग्रहसुतं

॥ २४ ॥

बलिवंड ॥ उन्नतसकल अधीन कै दे
हि अदंड निदंड ॥ २३ ॥ इहि सुषदिन बी
ते किते रुप नियांड इक काल ॥ कही बो
लिर वनित बै देव अकषी वाल ॥ २४ ॥ जा
प्रसाद सुत हसरो प्रगट होइ मम ग्रेह ॥ मो
आइ सु अव उर धरो भूपति कह्यो सनेह
२५ ॥ जाप्य मंत्र बो ल्यो पवन अंत हपुर इ
क धाम ॥ तहां भयो संजोग तब ॥ गर्भ धस्यो
दृष्टि बाम ॥ २६ ॥ ॥ तोटक ॥ पूरन मास भा
ये प्रगटेना सुत ॥ काम स्वरूप सु सो भित्त सं
जत ॥ अंध त्रिया इह बात सबै सुनि ॥ आ
स भजे तिहि वास महामुनि ॥ २७ ॥ आई
गयौ रिषी गयतहां तब ॥ ॥ चिय बै न क

ह्योतिनसोंसब ॥ मोबरदैरिषिराजमहाम
ति सोईकरौप्रगटैसुतजागति ॥ २७ ॥ व्या
सोवाच ॥ दोहा ॥ सीसनधुनिमुनिवातश
हदेषिपरावोनैन ॥ आपुकियौसोपाईए।
कहैव्यासयौबैन ॥ २८ ॥ दीनीहरषिअसी
सतवव्यासमहारिषिराय ॥ गंधारीकौगर्भ
तबभयोप्रगटतहाआय ॥ २९ ॥ जहांसे
लकेसिषरिपरकुटीरिषिनकोधाम ॥ कौं
तालेभीमहिगईकीनौअमितप्रनाम ॥ ३० ॥
सनमुषगाज्यौस्यंधके ॥ भीमसेनतिहिका
ल ॥ ३१ ॥ अरहुंकौज्यौजलदधुनिमुनिह
रिगयौपराइ ॥ लषिगंधारीमूरछीगिरीध
रनिअकुलाइ ॥ ३२ ॥ थोरदिनकेगर्भहो
मुचिगयौतेहिकाल ॥ पस्यौपिंडसोधरनि
॥ हुलसजिसीदनेतवजिसोपाहनपरजउताले ॥

विजै०

॥२५॥

पर॥ अंग अंग व्याकुल वल॥ ३३॥ भयौ कु
लाहल सदन मै भये व्यास मनिरा॥ सुम
कारी तावं सके॥ तव ही पहुँचे आय॥ ३४
॥ चौपई॥ बरनी सबै विधि दासी कही सो
सब विधि मुनि हँदेल ही॥ के सत अंस पि
उके धरे॥ प्रांन सब न मै तब संचरे॥ ३५॥ सो
घट धृत भरिलये मगाय॥ प्रति घट पिंड अं
स सुषपाय॥ राष्पौ एक एक गुन ग्राम॥ धरे
सु अंत हपुर एक धाम॥ ३६॥ व्यास सिधा
येत वरिषि सब॥ करि गंधारी के चित चाउ
पूरन मास गये जब बीति॥ घेले घट आ
नंद समीति॥ ३७॥ प्रथम जनम डुर जो धन
लर्यो॥ हजौ घट हूसासन भयो॥ तीजे दुध
रव न सुकुमार॥ रूपवंत ज्यो सो वत भारी॥

३८ ॥ चौथै घट ० उज्ज्यौ दहवैन ॥ मान
हुतन धरि आयौ मै न ॥ इहि विधि कै सत
भये कुमार ॥ सील वंतरा चै करतारा ॥ ३९
॥ दोहा ॥ आनंद भयो धृतराष्ट्र कै जहत
हां मंगल चार ॥ कंचन भूषिन हेमगन पा
वत मंगन हार ॥ ४० ॥ सब पुर में आनंद भ
यो मन भायो सब लेत ॥ हरषि हरषि कै स
कल विधि सबै असी सनिदेत ॥ ४१ ॥ राजा
धृतराष्ट्र उवाच ॥ कहौ बिश्व आनंद म
ति जनमल ग्रको भाऊ ॥ तुम तै और प्रवी
न कोहि तु कै वो लोराउ ॥ ४२ ॥ बिश्व ३०
में विचारि देखी लग कहि न मोपे जाइ ॥ मे
रो विलुगुन मानिये सब विधि देहु बताइ
४३ ॥ जे ठौ सुत असे भयो ॥ भलौ न करि

वि०
२६॥

है काज॥ कुलहिकलंकलगाइ है और
घोवै सव राज॥ ४४॥ न राज॥ भसौ वरौ गनै
नही समूह गोत संघरै॥ लहै न सीष सो क
थु सवै क कर्म सो कर॥ न राखि पुत्र भूपनी
रमाह सो वहाइये॥ जो जिये सुवात आप
को कलंकलाइये॥ ४५॥ भये किते कप
त्र और राज काज ते करै॥ विचार और हैं
नबैन भूप मोहनै धरै॥ ४६॥ गंधारी बा
च॥ नबो लिमूठ मूठ मो भलो न तोहि भा
वई॥ बुलाय तो हिली जिये तहां सुकौं न
आवई॥ ४७॥ दोहा॥ भीषम विदुर उठे त
ही यो कही कै अकुलाइ॥ जे ठो सुब कल सं
घरै॥ कुलहिकलंकल गाय॥ ४८॥ चौपई
दिन दिन बाढत वै सो भाई॥ इह सब पंडुन

पति सुधि पाइ ॥ ४९ ॥ फुले अंग अंग दी
नौ दांन ॥ सब जाचक को राख्यो मान ॥ ४९ ॥
॥ इति श्री महाभारते पुनरुक्ति विजय मुक्ताव
लीक विष्णु विरचितायाम् दुर्योधन जन्म त
र्जन नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४॥ भुजंग प्रयात्
दर्शयं उ अगात हां बोलि बामें ॥ जजौ हं श्को
मंत्र आवै सुकामें ॥ कसौ सत्र को ध्यान
सो सत आयो भूयो दृष्टि संजोग सु सुषमायो
॥ भये मास पूरे पोषु तनी को ॥ लघै संकना
सैन सैं सो कजी को ॥ वधावो कियो दान।
दीनो दुनी कौं ॥ दायो दीन कौं ओर बंदी।
गुनी को २ ॥ चौपई ॥ कहौ जोत सी पुत्रा
की लग्य कैसी ॥ सुनावो सबै मोघरी होइ जे
सी ॥ सुनौ भूप ऐसी घरी की निकाई ॥ च

देवन करि प्रातंक भूमि वैरावतूखाने

विज्ञे ०

॥२९॥

हुं न क फे रे ध रा मे ड हा इ ॥ ३ ॥ दो ॥ वा
निमछाई प्रकास ॥ बाटसुरपुरको
ठांने ॥ सरसमूहसोंसेत ॥ सिंधुकोंमार
गमंडहि ॥ लंकापुरवरजीतिलंकपति
वरकरदंडहि ॥ छत्रवषतवरनषत
वर अंतकसोजीतहिसमर ॥ तीनभव
नकीरतकरहिसुशुभलछिनसुतपंड
धर ॥ ४ ॥ दोहा ॥ कोहरडुमतनसुतभयो
अर्जुनपायौनांम ॥ मनभायेकारिजक
रे ॥ जीतहिवडुसंग्राम ॥ ५ ॥ चौपई ॥ अ
र्जुनजनमभयौतवसुपों ॥ तबगंधारीमा
घोधुनौ ॥ कौतावलीपुत्रसबजायेपं
उराजग्रहभयेवधार ॥ ६ ॥ फिरिभूपा
तिमनमैंइहआई ॥ इंडवदनत्रिया

निकटबुलाय ॥ १० ॥ यूसमांमहमारे
 सेउ ॥ जपोमंत्रफिरि आवहिदेउ ७
 ॥ कौंतावाच ॥ मंत्रनर्जिपोंपतिगुसयां
 म ॥ पुत्रवलीप्रगटेतुवधाम ॥ पंचपुरष
 सोंजोरतिमानेंगनिकातासौकहत
 सयानें ॥ ८ ॥ तबआग्यातैइहविधि
 करि ॥ देवबुलाएउरमतिधरी ॥ जोइ
 हपतिकोकह्योनकीजे ॥ घोरनर्क
 जोआपुपरीजे ॥ ९ ॥ ॥ रजोवाच ॥ दोहा ॥
 देऊमाईकौइहमंत्रविचक्षुनवांम
 तोप्रसादसुतपावहीहोहिसकलमन
 कांम ॥ १० ॥ तबअश्वनीकुमारकौमंत्र
 दयोतिनताहि ॥ सुमिरतआयोदेवत
 है ॥ कीटिमदनघविताय ॥ ११ ॥ भयोस

विजे०

॥१८॥

हकौगई॥ तनकेचिह्नमिटाइ॥ ३५॥ भीष्म
इतीकथाकही॥ सबनिसुनीसुषपाय
तबहीकोंतलराइपेंनेगीदयेपठाय॥ ४०॥
॥सोरठा॥ कुंतलनृपपैजाइ॥ कहीबातस
मजायसब॥ तबभूपतिसुषपायपठयेने
गीलगंदै॥ ४१॥ सुनतसुषदइहवातसुभ
घटिकालीनीलगन॥ भीषमसजीविरात
हयगयंदपरिघहृद्येनौं॥ ४२॥ भुजंगमप्रय
त्न॥ चलेमत्तमातंगअरेसेविराजे॥ मनौंस्या
मभारेमहामेघगाजे॥ चलेतेजसौंतेजती
तेतुरंगा॥ मनौंलेतलागोंफलागोंकरंगा॥ ४३॥
चलेसाजसाजेरथीसुरसेनां॥ चलेवीरयो
बाकेकडुंसंकहेनां॥ चलेडुंडुभीआदिदे
सर्वबाजे॥ चलेनृत्यकारीमदंगीबीराजे

१
दोहा॥ नियगनै कुतवारयु॥ अडुतगई
बरात॥ निरषिसकलविधिनगरकीआ
नदउरनसमात॥ ४५॥ डंडकुलनकीरी
तिजोतिहिविधिकियोविवाह॥ देकन्या
बहुधनदीयोसमद्योतवनरनाह॥ ४६॥ क
रिवविवाहनृपपंडकोभीषमपहोओजा
य॥ भयेसगुनपैठतनगरहोहिसकलम
नकाम॥ ४७॥ सवेया॥ सगुनकोसारदेख्यो
दाहिनौंकुरंगदारभरदमयूरचारुदारसदि
षायोहै॥ दाहिनौंहीजंवूकउलूकभयो
दाहिनौहीदाहिनौहीलीलसुभसगुनज
नायोहै॥ दाहिनौंहीस्वानघरसूसरभौ
दाहिनौही॥ उज्जलबसनलेरजककर
धायोहै॥ अन्नपकवानरूवमृत्तिकासुगं

वि.
२९॥

पवंतमई मापीतव॥ कीनो जव असन
न॥ २२॥ पतिकी सज्या कौ चली॥ क
रियो इशसिंगार॥ नवल चीर आभर
नवहु॥ कंकन तस्विनहार॥ २३॥ सवे
या॥ धंजन की गति गंजनै न करी प्रग
अंजन रेखनिकाई॥ भूषित कैं मुक्ता
निके हारसिंगारिसजी सब सुंदरताई
पीमवरोज सरोज मुषी सब देह मनो॥
जके ओज सौं ताई॥ चतुरकाम की पातु
रसी॥ प्रति आतुर कै पति पास सिधाई
॥ २४॥ दोहा॥ इंडु बदन त्रिय पति निरषि
कामातुर अकुलाय॥ दंपति रति मा॥
नी हरषि॥ रिषके बचन नि साय॥ २५॥ त
वही मुख संजोग मै भूपति छाडे प्रांन॥ अं

०५५
०५

धकारुष कौं जगत भूप आंध यो भान
२६ ॥ सो क कुं ट बनिके भयो नर नारि न उ
रुष ॥ रह्यो न आस्यो वरण मै ॥ काहु कै
उर सुष्प ॥ २७ ॥ चौ पद् ॥ रिषिन आय कौं
ता स मुगई ॥ करता कत सौ कहा वसा
ई ॥ सह देवन कुल मा दी लीये ॥ मोह धां
डि कौं ता कौ दिये ॥ २८ ॥ मा दी उ वा च ॥ ज्यों
अपने तीनों सुत जानों ॥ त्यों मो पुत्र नि सों
हितु ठां नों ॥ इह कहि उठि तत छिन का
मनि भूपति संग भई सह गामनि ॥ २९ ॥ ज
ब इह सुध भीषम कौं गई ॥ सहित बिडुर
बहु चिंता भई ॥ की नौ पंड नृपति को सो ग
षां न पान वज्र भू ल्यो भोग ॥ ३० ॥ दो हा ॥ च
लि आये ते इंद्र पथ सम जाये नर नारि ॥ लै पां

वि०
३०॥

कौं पुत्र निचलेयों ॥ कौं ता जु त सुषकारि
२१ ॥ नगर हस्त ना पुराण ॥ सब ही लै सु
षपाय ॥ गांधारी उर दुष भयौ देखत बडु
पछिताइ ॥ ३२ ॥ गांधारी उवाच ॥ इर जो
धन की सेवा करौ ॥ सेवा त न मन लाइ ॥ आ
धी नृपताली जीय धर्म पुत्र सुषपाइ ॥ ३३ ॥
इति श्री महाभारते पुराणे विजय मुक्ता व
ली कवि अत्र विरचितायां अर्जुन सहदे
वन कुल अवतार वरण नाम पंचमोऽध्या
यः ॥ ५ ॥ दोहा ॥ इर जो धन कौं आदि दे
सत बंधव वरबीर ॥ इतहि पंच नृप पंड
सुत तेषे लै इक तीर ॥ १ ॥ राषत उर मै दुष्ट
ता कौरव भोंति अपार ॥ ताका वारन बां
कई जौ सुहाइ करता ॥ २ ॥ मत्त सहस स
म भीम बर दीनौ त्र भवन नाथ ॥ चाहत

बांधौ ताहि बरजुरि कौरव इक साथ
३॥ सुंदरी॥ मंत्र कीयो इहि भांति सबे
जन॥ भीमहि बांधो आजु तत छिन॥ या
हि दियो विधि आहि महा बर॥ मारत
ताहि अनाथ जु धिष्टिर॥ ४॥ वेन ही बं
धु कष्टु करि जां नहि॥ जो कहि बो सोई
आय सुमानहि॥ ते सरिता तट खेलत है
सुत॥ कौरव पंडव आनद संजुत॥ ५॥ को
नहरा वहि भीमहि को बर॥ साजु बीर
कष्टु अपनौं छर॥ सो वत बांधव रुकै दृढ
बंधन॥ गंगा वहारु वाहित त छिन॥ ६॥
॥ दोहा॥ भीम सुवायो सदन में सत बंधव
सुषपाई॥ दिट बंधन सो बंधि कै चाहत
लयो उठाय॥ ७॥ रह्यो मष्ट कै पवन सुत

विज्ञे ०

॥३१॥

येषु कृतिनैः प्राश्नैः तैः तोहमूढमतिभिः
कैः उगाय ॥ ८ ॥ पचिहोरे सतबंधवै।
सकैः न ताहि उगाय ॥ दुरजोधन अद्भुतग
न्यो अवलोक्यो सो आश् ॥ ९ ॥ **दुरजोधन उ**
वाच ॥ प्रथमकस्यौ तुम प्रांन बिनु फिरि
ह बांधो आश् ॥ अर्बकं टक मेरो मिट्यो दी
जे गंग बहाश् ॥ १० ॥ बर करिली यो प्रजंक जु
त दुसासन धरि सीस ॥ चले वहावन सुरसरी
संग बंध दश बीस ॥ ११ ॥ दास्यो गंग प्रवाह
मैं देख्यो को सक जात ॥ दुरजोधन सौं आ।
निकै कहि सकल विधि बात ॥ १२ ॥ **चौ प**
श् ॥ सब को रव मन आनंद भयो ॥ अब नि
ज साल हमारो गयो ॥ अब वै आरु बंधक अ
नांथ दीजै आरिया मन रनाथ ॥ १३ ॥ जो क
हि हो जो सेवा करि है ॥ अब नही गर्व कथ्य

चित्तधरिहै ॥ बंधनतेरिभीमतवधायो को
रवजहांतहांचलिआयो ॥ १४ ॥ **चौधरी**
षतहीकुम्हिलाइ ॥ योसब ॥ केतिकभांगिच
लेग्रहकोंतव ॥ बोलतहैसबकोखयागति
षेलकियोहमबंधुमहामति ॥ १५ ॥ **भीमसेन** ॥
षेलकीयोतुमसोहमजानत ॥ इसनआपवि
सासनठांनत ॥ भूपजुधिष्टिरआयसुमांनहु
नांतरआजुसवैतमजानहु ॥ १६ ॥ **दुरतोधन**
उवाच ॥ गंगबहायदयोजबतइनि ॥ मोहिभ
ईउरमैरिसियोसुनि ॥ मैपठयोदहबैनतहां
तव ॥ तचलिआयागयो कितकैअव ॥ १७ ॥ **ग**
तिका ॥ करीगूंठीसोंहइनकछूनहीमोहिज
नाईयो ॥ षेलबंधनफासिचलिकेभलेमोडि
आइयो ॥ **भीमसेनउवाच** ॥ कारौभूपतिकांनि

उच्च सुतमि न दुषरे नृलोपों के लै मही ३

विजै०

॥ ३२ ॥

तेरी ॥ धर्म सुत सिध में लई ॥ ना तरब चौ कित मो
हिरो रत जाइ कों रिस आगई ॥ १८ ॥ कहि बैन
ये चलि सदन प्रायो ॥ प्राय माता सों कही ॥ जां
नि कै मो धुधित बै सब बचन कर्कट उच्च से स
ही ॥ जब करौं हौ धर्म सुत की आन बै सब पर
जरै ॥ १९ ॥ बांधि कै गंगा बहायो दया फिरि जिय
मै धरी ॥ छोरि बंधन सकल दानें वाट मै ग्रह की
लई ॥ २० ॥ **कौं ता उवाच ॥** मानि दुख जो धन मही
पति कां निति न की की जीये ॥ जो कहै नर नाथ
है सोई मांनि आइ सुली जीये ॥ २० ॥ धुधित जानौ
भी मत ब आहार लै आगै धस्यो ॥ भार के ते अन्न
विंजन त्रिपति कै भोजन कस्यो ॥ उदर पूरन के उ
द्यो वहु वसन बसान निसाजि कै ॥ उठि गयो कौ
रव की सभात ब डुरद सो गल गाजि कै ॥ २१ ॥ देखि

कंकुराज आदरहेत सौं बड़ विधिक सो
छरस भोजन कस्यो नुम हित वचन इह वि
धि अनुसस्यो ॥ मोहतु मसौं मोहिये अरु
सकल अनुजन के हियें ॥ निसिद्यो सदेव त
तोहि आनद छिनक विधुरे नांजिये ॥ २२ ॥ वि
दुर ॥ दोहा ॥ सब कौरव की दृष्टि छम विदुर
कही इह आन ॥ तू कित आयो भीम इहां वि
ष ज्यों नारहिषान ॥ २३ ॥ विदुर ॥ आवत
ह्यां बड़ भो दुचितो लपितो हि यसाजि चल्यो
अंग चै ॥ जानत नाहि सबै मिल जागत ३।
ष दियो अति नांकहि चै ॥ भोजन की नों म
हा विष संजुत तू कहि बावरो कै ॥ धर्म के नं
दन जै सै बचावत काल बचावत तू दिन कै ॥ २४ ॥
भीमसेन ॥ सिंह बबन कहि कों करै जो

वि० मु०

॥ ३३ ॥

क जगं श्री धांई ॥ मरि कसु को धां न उर
काल कहानियराय ॥ २५ ॥ कहि नृपति सों।
मोहितुम ॥ जो चाहो अघ वाय ॥ सकुच वृषा
डि भोजन करौ ॥ विदुर ग्रेह जो जाई ॥ २६ ॥ इसा
सन उठितुर तही विदुर पगयो धाम ॥ जेवन
बैग्यो भीमत बसजे सकल मन काम ॥ २७ ॥
हं डक ॥ रस हूँ मैरो सहूँ मै हासी अरु खेल डु
मै ॥ ग्रेह अरु बाहिर न नैंक मन लचयो दुष्ट
दुर जो धन हलाहल कै ॥ आधो आध ताकि हि
ये दुष्ट तानि भोजन हो रचयो ॥ ल्याय ल्याय।
आमिष अनेक पक पकां न तहां स्वार निस।
वारि कै समूह आगे सचयो ॥ कीनी न गलानि
सोई कंबि को बषान कहै जां निवृत्ती पौं न प्र
त सोई विष पचयो ॥ २८ ॥ दोहा ॥ जित नो ल्या

वतस्वारकष्टू॥ जारिजाततिहिंवार॥ व
चोरसोईमैनकष्टू॥ जिमयौकइयो॥ नार२२
॥ दोधक॥ भीमचल्यौतबहीग्रहआयो
कंचनपालिकधांमबध्रयौ॥ सोइरह्यो
मनआनदकीनौ॥ सोधतहांसतबंधवली
नौ॥ ३०॥ रौमिगईनिसिकौरवधाये कुंतलकी
तनयाडिगआये॥ सोवतभीमकहासुषपा
यौ॥ खेलनकौंअबकौंनजगायौ॥ ३१॥ जागि
उद्यौचलिसोइतहआयौ॥ संभ्रमइष्टनि
कौमनघायौ॥ बेगिनरेसहिजायजुहासो॥ रौ
कौरवकैउरसंभ्रमपास्यो॥ ३२॥ ॥ इरजाध
नउ॥ कहाकरैकैसीकरैकैजेकौनउ
पाय॥ सोईसबविधिकीजियेयाकहिले
ऊहराई॥ ३३॥ चौपई॥ वरतरचलिकैखेल

विज्ञे०

॥३४॥

षिलावैं ॥ सब मिलि शूल करि तारि ह
रावै ॥ जब जब भी मंद डलै आवै ॥ बट च
ठिर हो न घुवत सो पावै ॥ ३४ ॥ तब सब ब
टु मत न चलि गये ॥ बालि भी महु सास
न लये ॥ खेलै भैया खेल अप्रसं ॥ जो हारे
सो लावै हि दंड ॥ ३५ ॥ भीम से न उ० ॥
रूपत है पग वीर हमारों ॥ देखौ कौतिक त्वे ।
ठिति हारों ॥ हरये खेल खेलये ऐसे खेलै भैया
बंध को सै ॥ ३६ ॥ दंड क ॥ खेलौ वीर ऐसे
खेल आपस को जै सैं जो पे खेलि हौ ॥ अने
सैं तो न खेल खेलौ परि है ॥ आनि है जुरा सता
हि ॥ देहै हम दोस फेरि घै है अफ सोसन हा
मारौ कष्ट करि हैं ॥ पगु है पिदा तता तें चली
ऊन जात मो पैसांची कहौ वात पे डया ऊतै उ

सरिहैं॥ हारैहरवाइदाउलीलैजूचलाइतो
तोषेलैंहमआइपायपीउतैनउरिहैं॥३७॥
हसासनउवाच॥ दोहा॥ जोहारैतूदा
वतूद्वौसपांचयेदेइ॥ जोजतिंतोआजु।
हीपकरिआपनौलेइ॥३८॥ दंडचलायोभी
मतबपस्योगंगकीपार॥ हसासनतबपैरि
कैलैआयोतिहिंबार॥३९॥ आवतजान्यो
निकटसोधायोभीमघुराई॥ चटिनसको
बटब्रधपरलयौहसासनआइ॥४०॥ चौपा
ई॥ सोभाईवैफूलेगातनि॥ सबैउच्चरतिअ
सीवातनि॥ दीजेअवहीदावहमारो अव
हिनिकासैंगर्वतिहारो॥४१॥ **भीमसेनउवाच॥**
सुनौंकह्योतुमजोसत्यभाउद्वौसपांचयेली
जेदाउ॥ पगमेरोहैंपिराततातैमोपैचल्योन

विजे ०

॥ ३५ ॥

जात ॥ ४२ ॥ **हूसासन उवाच ॥** अबक से जे
तक कै सत्य भाउ ॥ तो हम छोड़े आपनों दाऊ
ठाठो भीमसेन यौ भाषै ॥ दाव बिरा नो कै से
राखै ॥ ४३ ॥ **दियौ हूसासन दंड चलाय पस्यौ**
सुतो को सक परिजाय ॥ डुटत भीम ल्याइयो त
हां ॥ कोरव बंध कृते सब जहां ॥ ४४ ॥ **हूसास**
न फिरि उत स्यौ धाइ ॥ चाहत दंड देहु चलाय
पकस्यौ भीम बीच ही आय ॥ सकौ न दंड
दूरि पकंचाइ ॥ ४५ ॥ **तब हूसासन बट को धा**
यौ ॥ अधपर पौ न पूत छिपायो ॥ भीम ० ॥ उ
तरि दाउ हूसासन दीजे ॥ अबक छूलो भन
आपन कीजे ॥ ४६ ॥ **दोहा ॥** सब मिली बट
पर चठि रहे सुनै न को उबात ॥ भीम गह्यो
द्रुम मूल तब हर्षवते क्रेगात ॥ ४७ ॥ गहियो

मटी डार सवर हियो स बैस म्हारि ॥ पवन
 चल्यो है वीर इह सकल गिराये ॥ मारि ॥ ४८
 दंडक ॥ एक अधो मुख एक गिरत उरध मुख
 धुकि धुकि परे धरा धरे धर कर कत है ॥ एक लो
 टपोटकै कै चोटे घाई घाई उठे एक अधर फ
 र साधा गहै ॥ लर कर फर फर कत है ॥ अध सुत
 अध सुत बंध डारे डारि नितै घाई लकै घूं मि प
 रे भूमि बर कत है ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ जे वर्ग राय घर
 को भज गए भीम ते धाई ॥ सब पोर घसाह सा
 गयो उबरे हाहा घाई ॥ ५० ॥ दइ मही पति को
 त बैबीती कथा सुनाय ॥ रोष वंत भूपति भयो
 सुनिकै बड़ दुष पाई ॥ ५१ ॥ इति श्री महाभार
 त पुराणे विजय मुक्तावली कवि ध्वज विरचि
 ता यां भीमसेन कौरव संवाद वर्णन नाम ष
 ठे दुर जे धन उवाच ॥ ही वरन लीजियै रहे सकल जग गा प
 तो लाजु मुनि ॥ जे उहै होर न रहे छुड़ाय ॥

विज्ञे०
॥ ३६ ॥

सुमोध्याय ॥ ६ ॥ सोरठा ॥ बेलतयेक हीसा
थ कौरवपांडव अनुजसब ॥ मारतकंडुक
हाथजैसैं ससावहिरिको ॥ १ ॥ दोहा ॥ उष्ट्र
रीकंडुकतिहिछिनकपरीकूपमैजाइ ॥ काट
नकों सबबंधुमिलिसाजतकितेउपाइ ॥ २ ॥
गीति० ॥ कूपतटरिषिद्रोणआयोनिरषि।
इहिविधिसौकहै ॥ नहीहैसमरथ्यको
ऊँकाटिकंडुककोलहै ॥ बंसष्ट्रीकोलजा
वतजतननहीकरिआवई ॥ काटितुमकों
देइइहत्रनसीकजोकोउलावई ॥ ३ ॥ प्राणि
आफीसीकताकरधनुषताकोतिहिकस्यो
बानुताहीकौरखोतिहिकालधनुषऊपरि
धस्यो ॥ लग्यो कंडुकमाहसोसरुसीकडुजो
करलयो ॥ करिकर्मअद्भुतबेगिदैइषमा ॥

२५॥छी

हरी॥ इषसौ दयो॥ ३॥ दोहा॥ इह बिधि
बेधी सां कसों सां के कूप मगार॥ अंत सीक
गहि ^{उदा} ~~उदा~~ डियो गेद ~~अ~~ त्रति हिंवार॥ ५॥ चौपा
॥ देवत सकल अचं भैरि॥ समाचार भी
मम सों कहे॥ लये पितामह विडुर बुलाई प्रो
ण विप्रदिग पद्म चौ आई॥ ६॥ लै द्विज प्राये अ
पने अह करि सनमां नरचौ वहु नेह॥ सब सि
सुना पहि विद्यापटे॥ नित नित चावचौ गुनौ
बैटै॥ ७॥ अस्र सस्र विद्या सब जां नि विडुर
पितामह कै मनमां नी॥ तिनमें अर्जुन भौं अ
धिकारी॥ गुर प्रसाद पायौ गुन भारी॥ ८॥ दो
॥ देखौ चाहत सि सुन कौंत बगुरु प्रोण प्रभा
व॥ कस्यो अषारौ सदन में बोले राजा राव ९
॥ तोटक॥ रवि पुत्र तहां तव कर्न गयौ कर

विज्ञे०

॥३७॥

नंदनसाथमिलापभयो॥ अतिअभिवि
 शेषकस्यो॥ हितसौनरनायकहाथधस्यो
 १०॥ गजदंतनकेवक्रमांचवने॥ वक्रचित्रवि
 चित्रअवासघने॥ तहांवेठिपितामहआ
 दिसवै॥ निरखैसिसुकौतिगआलोगसवै
 ११॥ गुनकीरचनाप्रगटीसबही॥ लषिअडु
 तवर्नतलोगतही॥ भटओरनअर्जुनकीस
 रिहै॥ गहिकैधनुकोसमताकरिहै॥ १२॥ इह
 बातसुनीइरजोधनही॥ प्रगट्योउरक्रोधमहा
 तबही॥ धनुलेतबअर्जुनपासगयो अबलो
 किसरोषनिशायगयो॥ १३॥ **करणउवाच॥**
 अबसमरमोसोंमंडि॥ सबदेहुबातनिछंडी
 सजिवांनिधनुउरडारि॥ अबपंडुपुत्रसम्हा
 रि॥ १४॥ **अर्जुनउ०॥** सजिलैहुतो कहुवांन

इहनां हि मेरो स्यां न ॥ निज ^{देही} जो इ भूपतिको
 ई ॥ पुनि समरता सों होई ॥ १५ ॥ तू सुत है निज
 सत को नहि अव भुवपति राई ॥ कैसी कहौ ब
 रावरी मो सों तो सों आई ॥ १६ ॥ सुनि दुख जो ध
 न क्रोध करि थप्यो कर्न भुवराई ॥ टीको नृपा
 ता को कह्यो ॥ सुभ घटिका सुषयाई ॥ १७ ॥ दं
 ड क ॥ अर्जुन के सुनि बैन सरोष तहां कुररा
 ज महारि सभानो ॥ देस दीयो सब को सदीयो
 बकु बाजि कै देसाजि कै बारन दीनो ॥ भूष
 न दें जग भूषन भूपति भूप कियो कवि शत्रु प्र
 बीनो ॥ राज दीयो सुख साज दीयो ॥ सब काजु
 कै कर्न मही पतिकीनो ॥ १८ ॥ दोहा ॥ जुरे कर्न
 मरना हत ब ॥ अर्जुन सौं ज बकु ध ॥ दोउ धनु
 र्धर धीर अति ॥ करत अमित गति जु ॥ १९ ॥

विजे०

३८॥

दिग्गेजननीपुत्रवि^वकरतृष्टिसरजालक
हीमहाअकुलायसुत॥ दोऊराषिगुपाल॥ २०
पंचवारधरमूरश्रेयो कर्नसुभटबलिवंड॥ वार
सातअर्जुनधुकेयो विक्रमक्रियोअघंड॥ २१
दोऊबरजेद्रोणगुरु॥ दोऊसिसुइकसार रा॥
षिअपारोसमदिअ॥ लोगसकलतिहिंवार
२२॥ दुरजोधनलेकर्नकोंगयोआपनेधांम
आजुपैजुराषीमहासुनिरविमुतगुनग्राम
२३॥ दोणउवाच॥ चौपई॥ धन्यधनिसुर
पतिसुतसुषदाई॥ सबतैंतुवपोरिषअधि
काई॥ इहकहिअपनेकंठलगायो॥ केहैतो
तैंमोमनभायो॥ २४॥ जाडरकर्नकस्योनरनाह
तोहिनीरषिअर्जुनउरदाहु॥ गुरदषिनासब
सिसुमिलदेहुहुपदतीतमेठौसंदेहु॥ २५॥ अ

अर्जुन नमः ॥ जो आपा मो देहो आप सो
ई करिहौ मै तुम परताप ॥ प्रथम हिंदुर जो धन सों
कहौ ॥ इह गुरु दधिना उन पै लहौ ॥ २६ ॥ जो वै
इ करि सकैं न आज ॥ तब सारौ गों हों सब काज
इह सब कहि दोरात हं जाई ॥ कौरव सजी चमु
सुष पाई ॥ २७ ॥ कियो दुपद सों सन सुष जु द तब
पंचाल कियो वहु क्रुध ॥ बांन नजु सौ समर भुव
आई ॥ अंबरत छिन लानों आई ॥ २८ ॥ **जो टक ॥**
दुपद सों जरे जंग ॥ सो दरसकल संग की नोर नरं
गम हासरन के गन मै ॥ बान निअकास आई दो
उ सम हाई जु द क्रुध वडौ सुधुं डुबीरनिके मन
में के ते सरजाल को प्रियोग की यो पांचाल को रव
विहाल कहें धीर नही लन मै ॥ सेना अकुलानि
देषि राष्यौ अत्र कुल पां नी पंडु प्रपाची तहा आ

विज्ञे०

३९

यगाजेरनमै ॥ २९ ॥ दोहा ॥
अर्जुनकरिसंग्रामचक्र ॥ जीतोसोनरनाथ ॥ आ
न्योंबाधिसुगुरनिकटचक्रतभयौसबसाथ ॥ ३०
॥ चौपई ॥ डाल्योगरकेचरननिसोई देषतअ
हुतगतिसबकोई ॥ बालमित्रताकीसुधिक
रा ॥ विप्रद्रोणकरुणाहियधरी ॥ ३१ ॥ अतिहित
भूपतिकंठलगायौ ॥ देभूषनकंपिलापठायौ ध
धनिअर्जुनगुरुद्रोणपुकारै ॥ तोबिनुमोकारि
जकोसारै ॥ ३२ ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ सुनि
अर्जुनसोदरगुनग्राम ॥ आजुकरीजयतैसंग्र
म ॥ भयौहमारौसबमनभायौ ॥ इरजोधनको
गर्वनवायौ ॥ ३३ ॥ दुपदरायविलष्योग्रहगयौ
महासोचउरअंतरभयौ ॥ द्रोणाहिहतिकोप
रिहसुसारै ॥ ऐसेकोरबिचारविचार ॥ ३४ ॥ पुत्र

सिंघंडी ताकें धाम ॥ तातें सरै नही मन कांम
जज्ञारंभवो लिखि जकी नों भूषति अतिकरना
रस भीनो ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ जग कुंड तेज बकठी
कन्या रूप निधान ॥ कैरति सची पुले मजा है
मैं नकास मांन ॥ ३६ ॥ नाम दोष दी तब भयो निर
षत इहिता मेन ॥ धृष्ट दिवन पुनि कुंड तै कयो
पुत्र अनु मेन ॥ ३७ ॥ राजा दुपद उवाच ॥ या क
न्या या पुत्र तै कै है सब मन कांम ॥ पूरन करि
के जग को हरष्यो भूषति धाम ॥ ३८ ॥ तब हि ज
ग सिराय के सब सम देरि पिजाल ॥ बरन बर
न सुवरन सहित सुरभी देनि हि काल ॥ ३९ ॥
इति श्री महाभारते द्वादश विजय मुक्ताव
ली कवि प्रचरित नायों अर्जुन विजय व
र्जन नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ दुर्गाधन उ० ॥

श्रीः

विज्ञे०

॥४०॥

त्रिमंगीछंदः॥ कहमतिकीजेक्योजमजी
जेबेसवछीजेउरधरिये॥ मंत्रविचारहिवैजों
हारहिंभीमहिमारैहिसोकरिये॥ कछुविंजन
कीजेवहुविषदीजेबोलसुलीजेभोजनकु
सुनिधावनचापुनरुतहिलपायेवहु॥ नायेरूपतिमनको
२॥ अतिआदरकीनोवहुसुषभीनो॥ आस
नदीनोंताहितवे॥ मनसुषभयेभारेअंधड
लारेआइजुहारेबंधसबे॥ निसदिनतुमभा
वत॥ हितकरिआवतसरसावहोअनंदघने
सबहीसुषपायोतेहवढायोमनभायोवहु
कोबरनै॥ **२॥ मीमसेनचवाच॥** सेवगजा
नतमोहितुमक्रपाकरतसबकोइ॥ तातेदि
नप्रतिकोंइहांआवनकोमनहोय॥ **३॥ चौ**
पडी॥ सहसहाथपनवारोआयोपवनपूत
जेवनवेढायो॥ दसबीसकजनपरसैंधाई॥

सोई लेत प्रिन कमें धाय ॥ ४ ॥ **दंडक ॥** द
 र ॥ को घर अति तमस को मूरमहा ॥ कूर
 डर जो धन रहत ता सौं ते धमें ॥ काल कूट फो
 रि फोरि जो रि जो रि के ते विष घोरि घोरि डरे।
 बडु भोजन असे धमें ॥ विंजन अपार घृत सा
 र की यौ भार आनि की नों हलाहल आर्थे प्रा
 धस विसे धमें ॥ ल्पावत ही हारि जात स्वारजे
 तो डारि जात भीम से न गारि जात पातरी निषे
 कमें ॥ ५ ॥ **दंडक ॥** जय पि आंन तु चित कष्ट
 न हित दपि भाउ महा छल को ॥ जान नि मान तु
 भोजन घातु न ही डरता हि हलाहल को ॥ दि
 शि इतै उति को न करै कडु पांन सु तो जल को
 भोजन विंजन ब्रंद घनै सु किते नि जये न ल।
 गोपम को ॥ ६ ॥ **दोहा ॥** भोजन को बीराल यो

ल

घ

चाहत

विज्ञे०

॥४१॥

चल्यो आगये ग्रेह ॥ धाय गयो तिहि काल
विष ॥ अंग अंग सब देह ॥ ७ ॥ चौपई ॥ पुत्र
न पुत्र जब बाहिर आयो ॥ जान्यो भीम महा
विष घायो ॥ आई लहरि गि सौ विकरार त
बइह सो चतवारं बार ॥ ८ ॥ तीनों मोल घुसो
दर आई ॥ तिन की शनसों कहा बसाय ॥ श्रप
ति तन में नैंकन क्रोध ॥ कोख सों को करै।
बिरोध ॥ ९ ॥ यो सुमिरत जब घाटे प्रांन ॥ प्रफु
लित कोख भये निदांन ॥ बोले बैदनाडिका
देखै ॥ मुयो हलाहल के चित लेषै ॥ १० ॥ वैद्य
उवाच ॥ हे अजहूया के उर स्वासा ॥ ताते है जी
वन की आसा ॥ आयु मुदी जे करै उपाय ॥ यों सु
नि क्रोध कस्यो वझाई ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तबै वैद्य
न जान्यो कपठ ॥ ग्रेह गये अकुलाश ॥ जाहु क

एलेभीमकों॥ आयोगंगवहाय॥ १२॥ आयु
सुलहिरविपुत्रसौदीनोंगंगवहाय॥ देववि
माननिआरुहे रहेवोममैश्राय॥ १३॥ **सुर॥**
वाच॥ जीवहिगोसुतवायकोश्रीहरिसदास
हाय॥ सुरसरीजलमैसौभयोपस्योपतालहजा
इ॥ १३॥ **दोहा॥** वासकडुहिताइंडुमुष॥ अहि।
लमतीइहनांम॥ देखिभीममूरतिमदनप्रफुलि
तभईसुबांम॥ १५॥ सिसुतातैपूजीगवरीमनब
चकरमचितत्पाइ॥ इकदिनसोविधिनांकरीर
हीमहाअलसाई॥ १६॥ वासीपातासौगवरीपू
जीतिहिछिनआय॥ नवदेवीमनकोधकरी
दीनोनाकोंआय॥ १७॥ मृतकमिलेतोकौंपरष
जाहुसुरसरीतीर॥ आयलह्योसोप्रांनपति
देख्योमृतकसरीर॥ १८॥ लैराष्योमुषसदनमै

विज्ञे०

॥ ४२ ॥

सधिसौं कही बुलाइ ॥ अतसो इकी जे जतन
 थाकहु लेहु जीवाय ॥ १९ ॥ चौपई ॥ ततधि
 नहीतिन बुधि उपाई ॥ जीरन पटकी गेदवना
 ई ॥ सुधाकुंडमे तछिन डारि ॥ धारण न गत दक
 भारी ॥ २० ॥ रहै सुधाकुंड निपै छारि ॥ नहिरं च।
 क कोई लै जाइ ॥ अहिल मती विनयो अकुला
 य ॥ गेंद मोहै किन आफो आइ ॥ २१ ॥ आन राय
 वास ककी करौ ॥ गेद न चोरि ताहि लै दई लै सो
 पवन पत्र दीगई ॥ २२ ॥ रंच कतामहि अमृत
 पायो भामसेन के मुख में डख्यौ ॥ जाय उघो
 जन सो वत जाग्यौ ॥ निरधि त्रियायौ युगना
 लाग्यौ ॥ २३ ॥ भीम दोधक ॥ को नियन जिहि
 चितु झग्यौ ॥ सो वत लै कित आयज गायौ
 बाल लिये संग कोहै बाला ॥ चंद्रमुखी गुन रूप

लाये

रसाला २४ को कहितु अब मोटि ग आई
 कोइ हृदय कहौ सत्य भाई ॥ **त्रिया उवाच ॥** आ
 हिय ताल सुनौ सुष साजा ॥ वासक मो पीतु या
 थल राजा ॥ २५ ॥ **दोहा ॥** ताकि इहि ता आहि हों
 अहिल मती मोनां म ॥ गवरी कृपा पाये पुरुष
 मो ग्रह करि विश्राम ॥ २६ ॥ अब अपनी सब बि
 धि कहौ कैहौ आपनि दान ॥ भूपति मनि भूपाल
 से सब गुन ग्यान निधान ॥ २७ ॥ **दोहा ॥** सोमवं
 सहस्र सुषद त्रियश्च त्रि ॥ जाति सुजांन ॥ भूपा
 ति जंघ दीप के महि मंडल में आन ॥ २८ ॥ तु वसं
 ग दीप तमाल वडू कहौ कौन इह भाव ॥ जित
 तित ते इ देखिये सो सब बरन बताय ॥ २९ ॥ **अ
 हल मती वाच ॥** ये पीशूष के कुंड नोजग की जीव
 न मूरि ॥ रष वारे वडू सर्प तहां रहे चहौ दिसि पूरि
 ॐ भीम वाक्य ॥ चौपई ॥ मैं अब कुंड सकल

विज्ञे०

॥४३॥

लविवागे॥ सोषोसदैव सोमनभाये॥ अहल
मतितववसेताहिइहकघुवातननीकीअ
ही॥३१॥ जाहेव्यालकितेलिपटोये रंचक
सुधासकैनहिषाय॥ करिविवाहजोमोसु
लेहुजानिहितुमानेसबनेह॥३२ दंडक॥
भारेभारेव्यालमहाकारेकारेविकरारकाल
ऊकेकालजहांतहांघाईजायगे॥ आननकी
ओरजेअवतविषव्यालजोरघोरघोरचऊओ
रकिहांधोसमाइगे॥ सप्तमुखीएकअष्टमुखी
तेअनेकएकएकमुखीआसीविषआइलप
टाइये॥ जोरौंदोऊहाथकहौमानोआननाथ
पारिदिषिअैसेसाथकैसैंधीरजधरायगे॥३३
अहलमती॥ फूरैनमंत्रमूरिएकएकमाल
जोडसै॥ करोकहाविचारआप आयआयजो
ग्रसै॥ कघूसूनैननारिवातभीमसेतयो कहै

सरोषमां हि देखि कै कही ॥ कुंआ इहां रहें ॥ ३३ ॥
भुजंग प्रयास ॥ लपौं कुंउ नैनानि सोषो अवे
हों सबे नाग के जूथ कों त्रास देहुं ॥ चल्यो धाय
कें नारियौ चित्त सोचै ॥ करैं दुष्प सो नीर नैनानि
मोचै ॥ ३४ ॥ कहा कर्म की नौ मुवौ मै जीवायो
दुहु भांति सों काल के घान आयौ ॥ करैं जो क
हा सो ॥ पराजय पिता की ॥ विना सें किधौं जुध मे
देह या की ॥ ३५ ॥ दुहु भांति असे महा दुष्प के है
अमै दान मो को कपा सिंधु दे है ॥ महा क्रोध के
घोंन को शूत धायो ॥ हते नाग सो कुंउ मै पैठि आ
यो ॥ ३६ ॥ महा क्रुध की नौ सबै व्याल धायो ॥ चहु
ओर घेरै सबै कुंउ शायो ॥ उठ्यो को पिकै भीम
धायो तहां तैं ॥ भगे नाग सो नैन देख्यो तहां तैं
३७ ॥ **दंडक ॥** एक मारे तोरि कै मरो रि मारे ये

विजे०

॥ ४४ ॥

कनामै गए कमारे मी डिकै कहं लोंक हों तर
नी ॥ एक धाड़ धाड़ कैंधु काइ दये धावत ही धर
धर धर कत एक परे धरनी ॥ एक न के फारे फ
न फर फर फर कत थर थर कं पि भगे एक लै।
लै धरनी ॥ भागि भागि एक गये धासिक नरे
स-प्रागै जाइ कै कह कह बात बसै बरनी ३९
॥ नाग ऊँच ॥ चौ पई ॥ प्रायै असुर एक
अति भारी ॥ कौं कुं न मां न त आं न तिहारी
कुंड एक करि लीनों पां न ॥ मासो सब नाग नि
को मां न ॥ ४० ॥ सोषत सकल कुंड बै कहै ॥ पठ
वो काऊ सो सुधिल है ॥ बासक कहै असुर न
ही होइ ॥ नृपति जुधि छिर वंधव सोई ॥ ४१ ॥ भी
म से न हैं ता को नां म ॥ इह थल जीतौ तिभ सं
ग्राम ॥ वा विन इतो वली को और ॥ सोम वंस

सुभदनसिरमोर॥४॥ दोहा॥ जुधिष्टिर
नरनाहकीदेऊइहाईधाइ॥ भीमसेनकुंड
निनिकटसकैननियरोआइ॥४३॥ दोहा
क॥ पायगताईसुधावनधायो॥ तुरतहि
पवनपुत्रटिगआयो॥ आनजुधिष्टिरन
पकीदीनी॥ कांनिभीमकुंडनिकीकीनी
४४॥ भीमसेनउ॥ जौनइहाईदेतेआइकुं
उसकलहैंलेतोयाइ॥ कौनतुमहैवतायो
भेद॥ इहमनमैउपज्यौंवकुषेद॥४५॥ सुधि
पाएवासिकउठिधायो॥ आयभीमतवकं
ठलगाये॥ वरुसुषसंजुतलैग्रहगयो॥ अष्ट
कुलीमनआनदभयो॥४६॥ दोहा॥ सुभद्य
टिकासुभलगनगनिसुभवासरहिविचारि
अहलमतीभीमहिदई॥ करिविवाहसुषका
रि॥४७॥ पाईदायतोपायकैविधवरनीवर

वि०
॥४५॥

नारि ॥ हियहुलासकीनोमहा वदनमयं
कनिहारि ॥४२॥ वक्रप्रतापपूरनकलाभी
मसेनज्यौंभांत ॥ फूलतिलषिअंजुजमुषी
सबगुनरूपनिधान ॥४३॥ दोहा ॥ धर्मपु
त्रमुवराइसहदेवसौंयौकही ॥ इहसंदेह
मोआयभीमहिभयोवलंबवहु ॥४४॥ स
हदेवउ० ॥ गयोबीरपातलभूपरिनहीसु
भूमिपति ॥ कौरवकर्मकरालंकरिभोजन
मेविषदीप्यो ॥४५॥ दोहा ॥ दीनौगंगबहा
इ सोपस्योपातालहजाइ ॥ बासुकतनया
तिहिबरीरहततहांसुषयाइ ॥४६॥ मठयोधां
वनभूपतवपहौच्यौंभवनपताल ॥ बोले
होतिनसौंकहीजूधिषिरभूपाल ॥४७॥ प
वनपुत्रमांगीबीदावासुधकपेसुषयाइ

नायसीसतीनकोचलेों-अहलमतीसमजा
य॥५४॥**चौपड़ी**॥सबनागनिमारगदरसायो
निकसिभीमभुवर्ऊपर-आयोधर्मपुत्रकै-प्रा
नदभयो॥कुंतीकोसवडुषमितागयो॥५५॥स
कल-अनुजमिलि-आनदछयोमहाडुष्यकुर
नंदनभयो॥दियोडुषसुरसरीबहाइ॥कहों
कहांतेप्रगत्यौ-प्राय॥५६॥सकलजगत-अ
पज्ञसकैगयो॥अबइहसालहमरोभयो।
अबकधू-असोकरोविचारि॥भीमसेनको
सकियेमारि॥५७॥**राजायुधिष्ठिरउवाच॥**
अंधसुतनिकोमांनहतिकियौसुजससंसा
र॥**गांधारीकोगर्व-अबगयोबीरइहिवार**
५८॥इति श्रीमहाभारतेपुराणेविजयमुक्ता
वलीकविष्णुविरचितायांअष्टमोऽध्यायः॥
होहा॥अश्वनिहस्ताअश्वमीनरनारिन

४६॥
कीभार॥ पूजनगजनारिनसजेभूषनबस
नसरीर॥१॥ महामलीनकोंतांभईअर्जुन
निरखीनैन॥ कहीविसरतिमाइकतसोक
हिमोसोंबैन॥२॥ कोंताउवाच॥ मेरेपांचपु
त्रतुमबेसतबंधुविचारि॥ सौरगोंदालेआ
वहीसकलमृत्युकाटारि॥३॥ करिगजपूजें
आजुसोगांधारीसुषपाय॥ तिनसोंहमसों
कोंनविधिकरिबाबरिजाय॥४॥ अर्जुनउ॥
पांचपुत्रतेरेवलीकोमलीनविचचित्तये
रावतआनौंडरदतैरैपूजनहित॥५॥ सबैया
काहेकोंमाइविसरतियाविधिवांनअसे
प्रतिअंबरधरईऊ॥ बाटकरौसरजालप
ठैनभभूमिअकासहिभेटकगर्ज॥ मानह
नोडरजोधनकोबल॥ कौरवकोसबगर्वन
वाऊ॥ आनौंभजावरसोंआरावतअर्जुन

तोनुवपुत्रकहाऊं॥ दोहा॥ करिप्रणा
मगुरुदोणकौलीनोधनुषचढाय॥ हित
अंगवतसुरपुरी॥ दीनौबांनपठाय॥ ७॥ अ॥
जुनइषदेवनिलष्यो॥ कह्योइंद्रमुनिलेऊ
तुवसुतमांगतनुवइरद॥ करौक्रयासोदेऊ
८॥ जोनदेऊअंगवतेंतौवहबलकरिलेहि
अमरपुरीभटभंजिकें॥ इषदेवनिकोंदेहि
ए॥ देंनकह्योवारनसुनीदेवनकीमनुहा
रि॥ क्योधरजैहैस्वर्गतें॥ सोसवकह्योबि
चारि॥ १०॥ चामर॥ सवदेवनिमिलिबां
नपठायौ॥ भूतलअर्जुनकीढीगआश्यो
अंगवतकौंमार्गकीजै॥ इहिविधिवारन
आपनलीजै॥ ११॥ बांनअनेकअंबरधरां
ऊं॥ वारनकौंनभवाटवनाऊ॥ इंद्रसभामा
हिबांनपठायो॥ देवनिइंद्रहिजायजनयो॥ १२॥

विज्ञे०
॥४७॥

॥ दोहा ॥ आगपासुरपतितवदर्दसाषिदि
येसुरपाल ॥ पूजाकरिपठवैइहांवारनतेहं
काल ॥ १३ ॥ आयोपत्रीभूमिसोअर्जुनल।
षिएभाय ॥ निकसिनगरतेंसुभटतबली
नोंधनुषचढाय ॥ १४ ॥ करिप्रनांमगुरुद्रो
एकों ॥ कृष्णहिसीसनवाय ॥ सरपंचजर
पूखौतबैलयोव्योमसबध्वाई ॥ १५ ॥ दि३क ॥
व्योमकोंपठायेबांनप्रथमसहसएकहस
रैसहसदसस्वर्गकोंपठायेहैं ॥ तीसरैअ
युतपांच ॥ चौथैलखिएकसर ॥ एककोरि
पांचयेंआकासमाहघाएहैं ॥ षष्ठमकि
रोरदसअर्वएकसातवैजूकहालोवषानों
सरजालजेतेधाएहै ॥ पूखौसरलोकतेंधरा
लोंसरपंजरविलोकिअंधपुत्रसबैबंधुसस
वायेहै ॥ १५ ॥ चौपई ॥ देषतकोतिकस

वज्रगजाल ॥ कैरवकुललसिभयोविहाल।
कौतिकविडुरपितामहभूले ॥ नृपतिजुधिधि
रतनमनफूले ॥ १६ ॥ अर्जुनमहापराक्रमकी
नों मित्रनिसुषडुष्टनिडुषदीनों ॥ सकलव्यो।
मसरपिंजरछायों ॥ उनैमहामेघजनुआयो ॥ १७
॥ दोहा ॥ जोजनघादसलछिलों सरपंजरनभ
छाई ॥ देषतहीसवसुरनमिलिकहीसक्र।
सौजाइ ॥ १८ ॥ आगपालहिसुरराजकीचल्यो
मत्तमातंग ॥ गर्वधस्योसरजालकौकरोंको
पिकैभंग ॥ २० ॥ भुजंगमप्रयात्र ॥ धस्योव्योम
तैंगर्वकेसक्रहाथी ॥ किधोंमेघकेआघके
सैलसाथी ॥ कहैवांनकैंपिंजरैछरिडारों धरा
मैंधस्यो जायकैंरोपिपारों ॥ २० ॥ जहांजोरिकैं
कैकरीवानमोरै ॥ तहांइस्कौपूतलैबीसजोरै
चल्योमत्तमातंगजोभूमिआयो ॥ लख्योमात

विजे०

॥४८॥

कुंती महासुख पायो ॥ २१ ॥ भीमसेन उ० ॥
न असौ सुनों मैं नैनान देख्यो सुतो मैं
अंच भो महाचित लेख्यो ॥ महावीर आ।
कास कौ पश्य कीनों ॥ भयो पश्यताना
मश्री राम दीनों ॥ २२ ॥ अर्जुन उवाच ॥ का
रोनु अबै माई पूजा कवर की ॥ न कीजे क
ष्ट वैर को घरी की ॥ तबै मांत आनंद जी
माह मांनों ॥ कहौ को सुतो धन्य के द्यौं सा।
मांनों ॥ २३ ॥ गये सर्व संसे सुसंदेह जी के मु
जादंड प्रजे तबै पश्य ही के ॥ महाधन्य।
हों पश्य सो पुत्र जायो ॥ दीये वारने और
कीने बधायो ॥ २४ ॥ दोहा ॥ आमंद जु
त पूजा करी सब बिधि वात वनाइ ॥ गांधा
रिल पिल पितवें मन ही मन पछीताई ॥
२५ ॥ करि पूजा मातंग की फिरि पढ्यो मुर

लोक॥ इरजोधनकों आदिदेभयोसवनि
केसोक॥ २६॥ **नुधिहिरउवाच॥** धनिअ
र्जनतैराषियो लोकलोकमेनामअवन
करैरेगर्ववै रहैससोकेधाम॥ २७॥ इर्योधन
कोआदिदेभयेगर्वकेहीन॥ नैकसुहाय
नधामधनशीनछिनकेगयेछीन॥ २८॥ **गो
धारीउवाच॥** कहाभयोसुतसोजनेंसरैंनति
नतेकांम॥ जायेअर्जनभीमउनिधनिधनि
कुंतीबांम॥ २९॥ देखिपराक्रमडुनिके।
लप्योनहीकुसरात लेहैतुमतैराजराइह
सूततहैवात॥ ३०॥ लाजभईइरजोधनैंड
सासनकैचित्त॥ थाकेअमितउपावकरि
कोंतापुत्रनिहित॥ ३१॥ **दंडक॥** राजसुहा।
यनसाजसुहाइनकाजसुहायनहीमनमां
ही॥ आंमसुहाईनधामसुहायनबामसुहा

विजे०
॥४ए॥

यही ये सुधि नाही ॥ देस सुहाइन को स
सुहाय सु कौरव कै उर रोस ब्रथा ही ॥ पांन
सुहाइन पांन सुहाय सुहाय नही पंडु के
पुत्र की छाही ॥ ३२ ॥ **दुर्योधन उवाच ॥** अ
र्जुन भीम भये बली की जै कौन उपाइ ॥ स
ब मिलि सो मन में धरौ ॥ साल हमारौ जाय
३३ ॥ **इति श्री महाभारते पुराणे विजय मुक्ता**
वली कविष्णु विरचिता यां श्री रावत आग
मोना मनव मोध्यायः ॥ ९ ॥ दोहा ॥ गांधारी
भ्राता सकुनि बोलि लियो अकुलाय ॥ भी
षम अरु बोले बिदुर मंत्र काज सुष पाई ॥ १ ॥
दुर्योधन उवाच ॥ जै सै छा जै पंडु सुत सोम
त कहो बिचारि ॥ बीचि ही बोले सकुनि त
ब देऊ ये हमें जारि ॥ २ ॥ वरुन नगर लै कोट
करिता मे दी जै वास ॥ चहुँदिस अग निपुजा

रि कैं होय सब नि को नां स ॥ ४ ॥ चौ पई
भीषम मंत्र कह न नही पाये ॥ सकुनि
कह्यो सो नृप मन भाये ॥ सम द्यो सोई
कोट कर वझ ॥ बे गिही चलो बार मति
लावझ ॥ ५ ॥ दंडक ॥ तेल भरे घट आ
निधरे घट के भरि कैं घट के ते सवारे ॥ त
ल दे मूल में गर अपार सुलाष मिलों कि
ये गंधे कगारे ॥ अंतर सूत निरंतर काठ
वनाइ कैं पावक धाम सुधारे ॥ चित्रित
चित्र सवारि दिवाल नि देखिये सत्र सबै
उजियारे ॥ ५ ॥ दोहा ॥ वरष दिव सबी ते
सकुनि कह्यो नृपति सो आई ॥ सय ज्यो
मंदिर पंड सुत दी जैत हां पठाय ॥ ६ ॥ गी
तिका ॥ बोलि लीनो विदुर भीषम ले सभा
बेठारियो ॥ नृप जु धिष्टिर आदि दै सब पं

विजे०
॥ पू० ॥

दूधुत्र कारियो॥ बातभीषमयेकहार्द।
मोनिआइसुलीजिये॥ तुमहेतमंदिरबर
नराचोवासतामहिकीजिये॥ ७॥ धर्मसु
तकैहर्षउपज्योतुरतसवरथपरचेठरा
जआग्यामानिकैनुतमांतुपुरबाहिरक
टे॥ विडुरसाथचलेपठावनसकलसंध्या
तेकहैं॥ वैठिकेपरसन्ममेनिश्चितभूप
तिनारहैं॥ ८॥ चौपई॥ अतिसचेतर।
हियोग्रहमांही॥ आपुउठायोतुमवह
नांही॥ जायवासनाग्रहकीलीजोआ
पसुगातौतवकधूकीजो॥ ९॥ पैठनपेट
जुकोऊआवेसोनहीभेदकधूलषिपा
वै॥ बुधिदैविडुरगयेफिरग्राम॥ पडुचेनृ
पपुरआयेधाम॥ १०॥ ग्रहप्रवेसकीयो
भुवपाल॥ सन्मुखधनीकभईतिहिंकाल

सहदेव कहै सुनौ माहाराज ॥ रहत इहां ॥
नही नीकौ काज ॥ ११ ॥ **नकुल उवाच ॥** कौं
नहस्त नापुर पग धारो ॥ जामै कहा विचा
र विचारो ॥ कहै भूप उहि पुर नहि जै है ॥ १२ ॥
षमुष वीर इहां हमरे है ॥ १२ ॥ जो उष विडु
र पितामह पायो ॥ सत भ्राता न उर आनं
द द्यायो ॥ विडुर कह्यो सब ते सो देख्यो पा
वक पुंज धाम सो लेख्यो ॥ १३ ॥ सावधान नि
सिवा सर है ॥ मर मन काहु सो न कै है ॥
जो धन प्रतिहार बुलायो ॥ भेद सकल दे
त हां पढायो ॥ १४ ॥ **राजो वाच ॥** हम सौं अ
नर स करितु मजाहु ॥ जहां जु धिखि रहै नर
नाहु ॥ भूले अगनि सवारो धाम करि हों
हों तु वस बमन काम ॥ १५ ॥ **सुंदरी ॥** आयु
सुपाई गयो वह ता थल जाय प्रनाम करे

विजे०

॥५१॥

पहली पल ॥ जाय कहै डुर जो धन के दुषये
टविसा सक है इति की मुष ॥ १६ ॥ दोहा ॥ व
चन समारे विडुर के ॥ कपटी उर पहि चान
सब बिधिस कल सचेत के कस्यो पवरि थ
ल आनि ॥ १७ ॥ मालती क ॥ भीम सेन धा
यो ॥ मुरंग घिनायो ॥ वन कह की नों पंथ
नबी नो ॥ १८ ॥ जब इह जोरै कौन निकारे
तब मग की नों मुरंग नबी नो ॥ १९ ॥ चौथ
ई ॥ हमहि मुये जो कोख जानै ॥ ये सौ स
व मिलि के मत मानै ॥ भिक्षु क पंच दिवस
इक आये तन निवृद्ध संगति ल्याये ॥ २० ॥ दे
धि भीम इह कह विचारि ॥ वन में जाहि इ
है इहां जरि ॥ वक्र विधि भोजन तिनहि क
राये ॥ उति मठां मतहां पौठाये ॥ २१ ॥ दोहा ॥
जब ही बीती अर्ध निसि सोवत सव ही जां

नि॥ कही भीम नरनाह सौं चल्यो खियन सु
षदां नि॥ २२॥ सुरंग बाट सब मिलि कढे लेज
न नीति हि काल॥ ले पाव कत बपौ रिपर भी
म गयो उत्ताल॥ २३॥ ऊक दर्श प्रतिहार सिर
दीनो पोरि जराइ॥ महल महल परि जारि कै
गयो भूपै धाइ॥ २४॥ चौपई॥ बाट लइ व
न की उठि धार॥ मंदिर दुर्गम कोट जगण॥ मूं
दिल यो भग को उन जानौ॥ जात चले थकि कै
थ हरानै॥ २५॥ भीम मही पति कंध चढायो॥ प
थ्यत वै उर सौं लपटायो॥ बंधव दोय लये।
अक वारी॥ सीस धरी जननी सुषकारी॥ २६॥
लेद सके। सगयो वन मांही॥ भोजन मै मन क
धूनाही॥ धांम जस्यो सुनिकै कुराय॥ बैठि।
सभाव कृतै पछिताइ॥ २७॥ सुष्य वढ्यो अति
हीमन मांही॥ देखत लोगन को पछिताई

विज्ञे०

॥५२॥

मालनिघोउरकोइहजांन्यों॥ सुवभएतब
देकरगान्यों॥ २७॥ दोहा॥ नयौजन्मजान्यो
तबैसतबंधवउरफूल॥ वडीकयाकरताक
रीनसेहमारेसूल॥ २८॥ उतपांडववनमह
गयेउतरेबठकीछांह॥ सबसोयेपहरोजगे
भीमसेनवनमाह॥ ३०॥ नरदेहीकीबास।
लहि॥ आईत्रियगनगाजि॥ नांमहिरंबीरा
कसीघोरमहाबुसाजि॥ ३१॥ तनदीरघदी
रघउदरदीरघदंतकराल॥ दीरघमुखदीरघ
श्रवनदीरघवाहुसुवाल॥ ३२॥ आईगजि
तनारिवहभीमसेनमंणीसंक॥ तरवरलैसो
कैगयोकरीनभयकछुअंक॥ ३३॥ देषतसा
हसभीमकौभईपरमबुवाल॥ राकाससि
षोडसकलारूपलख्योतिहिकाल॥ ३४॥ त्रिय
उवाच॥ मोमनरोचनआपनठानों॥ आपु

त्रिया करिके उर जानों ॥ मै तुम देखि बलीवर
की नैं ॥ नित चलें तुम आइ सुलीनै ॥ ३५ ॥ आय
हिरं बतहां तब गाओ भीम इतै दुमलैं करि सा
ज्यो ॥ को कहि नारिकहाइ हआयो भेद कछु न
ही मैं अब पायो ॥ ३६ ॥ **हिरंवी ॥ दोहा ॥** मै रो
बीर हीरं बइह का जे जूझनी संक ॥ कछु विस
मोजिय जिन करील ज्याधरोन अंक ॥ ३७ ॥ मो गा
जत धीर जर ह्यो ते रौ वृद्धि निधान ॥ इहन कछु
ते रौ करैं हति बरयाहि निधान ॥ ३८ ॥ **भीमसेन**
उवाच ॥ तेरो कहा भरो सो मोही ॥ बीरहत तरि
सलागे तोहि ॥ तब या की त्रहोय सहाय तब
कहि मेरी कहा बसाय ॥ ३९ ॥ **हिरंवी ॥ दोहा ॥**
जानत तो कौं प्राण पति न हिराषत चित और तो
समयामें बल नहीहत हिरं बइह दोरा ॥ ४० ॥ भा
यो अश्वर अरु भीम सौं अति गटि मुखि प्रहार
मधु मुद्ग करि धर परैं कै दो उविकरार ॥ ४१ ॥

विज्ञे०

॥५३॥

निकटनिपायेभीमतबजागेवंधवचारि॥नि
श्चरसौमंडतसमरअबलोकौसुषकारि॥४२॥
॥दोषक॥अबलोकतभीमहीलाजभईतव
दानवकैंभुजकंठदई॥वरकैंवहदानवबीर
हयौसवबंधुनकौंवहुसुष्यदयो॥४३॥गति
का॥धर्मसुतकोमांनिआइसुसीषकौंतापैल
ई॥तवहिरंबीभीममाहीविधिकरीजेसीच
ही॥रहतवितेदिनकितेताविपनमैसुषसाज
हीकंदसुलहिषातषीनषिनिजीवकायौसा
जही॥४४॥दोहा॥रहतकितेदिनजबभये
ताकाननकैंधांस॥पुत्रहिरंबीकैंभयौधसो
करुखानांम॥४५॥वितिकितेदिनतवगये॥
तज्यौविपनइहठांव॥आडिघरुकाताथली
पहुंचेइकचकगाव॥४६॥रूपकपिरियाके
सजेरहैएकछिजधांस॥उद्दिमकरिभोजन।
करैसवबंधवगुनयाम॥४७॥इतिश्रीमहा॥

भारतपुराणविजयमुक्तावलीकविश्चत्रधिरचि
तायांघरूकाजन्मवर्णनं नामदसमोऽध्यायः ॥ १६
त्रिभंगी ॥ इकचकनगरीसबबिधिअगरीकी
रतवगारीसकलदिसा ॥ पुरनरसबराजतडुष
निभाजतसाजतसोकनिद्योसनिसा ॥ कंयता
थरथरघादानवघरघरा ॥ सोचसकोचमहा
दिनप्रतिनरमारैकितेसंधारैबरनौनिसच
रकर्मकहा ॥ १ ॥ दोहा ॥ नासजांनिपुरनरसबे
तबइहकियोबिचार ॥ दिनप्रतिदाजेयेकन
रचैनलहैसंसार ॥ २ ॥ निसचरसोंकीनौबि
नयसबहीमिलितहजाइ ॥ प्रतिदिनकैतु
वभक्षहितनरएकपङ्गचैआइ ॥ ३ ॥ मानिवि
नैप्रतिद्योससोभक्षकएकनरलेहि ॥ जाको
जबहीओसरो ॥ सोभक्षककोदेहि ॥ ४ ॥ द्विज
तरुनीकैधामजहबसतजुधिष्टिराई ॥ ता
केसुतकोओसरो ॥ पङ्गचैएकदिनआई ॥ ५ ॥

अकृताई

विजे०

॥ ५४ ॥

॥ ५४ ॥ **सोखा** ॥ विजतरुनीपेछिताई ॥ बारवार
धरमुखै ॥ फिरफिरइहपछिताई कौनका
लिइहपुरतज्यौ ॥ ६ ॥ **दोहा** ॥ मोहमहादेवत
भयौकुंतीकौउरआहि ॥ ततछिनताकौड
षकह्योभीमहिपासबुलाहि ॥ ७ ॥ **भीमसेन**
उवाच ॥ याकेसुतकेपलटैजैहो ॥ फिरिमिलि
हैंजोजीवतरैहों ॥ भोजनदानवहितजोभयो
भरिकैमहिषभीमसंगलयौ ॥ ८ ॥ **दांनउठाउ**
तहांचलिआयौबेठिभीमतहांभोजनषायो
धायोअसुरक्रोधकरिभारी ॥ वज्रपातसमदे
हथमारी ॥ ९ ॥ **दोहा** ॥ मुष्टिप्रहारकीयोअसु
रप्रापसक्तिअनुसार ॥ भीमनआन्यौचित
मैंभोजनभषेअपार ॥ १० ॥ **चौपई** ॥ मारतही
सबभोजनषायोसंकनहीअपनेउरल्यायो ।
बीरउझमिलीकैरनकीनौ ॥ कोऊनहीतीन
मेंअतिहीनौ ॥ ११ ॥ जुधभयोअतिहीगतिअ

सो॥ राघवरावनकोरनजैसों॥ ग्रीवदियौप
गडुष्टसंघास्यो॥ अचतहीपुरबाहिरडास्यो
१२॥ दोहा॥ ढाढौकीनोंपवरिपरमतक
असुरसोलाई॥ प्रातहोतपुरनरसकलनि
रषिभगेअकुलाई॥ १३॥ सबहीकौसंकाभ
इसकैननियरेजाई॥ हैदानवनिरजीवइ
ह॥ कहीभीमइहआई॥ १४॥ भीरमसेनठि
गआइकैसंभ्रमदियोभगाई॥ इहगतिजां
निव्यासमुनितबहीपहुंचेआई॥ १५॥
सोवाच॥ पवनपुत्रमास्योअसुरसबज
गभयोचवाउ॥ अबसिषमांनहुंचेबेगिही
नगरकंपीलाजाउ॥ १६॥ मांनिसिषरिषिव्या
सकीतीहपुरपोहोच्योजाई॥ होतसगुनस
हदेवसोंकहीनृपतिसुषपाई॥ १७॥ चौप
इ॥ कैसेसगुनभयेअबभाई॥ सोसबमो
मुकहिसमजाई॥ सुनोगुसाइसुगनप्रभार्क

विज्ञे०

॥५६॥

सबहीके मुखको गये कारे ॥ धृष्टिदिवनत बसा
कुनिहि देखि ॥ करत धरक नाकवर विसेषि ॥ २८ ॥
॥ धृष्ट धमन उवाच ॥ सरन ही सरन मै क्रूर महा
क्रूरनि मै डुंइ किधौ सरनि मै सरबुरवाइ को
मूढ महा मूढन मै गुनी नयंत्र मूढन मै सुगर्व
ही प्राकूट कहा संग्रह वगई को ॥ असौ श्र
बवे की है कुटे वटे वटे की जिहिं तासौ एक मे
को जो न घोज है भलाई को ॥ नाहि बली बली
न मै छली महा छली न मै देखिये न मुख ऐसे
कुटिल कसाई को ॥ २९ ॥ बारीला दाग्रे हमै
पंडु पुत्र इहि जाई ॥ हो तो जीवत पृथ्वी ले
तो धनुष चढाय ॥ ३० ॥ अंत्र बारद सबेध तो
महाबीर खलिवंड ॥ सुनि सुनि वाटौ कर्न
तब बाढी को पप्रघंड ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जो मा
रौं प्रबुद्ध पद सुत कौन छुडा वहितोहि मे।
रोमर मन लल है कां निभूष की मोहि ॥ ३२ ॥

सोरठा॥ चलो कर्णधनुषासवरजिह्व
तब यों कही॥ घाड़ि दे कुइ ह आस बेध्यों
जाइन जंत्रइह॥ ३३॥ जो बेधे इक वांन सो तो
जग मै जस हो तो ¹⁴¹हारें होत कलंक व फुरला
जि है गोत॥ ३॥ रूप कपिया के किये अर्जुन
बचन प्रकास॥ नही सभास मर प्य को उ
बधे जंत्र आकास॥ ३४॥ राजा दुपद॥ कै भू
पति कै तपसी होई॥ राह बिध करे जो कोई
ता उर कन्या ते ही काल॥ डारै अमल कमल
की माल॥ ३५॥ तब चलि अर्जुन आगे गयो।
धनुष उठा य हाथ सों लयो॥ अति कठोर धनु
जान्यों जहां भीम से न मुष चाह्यो तहां॥ ३६॥ दो
हा॥ भीम से न वलि वंडा गति अर्जुन की पहि
चांन॥ कोमल करि धनुष पथ्य कर॥ दियो बा
र दस तांनि॥ ३७॥ लै धनु गयो क राह तट इक
टक ताहि निहारि॥ माई पाई मीन की रह्यो

विज्ञे०
॥५७॥

ध्यान उरधारि ॥ ३९ ॥ दीदिमूंठी मन एक करि
वेधो सो सर एक ॥ फोरि गयो शष एक दग को ति
क करत अनेक ॥ ४० ॥ दोधक ॥ चकि गयो
नर एक बंधाने ॥ वेध गयो सर एक ते जाने ॥ वा
ल लिये कर मालहि आर्द्र ॥ अर्जुन के तवा ही
उर नाई ॥ ४१ ॥ देषत करन सहारी सभी नों दा
रुन कर्म महा इन की नों ॥ लेत पसी अब या कु
जै है ॥ लाज सबे भूवपाल न अहे ॥ ४२ ॥ दोहा ॥
कर्ण चढाये को पिधनु देषत सब भूपाल ॥ नि
रषि सोच उर मै भयों विकल भई उर बाल ॥ ४३ ॥
अर्जुन ॥ सवेया ॥ चंद्रमुखी कित सोच करे
जाय गर्व हरौ कुरु नंदन कौं ॥ आजु करौ धिन
मैरन मै जय जु द्यु जुरै जम आय कै जो ॥ हों सम
र पथ अके लोई वे कि नि सो दखत मै हि धा इ
के सों ॥ जौ न वधों तोल जाउ पिता कह अर्जुन
नाम कहाय के तो ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ कोपे दोउ ब्या

१ कश्चक रिभूषणि श्री मछछि श्री मह मुषक रिभूषणि दासो भक्त पण्डित कक
महेश्वरी श्री मक पण्डित श्री मश्वरी गुरु मश्वरी गुरुगुरु दासो श्री मकर मछो वाक विम्वरि को
करत रेरे को मुमह न रि कि म म म म

विज्ञे०

॥५८॥

सुभटतपीकैभेस॥५१॥**दोहा॥** पवनपुत्रअ
रुपथ्यकेअैसेऊतेप्रहार॥बैसोईमैकलष्योव
लदीनोकरतार॥५२॥**सोरठा॥** सहदेवतहांआ
इगहिकरलैभीमहिगयो॥पुपदमुतासगलाइ
पहुंचेकुंतीनीकरसव॥५३॥**सुधिरिखाकं**
॥ सुनिसुनिमातमहासुषदाईआजुकधूरुहम
भिष्टापाई॥तुवआगासबबंधवमानै॥सोत
जिओरहिचित्तनआनै॥५४॥**कौंताउ०॥** पां
चौबंधनसुतुहैपुत्रआईबहुनेह॥जोकधू
पाईभीषतुमबाटिसकलमिलिलेऊ॥५५॥**दो**
हा॥ मुषजोयोतवपथ्यकौपांचालीअकुलाई
॥अर्जुन॥ माताकौसुनिसुषदत्रियवचनन।
मेओजाय॥५६॥निरषीकौंताओपदीमनहीम
नपछिताइ॥वचनइनसौमैकह्योपुत्रनसकै
नसाय॥५७॥आयेहलधररुस्मतहांजानतस
गरोभाव॥करिकौंताकौंवंदनामिलिजुधिरिखा

व॥५८॥ तब बिचारि कैं दुपद नृपधृष्ट दिवन
सुत बोलि॥ आइक परिया कौन ये भेद लेय सु
त घोलि॥५९॥ **सुंदरी**॥ नीच किधौं को उति
म है नर॥ कैं वन में कि वसैं वन सुंदर॥ श्री जड
नंदन भूपत हे जहां॥ आइ सुतो सुत भूपतिको
तहां॥ ६०॥ बात वितीत कही भूव भूपति कृष्ण
मुनी वक्रधाहराषी मति॥ प्रष्टहि पंथ हियों ज
डुनायक॥ ते सुष आनु द्यौ सुष दाइक ६१॥
दोहा॥ राइ वेधक सो भलो सुनिये पथ्य सु
जां न॥ गर्वन वायो कर्ण कौ मास्यो कौ रवमा
न॥ ६२॥ **अर्जुन उ०**॥ **सवैया**॥ कष्ट पस्यो ज
ब ही जहां जाय कै राषी तही सब पै जह मारी
मां रुख यं वर दोय दी के अतिकर्न हि गर्भवयो
तहां भारी॥ जाति कैं बीर धनु रधी रस आनु
त ई वर कैं बर नारी॥ काज कहौ सर तो किहि।

विजे०
॥५॥

भांति जो होति सहायन आपसुरारी ॥ ६३ ॥ भलो
दिठानों करणरण इह सराहों ताहि ॥ भीमक
हे कुराज हरिवडो बलीवह आहि ॥ ६४ ॥ मो।
अघवामो जु धर्मै धनि दुरयो धनराउ ॥ हनतौ
एकन मेघजौ करत सखे सहाय ॥ ६५ ॥ दोधक ॥
धृष्ट दिवनि सगरी गति जां नी कहा पीतासों
विधि सुषदां नी ॥ उषत्री कुल उतिम आहि
नही कपरीया जानों ताहि ॥ ६६ ॥ हरि हलधर
तिन पेंचली आये ॥ देत वडाई वहु गुन गारा
इह सुनि भूपति फूल्यो हियो ॥ विधना सब मन
भायो कियो ॥ ६७ ॥ दुपद उवाचा ॥ चामर ॥ सा
जि सा नि बीज राजमत दंत गाजिकें ॥ चर्म
वर्म सस्त्र पुत्र चार द्रव्य साजिकें ॥ जाके अ
वासधार बस्तु सो रखाइये ॥ देखिकें तर्पनी कों
सुकर्म मर्म पाइयो ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ आयु सुदी

नौभूपजो सोई कीनो जाई ॥ भंडकषायो ।
विधिसहित मोतीयन चोकपुराय ॥ दृष्ट
॥ गीतिका ॥ आइ कै तहां पंचबंधव सक
ल सों जनिहारियो ॥ नकुल लषि वाजिस
रा है पथ्य धनु टंकारियो ॥ भीम फूल्यो देषि
कुंजर षर्ग सह देव कर गह्यो ॥ नृपति सब
देखत सराह्यो हाथतिन कछना लह्यो ॥ ७०
देषिया विधि द्वार भूपति परम सुष ॥ हिरदै भयो
हे देव गंधर्व जश को उभे घत पसी को लयो बो
लितो नौ पथ्य भीतरि ॥ इयद न्यम सुष पाइ कै
तव कह्यो यों हसि भीम जे ठो प्रथम व्या है आय
कै ॥ ७१ ॥ सुनि भयों वक्रु संदेह भूपति नाच को
उहे महा ॥ पंचजन त्रिय एक व्या है मूढतावर
नौ कहा ॥ बोलिय ठरा व्यास आ एक हिनि न सों
विधिस बै ॥ एक पति हि धरम पतनी कहारी

विज्ञे०
॥६०॥

धिसोइहतवै॥७२॥ दोहा॥ जेठो व्याहैया
त्रिये॥ लहुरे कहि है माई॥ लहुरे कि त्रिय जे
ठकह॥ सुता वरावरि॥ प्राहि॥७३॥ व्यासो व
च॥ सोमवंस रापंड सुत॥ एक जोति मति रा
क॥ सरब जनम सुरे सरा॥ सुनिये सहित विवेक
७४॥ पंच इंद्र जन उहि जनम॥ पायो सिव बरदां
न॥ पंड नृपति ग्रह अवतरे॥ अत्री बुद्धि निदां
न॥७५॥ रिषिक न्याही शोष दी॥ सेये सीव चि
त ल्याई॥ पंच कला कै देइ बरइ हवां श्रौ सु
षयाई॥७५॥ दिव्य दृष्टि कै नृपति को दर सायो
यो हार॥ देषे राके जोति तहां॥ पंच इंद्र अवतार
७६॥ इप दउ०॥ चौपई॥ तुम विन को समुम
हि भगवों॥ तव छिति नाइ करिषि गुन गावै
नृप विवाह की सब बी धिठांनी बोलियु धिष्टि
रबहु सुषदांनी॥७७॥ तिनि की भावर करी नर

नाह ॥ फिर चारौ कौकस्यो विवाह ॥ डुकु कुल
नकी विधिही जैसी ॥ भांति भांति सब की नातैं सी
पंच पुरुष कौं कन्या दीनी ॥ विदादाय जौ दै कै की
नी ॥ हय हाथी पट भूषन गनै ॥ दासी दास दीये को
गनै ॥ ८० ॥ लै दल परिघ हुय हगये दुपद फिरे प
डं चाय ॥ गये हस्त ना पुरत वै आय सदन सुषपा
य ॥ ८१ ॥ सुनि डुर जो धन कै भयो ॥ अंग अंग अति
दाह ॥ नैक सुदायन द्यौस निसि चक्रत चित्त
नर नाह ॥ ८२ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे वि
जय मुक्तावली कविष्टत्र विरचितायां बक
दांन वबध सोपदी विवाह वर्णन नाम एका
दसोऽध्यायः ॥ ११ ॥ डुर्योधन उवाच ॥ ग्रामधां
म अप्नौ लयौ ॥ पांच बबध व आय ॥ कहौ बं
धु की जै कहा ॥ इन सौ कपुन बसाय ॥ १ ॥ वर
न नगर कौ आदि दे ॥ किने किते उपाउ ॥ तउ मेरे
नही पंडु सुत ॥ फेरि प्रागट भये प्राइ ॥ २ ॥ तपी मे ।

वि० मु०

॥६१॥

यथायेहते॥ भूपपुपदअस्थान॥ हमकाह
जानेनही॥ मारेसबकेमान॥ ३॥ भीषमविडुर
लायकें॥ युक्तमंत्रसुजान॥ कौनउपाउकरैक
हो॥ सोमतीदेहुनिदान॥ ४॥ भीमसेनउ॥ ३
पकारीतुवबंधुनृप॥ उनसंकष्टूनघोरि॥ महा
सयानोपवनसुत॥ ओगुनसहेकरोरि॥ ५॥ बर
जोअपनेसौदरति॥ ओगुनकरैनकोई अति
सनेहतुमसौउनै॥ ताहीदिननृपहोया॥ ६॥ ३
र्यधनउवाच॥ दोसलगावतहोहमें॥ उनको
भलोमुहाई॥ सकुनिकह्योइहमंत्रतब॥ बी
चिपैठिकैआई॥ ७॥ कातवृजेभीषमविडुरइ
हैमानिकैलेहु॥ जोकष्टूनकोदोसहे॥ उन्हें
आपसौदेहु॥ ८॥ गयेनृपतिधृतराष्ट्रपुं सुनि
भूपतिइहवात॥ सकुनिकह्योसोइकह्योपि
तुकैआगेजात॥ ९॥ बोलियुधिशिजवकही
सुतविनियोसोमानि॥ रह्योइंद्रपथजाइकैआ

पग्राम उरजां नि॥१०॥ चौपई॥ मां निरजाई सु
चल्यो नरेस॥ सुबस इंद्रपथ की नौ देस मनि
मयषचित वने सब धांम॥ मैन हल सत सुरप
तिको ग्राम॥११॥ फटिक थंभ की जागति जो
ति॥ होउ सर की रनि सों होति॥ बापी कूप स
नीर तडागा॥ दिसि दिसि दिसत सुंदर वागा
१२ कल्पलता से दुम मन मोहैं॥ फूले फूले
छहोरति सोहैं॥ चंचल हय अति धांम विरा
जत॥ तम के सुत के सेकुं जगा जति॥१३॥ भाट
भले विरदावली गावत॥ जो मन इच्छत सोई
पावत॥ भूपजु धिछिर आग्या होई॥ चारौ वं
ध करत है सोई॥१४॥ करत अनंद सबै मन भा
ये॥ एक घोस रषि नारद अये॥ आदर करि
कै आसन दीनौ॥ तबरीषि वचन प्रगाट्यो की
नौ॥१५॥ तीन फूलो कजात हुतहो॥ अति अ

विजे०

॥ ६२ ॥

तिथकरतसबजहां॥ मेरोबचननडारेको
ई॥ जोईकहोवहपैहोइ॥ १६॥ रिषउवाच
तुमहोसोदरपांचसनेह॥ तरुनिद्रोपदी॥
हैतुवयेह॥ मिलसबबंधइहेउरधरोमो॥
आगेसबबाचाकरो॥ १७॥ जोलोंविति
जाईषटमांसएकरहोद्रोपदीअवासअ
अवधिमांजोहूजोकोई॥ वारहवरषहोई
वनताइ॥ १८॥ सबहीमीलीकैआगामांनीस्व
र्गसिधारोरिषिसुषदानी॥ प्रथमनृपतिकी
बारीभई॥ पंचालीसज्यापरिगई॥ १९॥ द्विज
कीसुरभीचोरनलीनी॥ आइयुकारविप्र
तहांकीनी॥ सुनैनकोऊलगैगुहारिसो
तबथक्योपुकारियुकारि॥ २०॥ द्विजउवा
च॥ श्रुप्यै॥ श्रीकलहिकहायआप
कुलअपजसलावत॥ सुराभाविप्रगुहा

॥ ६३ ॥

रि। क्यौन पापी तु मधावत ॥ कायर कौकित
मूढ रहै तु मधांमहि गहि गहि ॥ और न जानै
नाम ॥ रटै इह अर्जुन कहि कहि ॥ त्रिया काज
सुरभि द्विज काज जो नहि इन कौ उपर करिहि
उपहासल रहि सिर आपनै सो घोर नर्क उहि
पुर परहि ॥ २१ ॥ अर्जुन उवाच ॥ दोहा ॥ रहि
रहि विप्र सुजांन ॥ तू जाग न दे न रनाथ ॥ बिन
ती करित बमैं चलों ॥ लै कृपान तु वसाथ २२
॥ सोरठा ॥ धनु न हमारौ हाथ धस्यो सदन मै वि
प्र तहां ॥ दुपद सुतान रनाथ पौ ठेता ही धांम मै
२३ ॥ दोहा ॥ द्विज एक दूवा तन मानत है ।
मुष वै न कुबे न नि आनत है ॥ रचि कै सब वा
त बनावनि शोडहं ॥ लहि पाप महा सिर आ
प अटहं ॥ २३ ॥ अरि आपहि सो अकुलाई
मनै ॥ चित्त मै द्विज कौ प्रपमान गिनै ॥ नृप धां

विज्ञे०

॥६३॥

मगायो धनुषां मगाहं ॥ त्रिगओमिदले ॥ ई
बाहतहां ॥ २४ ॥ तबही बरबीर चलो धनु
ले ॥ मुक गायदई सुरभी वलकैं ॥ रिषिनारद
बेन धरे मनमैं ॥ हित तीर्थ बेगि चलो मनमैं
२५ अवलोकि सुदेवन दीज बही ॥ हित मंज
न पथ धस्यो तबही ॥ लखि नाग सुता लगि दृष्ट
रही ॥ अवलोकत हीति नवां तु गही ॥ २६ ॥ ग।
हि ताहि पताल हिलै सुगई ॥ बह व्याल सुता
महि मोह मई ॥ तुम तो बरेश्वर मोहि दए
अति निशुर क्यो तुम नाह भये ॥ २७ ॥ अर्जुन उ
वाच ॥ चौपई ॥ रिषिनारद को हम वै न लख्यो
अब या हित तीरथ पंथ गह्यो ॥ व्रत भंग महा
त्रिय अंक मरै ॥ बरु तीरथ की हम जात करै
इह आपन ही जामै हिने मधरो ॥ फिरि सुंदर
तो कहूँ प्राय वरौ ॥ इम व्याल सुता तब वात

॥६॥

करै॥ इह भांति नही तव रहे॥ २४॥ चलि
होमगबै नन सायजबै॥ सुनि जाय अगार
थ धर्म सबै॥ सुनि ता सह पथ विवाह कियो
तहां के तिक दो सविराम लयो॥ २५॥ त्रियनां
म उलूपाहि गर्भ भयो॥ सुत मन मथ्यो अ
वतार लयो॥ उरती रथ की तव सुई भई क
हिय थ्यत बैगहि वाट लई॥ ३०॥ उलूपा ना
ग कन्या उवाच॥ सुनि प्रांन पती शक बात क
हों कहि सो जिहितें कुसरात लहों॥ पुम दा
डिम को दरसाय दयो॥ जब जानहु जू इह स
कि गयो॥ ३१॥ दोहा॥ तव संदेह मो प्रांन को
कीज्यो नागरि नारि॥ आयौ निकसि पताल तें
तीर थहेत विचारि॥ ३२॥ नैमसार चलि जाई
परसि मांन सर को गयो॥ बारा न सी अन्हवा
इ गया त्रयति की ने पितर॥ ३३॥ सुंदरी॥ साग

विजे०

॥६४॥

रसंगमै गंगामर जु द्योसकिते। वनमै विनए
जु ॥ नहाई तबै मथुराहि चले जू ॥ देष पश्चिम कुं
उभले जू ॥ ३५ ॥ चौपई ॥ नहाइन ताजलमैन रको
ई ॥ जाल लषे फिसि आवत सोई ॥ विप्रन कौ
लषि पथ्य कहि यौं पैठत को उनमध्य कहौ कौं
३६ ॥ द्विज उवाच ॥ यामहि जातरहे अति भा
री ॥ तेज गजीवनि कौ इषकारी ॥ पथ्य नही क
छूत्रा सकस्यौ लै पगता जलमां ह्दस्यौ जू ३७
आइ गह्यौ पगत त छिन ग्राही ॥ अर्जुन के पग
उर भै कछु नांही ॥ लै जल तै व हवा हिर आं नी
कै गई सो त्रिय रूप सयां नी ॥ ३८ ॥ अर्जुन सौं
इह वै न कह्यौ जू ॥ आय दियो रिषि जनमल
यो जू ॥ ताजल तै प्रिय पंच कटी यौं ॥ मांन सरो
वर इंद्र त्रिया ज्यौ ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ पांच त्रिय न।
कौ मोष करि चलि अर्जुन वरबीर ॥ तजि ग

हवरमगतवगयोमानिकपुरनधीर॥४०॥
॥सोरठा॥ चित्रवाहुवरवाहुजीसोशितमं
उलघनौ॥ राजततहांनरनाहसकलजगत
कोकामतस॥४१॥ दोहा॥ ताकैइहिताइं
इमुषचित्रांगदासुनांम॥ रूपवहिक्रमउर्व
सीविज्जुलतासीबोम॥४२॥ सोरठा॥ कन
कवरनतनज्योति॥ लसतनिलपटओटयों
जगरमगरइतिहोति॥ मांनहुघनमेंदामिनी
४३॥ ताहिनमुषइकइताकिविकलसकल
जियकलनही॥ रहीपथगतिथाकि करीब
सीथवंदिजन॥४४॥ गीतिका॥ जायनृपकों
तवजनायोंव्याहअर्जुनकोभयो॥ मत्तदंती
दीयेवाजीइव्यवहुकंचनदियौ॥ चारिवर
षरहेथैतेलिपुत्रइकअर्जुनलह्यो॥ जाहुती
रथजातकोंनरनाहसोतिनयो कह्यो॥४५॥
नायमाथोभूपकोंचलिधारिकानगरीगयो पा

विज्ञे०
॥ ५५ ॥

ई **सुधि** आरे **कपानिधि** सुषसव को उरभ
यो ॥ **रुकमनी** दे **आदिसव** त्रिपता हि भेटन
प्रियो ॥ **चली** को तिगहित सुभप्रानिरषी वरु
सुषयाईयो ॥ ४६ ॥ **सोरठा** ॥ चंचल नैन नता
किनि नैन पठ चंद्रि सिलषनि ॥ **रहा** पंथ गति
था कि परे फदा फरकें सफर ॥ ४७ ॥ **बोहा** ॥ न
षसषसकलवनी ठनी ॥ करें सकल सिंगार
धीर रही नही पंथ उर ॥ **आकुल** तनमसम्हारि
४८ ॥ **चौपड़ी** ॥ तबही सुभप्रार्जुन देख्यो अ
पनो पति करि उरम हिले ध्यो ॥ **सिव** सेवा को इ
ह सब सार दीयो मोहि पथ्य भरतार ॥ ४९ ॥ इ
ह सब विधि श्रीहरि यह चांनी ॥ तब इह अ
पने उरमें आंनी ॥ **गर्भ** सुभप्रार्को इह भयो ॥ जठ
रवास अहिदांन वलयो ॥ ५० ॥ **दीजै** पथ्य हि
मिलै कलंक ॥ **श्रीहरि** आंनी इह बुधि अंक
बो लि पथ्य सौं तब इह कही ॥ **बसतु** बमनहि

सुभशरही॥५१॥ मैःअपादीनीहरिलेकु पाछे
कैहैवकुतसनेह॥ह॥कवरिअर्जुनसुषपा
ई॥भईसद्धिपुरभीतरिजाई॥५२॥**दोहा॥**को
पिभयो वलिभइको॥अवअर्जुनकितजाई
ल्याउगहि कैधारिकाआओभीषमगाई॥५३॥
कोपिचल्योसजिसैनवकु॥वरजेप्रीहरिआ
ई॥कोपारथकेसरसहे॥क्योरनजीत्योंजाई
५४॥हारैहोयकलंककुल॥जीत्येकुगतिना
ही॥तातैकोपहिपरिहरो॥चल्योधारिकोजा
हि॥५५॥**वलिभइउवाच॥**तेरीइहकरतस
व॥कधूनजांनिजाई॥फेरितहीउद्धिमकस्यो
अवेठिरहेकरगाई॥५६॥आयेअर्जुनइंद्रपथभू
पतिबकुसुषपाई॥लईसुभशगेहमैमंगलचा
रकराई॥५७॥पुत्रवधूकौंतालषीबकुविधिक
रिआनंद॥सुभलछिनगुनआगरीमुषद्विती

विजे०

॥ ६६ ॥

राकाचंद ॥ ५८ ॥ **श्रीपद्मी** ॥ इहविवारि श्रीहस्त
कस्यो ॥ सबही सो ज्येसो अनुसस्यो ॥ चलयो इंद्र
पथ जइये भाई ॥ जाइ पथ्य कौ करै सगाई ॥
लीनै गजरथ तुरी तुषार ॥ जात रूप भूषन भं
डार ॥ हरि हलधर सब संग लगाई ॥ पडुचे बे
गि इंद्र पथ आई ॥ **६०** ॥ पथ बिहै सि सुभद्रा
दंड ॥ भावरि पारि रीति सब ठई ॥ हस्ती हय र
थ भूषन दीनै ॥ जाचक सकल अजाचक ॥
कीनै ॥ **६१** ॥ **दोहा** ॥ करि विदा वलि भद्र की
नगर द्वारि कोहेत ॥ आप क्रपा करि हरि रहे
भूपति कै संकेत ॥ **६२** ॥ गर्भ सुभद्रा कै भयो पु
त्र कलाजनु चंद ॥ नाम धस्यो अभिमनु तब की
नो परम अनंद ॥ **६३** ॥ उपदसता के पंच सुत प्रा
ठ भये सुषकारि ॥ मां तरु कपितु पांचते ॥ पांच ऊ
की उत हारी ॥ डर जो धन संसो कियो ॥ रची कहा

करतार ॥ हते अकेले पांचवै ॥ अववा द्यौप
स्वार ६४ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे विजय
सुता बलीकविष्णुविरचितायां सुभद्रावि
प्राहवर्णनं नाम दशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ सोऽह
॥ प्रेततपासे सारि अर्जुन रुक्म अनंद सो मा
रत दाउह कारि अपनौ अपनौ भाषिकैं ॥ १ ॥
जंगम प्रयात् ॥ धस्यो विप्र को रूप यो ॥ हृषीदी
न कै कै महारोग प्रायो ॥ तहां आय कै दीन वां
नी बघां नी ॥ हरो पीर मेरी महा सुष्य दां नी ॥ २
कहै अग्रिमो हैं शुधानैं क नाही ॥ दया आप
की जै महा जीव माही ॥ किते जल कै इंद्र को वि
पन जास्यो ॥ महा को पिकैं नी रसों वोरि मास्यो ३
सबै ठोर कों मै भरो सो न सायो ॥ चल्यो अबै हं
रावरे पास आयो ॥ चस्यो काननैं इंद्र को वीर ॥
जैसो ॥ महारोग नासै करै काज तैसो ॥ ४ ॥ चले
रुक्म जू पथ्य कों सांगी नैं ॥ बनै जारि वे केस

विज्ञे०
॥ ६७ ॥

बैकाजकीनें॥ तवैअग्निसों प प्यवां
नी वषांनी॥ धनुवां ननां ही सुनों सुषदां
नी॥ ५॥ दोहा॥ अष्टयत्नदयोअगनि
आपुकाजपहचांनि॥ दीयोधनुषगांडीव
तवनंदघोषरथअगनि॥ ६॥ साजिदीयोर
थअर्जुनैतैवहीश्रीजगुआई॥ पूरवदिसिप
ठयोसुभटपावकसाजोजाई॥ ७॥ आपुरहे
पश्चिमदिसाथाईलईदिशिवांन॥ जीवतं
ततावियनमैभाजिनपावेजांनि॥ ८॥ पूरव
तैसाजिअगनि॥ अर्जुनपरमप्रचंड॥ दीन
सबदरोवैसबे॥ सावजपंषिअघंड॥ ९॥ जीव
पुकारैदीनरट॥ सुनिसुरपतिसुषदाई॥ तुव
वनजारैअगनिइह॥ यहकिततोहिसुहाय
१०॥ प्रलैकालकेमेघजे॥ तेबोलेसुराई
कोरिछानवैराकसंग॥ वरसहुवनपरजा

ई॥१५॥ उमे आये मेघन भत ममये रिसिदि
सिखाई॥ बर सोहे लषि पथ्यत च लीनो
धनुष चढाय॥१२॥ सवेय॥ धाय कै पथ्य
चढाय लयो धनुषाय लयो बर अंबर वां॥
नन॥ दोरि दिवाग निला गि उठी दुम जारित
साध समूल सपानन॥ कोपि महामघ वा
बस्या कहू॥ राकन वुंदन भीजत कानन व्यो
म विलोकित अहुत कोति ग किं नराज छ
चटे सुविमानन॥१३॥ दोहा॥ घाद सजो
जन लौ विपन परे वुंदन ही एक॥ कोरि
धूनान मे जल द मिलि॥ उद्दिम किये अनेक
१४॥ सुसे स्फार सावर सुवर॥ सेही सीह सको
च॥ सारो सुक सोना सवे॥ सकल सिचानन
सोच॥१५॥ चिराचील्ह चिमगा देरे चक

विज्ञे०

॥६८॥

वाचक्रतचकोर॥ वरतउबरतनजीवस
ववचननकाह्वोर॥१६॥ दंडक॥ धाई
धाईमेधबरछाईछाईचितपरिवरसिव
रसिहारिभोगेभहायकै॥ गरपिगरपिगर
तरपितरपितहांजिततितनीगागटरिठह
रायकै॥ तरुतरुलागिआगिवरतउबर
तनभागीपंधीपसुवचनपरायकै॥ शत्रु
वलवंतबीरपथ्यकैअनंतवरतपितअ
गनिकरिकाननचरायकै॥१७॥ दोहा॥ सु
निमुनिवनकीइहदिसा॥ तवकोप्योसुरा
ई॥ हन्योवज्रवानावरीटटिपरीषहराई॥
॥चौपई॥ अर्जुनबांनलयेफिरिछाई॥ वृद
नपरैकहवनआय॥ सुरतोस्योपंजरदसवा
र॥ जोरैपथ्यउहेआकार॥१८॥ इहिविधिव

नषांज्यौनचरायो॥ भग्योमयासुरदानवआ
यो॥ राषिराषिइहअसुरपुकोरें॥ मोवैसाद
रजारैमारें॥ २०॥ दर्ददिलासाराष्योसोई॥ द्र
डिआसतोहतैनकोई॥ असुरभनैसुनियथ्य
सयानैतेरोक्रतुहीकोंनवषानें॥ २१॥ मया॥
सरउवाच॥ जितेत्रिभुवनमेंअसुरहौतिनको
सुतिधार॥ जबचाहेतबआयहोंकरोकाज
सबसार॥ २२॥ विदाकरीअर्जुनसुभटअसुर
चल्योसोधांम॥ पुरईपावककामनासबविधि
केगुनग्रांम॥ २३॥ दोहा॥ आएसुरपतिपहुमि
मेंविग्रहसकलनसाय॥ सुतहिदेखिकधूस
षभयोकधूमनमेंपछिताई॥ २४॥ इंद्रसीधा
येसुरपुरी॥ चलेपथ्यग्रहआप॥ चलेइंद्रपथ
रुक्मज्ज॥ जिनकोअमितप्रताप॥ २५॥ निर
षिजूधिखिरभपतव॥ कहीपरमसुषपाईश्री

विज्ञे ०
॥ ६९ ॥

जडराईप्रतापतैं ॥ तैंजी त्योंसुरराई ॥ २५ ॥ गहिहे
तो कौंधनुषही कोऊ सुनिवलि वंड ॥ पुरिसुज
सधरपरह्यौ सप्रदीपनवरंड ॥ २६ ॥ बाराच
ती कौंतवगये विदाभये जडनाथ ॥ इतभूपति
केनिकटही सोभितबंधवसाथ ॥ २७ ॥ **राजा**
युधिष्ठिर उवाच ॥ रचिये धांमवनाय उतिमादी
से हरितैं ॥ वहुविधिचित्रकराई ॥ धवलनवल
नीकी सभा ॥ २८ ॥ **अर्जुन उवाच ॥** जोतुवभूष
ति आई सुपाई ॥ नाममया सुखे गिबुलार्क ॥
राजोवाच ॥ वेगिही बंधवताहि हकारो ॥ उति
मउतिमधांमसवारो ॥ ३० ॥ सुखिमया सुरका
उरआनी ॥ आयगयो तवही सुषदांनो ॥ आव
तहीति नभूपतिदेखे ॥ धर्मधुरंधरचित्तविसेखे
२१ ॥ इति श्रीमहाभारते पुराणे विजयसक्ताव
लीकविष्णुविरचितायां इंद्रवनबंधवदाहि
नो नामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ आदिपर्वसमा

सा॥ अथ द्वितीय सभा पर्व कथनं॥ दोहा॥
धर्मधुरंधरतिहि छिनक॥ धर्मसुवनभूवभू
प॥ कहीमयां सुरअसुरसौ॥ काजेसभाअ
नूप॥ १॥ चंदरीछंद॥ नवायसीसवेगिदे॥ च
ल्योसुबीरचित्तकें॥ समुद्रपाससोगये॥ सु
धामसीसकेलये॥ २॥ दोहा॥ हिरनकुसकौ
सदनसौलीनोंतिनधरिसीस॥ लेआयोसो
ईद्रमथ॥ लषीफूलेअवनीस॥ ३॥ सबैया॥
सुंदरनीलेरंगीले॥ घरेओरपीरेहरेरचिधामव
नाये॥ मानिकलालनिकेवहुजालप्रवालनि
केषचिथंभसुहाए॥ स्वष्टसिलाजनुदीसतनी
रवनीचकवाजनुपैरतथाए॥ हैअमरावती
तेअतिअद्भुतसुंदरसअसवैष्टविष्टोये॥ ४
दंडक॥ सोभाहिकेसारतहांफटिककिवारव
नेकेतेघारघारजिनैदेखैवुझिभरमें॥ दियेहै

विज्ञे०

१७०॥

किदावेहै विचारतही भूलि रहै जांनिये सनि
रसै पै नारनाही सरमें ॥ धांमनि कै बीचि निदरि
चिनि मरि चिकानि राजत है नीलमनि छत्रघ
रघरमें ॥ भूपकी सभाकी आभा कौन सों वषां
निकहै ॥ ऐसी युति नादिक हूं हूं प्रके नगर
में ॥ पू॥ दोहा ॥ पट दाने से देषिये दिये न पट
तिहि द्वार ॥ जे सरवर है नीर जुत ॥ प्रथवी के
आकार ॥ ह ॥ मन भावो दे कै तवै ॥ समदि मया
सुरग्रेह ॥ भूपति वेठेति हि सभा ॥ वंधुनि सहत
सनेह ॥ ७ ॥ चौपई ॥ रिषि नारद भूपति पे
ये निरषि सभाव ऊ विधि गुन गाये ॥ ऐसी
सभान मे कऊ देषी ॥ सब ठावन ते उति मलेषी
८ ॥ रिषि उ० ॥ सवैया ॥ किं नरजघपुरी अ
वलोकित धर्मपुरी अवलोकत फीकी ॥ भोग
वती अवलोकी सबै ॥ सुविलोकियु सूरसपुरी

सुरही की ॥ भूतल भूषण कै धाम धांम विलो
कि फिसौ न भई रुची जा की ॥ और सभान सभा
सहलागत रावरी आहि सभा अतिनी की ॥ ८ ॥
दोहा ॥ राजो वाच ॥ तीन भवन की बात सब जान
त हो रिषिराई ॥ सुद्धि कहौ नृप पंड की ॥ मो कौं
सकल सुनाई ॥ ९ ॥ चौपई ॥ सुनि अवनि पति
बहु सुषदाई ॥ एक बात पै कह न जाई ॥ निर
षत पंड हि भयो ससोक ॥ भई कु मृत्यु गयो जम
लोक ॥ १० ॥ जग करौ मिटि है सब दोष ॥ पंड
मही पति पावै मोष ॥ विलषे भूपति बहु दुष पा
ई ॥ दै उपदेस चले रिषिराई ॥ ११ ॥ जग राजसी
भूपति की जै ॥ भूपतीति जग मै जस ली जै ॥ जग
विधान सकल अनुसरै ॥ एकरा स्तेर छा करै ॥ १२ ॥
चंदन गारै छितियति एक ॥ एक ते प्राण हि स
मध अनेक ॥ सहस धेनु सुवरण जुत देऊ पित
कौत्यारि जगत जस लेऊ ॥ १३ ॥ भूप कहा मन चिं

विज्ञे०

७१

ता आई॥ जिनके श्रीहरि सदा सहार्द्र इहक
है नारद स्वर्ग सी ॥ १४ ॥ मुमिरे भूपति श्रीहरि ।
आए ॥ १५ ॥ रिष उपदेस महीप सुनायो जग्य ।
करो उन मोहि वतायो ॥ श्रीहरि कह्यो मत्तो इह
की जै ॥ जीनै जरा सिंधु जमली जै ॥ १६ ॥ तिन नर
मेध जग्य जग्य है नाधो ॥ ताहित भूपति कौ गन
वांध्यो ॥ एक घाटे सो अधपति रोके ॥ परे वंधी
सो महीप सो के ॥ १७ ॥ मारि ताहि हैं वंदि मिला
ऊँ ॥ सो कवंत सब भूप धूरां ऊँ ॥ भीमसेन अ
र्जुन सग लये ॥ रुस कपरिया के तिन छए ॥ १८
नगर राजगिर चलिते गए ॥ दुर्ग मठ म विलोक
त भये ॥ मध्य नगर के लागे जांन ॥ बाजन बाजे
हने निसान ॥ १९ ॥ जग्य यली भूपति हो जहां ला
गे जांन सबै मिलि जहां ॥ रक्षक हुतो मध्वतिह
वार ॥ विन दूरे को चले अगार ॥ २० ॥ दोहा ॥
तिन कर पकस्यो भूमि को देहि न को फुजांन

तुमसौ कछु सरवरनाही कहत नवनई आन।
२१॥ भिसौ मट्र सो भीमसौ ~~बोला~~ अडुत जु ~~ब~~
पवन पुत्र के उर हयौ॥ मुदगार करि वहु कुरु॥ २२
लख राय भूषति लगि स्यौ॥ पथ्य पचास्यो आ
ई॥ चेति भीम करि कोथ अति॥ हन्यौ गुरु ज उ
र धाई॥ २३॥ फेरि वलीवर वाहु वर डारि भुजा उघा
रि॥ कौरो दुष्ट विन प्रांन सौ फटि कसीला सौं मा
रि॥ २४॥ कस्यौ प्रनांम मही पकौं जग पथली मै जा
ई॥ देषताही संदेह करि॥ यौ वो ल्यौ भुवराई॥ २५
आहित पीकै भेष तुम॥ दीषत वहु वल वंड॥ मांग
हु जो मन कांमनां सोई देहु अघंड॥ २६॥ श्री कृ
ष्ण उवाच॥ मागत जु धर्म ही पति दीजै॥ जीमहि
और बीचार न कीजै॥ तिनिहु मै जो आइ सुपाई
सोइ कछो रन जु न आवै॥ २७॥ भूपति कृष्ण त
हि पहि चान्यौ॥ वैनत बैइ हभांति बषान्यौ॥ तो
संग बार अघारह हासौ॥ में फिरि तूत वदे सिनि
कास्यौ॥ २८॥ हौं अब जु धन मारौं हौं तोही॥ तरन

विज्ञे०

॥१२॥

पादोपावह ॥ १॥ कोमलगातधननयदेवो
जुवनतार ॥ २॥ चमनलेखो ॥ २॥ भीमघरीशकु
द्ध ॥ सहे ॥ फेरितुद्धलोकतयापहिजेहै ॥ भूपति
दोसमही अतिआनो ॥ कोपतभीमचट्टो सुषपा
न्यो ३० ॥ सोरठा ॥ जुरेजुद्धविविबीर ॥ मानहुंगज
मातेभीरत ॥ सूरसमरनधीर ॥ मनोसिषरद्वयसेल
के ॥ ३१ ॥ भिरतनकोऊहारयेदोऊसमरप्रवीन ल
टपटायगिरिगिरिउद्ध ॥ दोउरोसहीलीन ॥ ३२ ॥ ह
नीभीमभवपालसिरभईगदाद्वेषंड ॥ जुरासिंधुतव
क्रोधकरिगह्योसुभटवलिवंड ॥ ३३ ॥ फेस्योगहिकैच
रनविवितीनबारभूपाल ॥ फेरिगदाकरिमैलईप्र
गट्टोवचनकराल ॥ ३४ ॥ चौपई ॥ तजानैकोरवसौ
भाई ॥ मोसौतेरीकहावसाई ॥ कैअवसमरछाडि
भजिजाउ ॥ वज्रपातकैओडोघाउ ॥ गोसुनिपथ्य
हिचिंताआई ॥ कहाहोईजहांकृष्णमहाई ॥ फिरिकै
कोपेदोऊबीर ॥ रनमैउदितकोपांभीर ॥ ३५ ॥ जुरासिं
धुवहुवरकैधाई ॥ लताहन्योपवनसुतआई ॥ सप्त
पैउपरिपस्योसुजाई ॥ रहीविकलतामुजपैआई ॥

३७॥ जैजै करिकै उठो मन्हारि॥ हरिको मुख निरख्यो
मुख कारि॥ मुकिकै हंसद॥ ३८॥ तिनको
फास्यो देखत नैन॥ ३९॥ समझि सैन काप्यो वरवीर
उनों कै गयो फूलि सरि॥ जुरा सिंधु भुव पटक पछा
रि॥ कानै फकावी चितैं फारि॥ ४०॥ सोरठा॥ सवरे
राजाराई मुकराएत वा वंदितैं॥ घूटि चले मुख पाई
त्यो पंछि पिंजरानेतैं॥ ४१॥ त्रिभंगी छंद॥ जयनदन
दन दुष्ट निकंदन जग वंदन गरुडासन॥ भव भय मो
चन जन मनरोचन दुष्पमोचन भयनासन॥ सज्जन
जनंजन दुष्टनिगंजन परम निरंजन जय जग कर्ता
कष्टनिवास्तो दुष्ट सिंघास्तो मास्तो लोकनिहर्ता॥ ४२॥
॥ दोहा॥ हरि गुन गावत भूपसब गये प्रापने धाम॥ जु
रा सिंधु सुत बोली हरि जुरा सिंधु इहिनाम॥ ४३॥ नगरा
जगिरि को तिलक॥ कानों ताकै सीस अर्जुन भीमहि
संगलै॥ चलेति दुपरईस॥ ४४॥ सुरा सिंधु॥ कैटभ मधुम
रहरन धरन नष अग्र सयलवर॥ हिरनाकुस हिरनाछि
हरन प्रभुरदन धरन धर॥ संघासुर संघरन हरन हरि॥
अंधक वंधहि॥ घर दूषन वपु भंजिगं जिभंजन दसकं

विजै०
॥९३॥

धरि ॥ गत काज काज प्रलप धुव दयाल सिंधु असु
रुताल ॥ नमोनमो कवि छत्र कहि सुना राय राजग
उद्धरन ४४ ॥ दोहा ॥ चलि हरि आरंभ्यथ ताक
हदै कै राज भूपजु धिर सुप्रभयो ॥ भये सकल मन
काज ४५ ॥ श्री कृष्ण ० ॥ पठवौ वंधव आपनै जी
तहि चक्रु दि सिंदेस ॥ गये कृष्ण तव द्वारिका यो क
हिकै अदेस ४६ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे विजय
सत्तावली कवि छत्र विरचिता यांजरा सिंधु वधो नाम
वतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ दोहा ॥ करि कृपा चासो अनु
ज भूपतिलये वलाइ ॥ कह्यौ करो संवदिग विजै दि
सिदिसिजित हुजाई ॥ १ ॥ भीमसेन प्रवगये ॥ उल
रपथ्य सुजांत ॥ सहदेव दक्षिण राय छिमन कुल
पयान ॥ २ ॥ दिसिदिसिजति जाय सब आनि वां
धि महीप ॥ कीरति सो झाई धरा थल थल जं बूदीप
॥ चौपई ॥ सब वंधव नृप अंक मिलाए ॥ समदेन कुल
द्वारिका गये ॥ करि विनय कृष्ण हिलै आए ॥ नगर इं
द्रपथ बहे वधाए ॥ ४ ॥ आये दुरजोधन गुन ग्राम अ
तुल रूप ताको संगाम ॥ कीने सकल जगप के साज

जे जेतहां सकल रिविराई ॥ ५ ॥ **छप्पे** ॥ आये गो लम
व ॥ रात्रि पारसर आण ॥ विश्वामित्र विशिष्ट
गर्ग अंगिरा सु हाये ॥ बालमी ३ कडुरवास जां सु म
ति पारन लहर ॥ बहो सुभद्र कपो ए और नारद सु
निकहेर ॥ कवि छत्र अग्यासी सहसरी श्री सक
ल जुरे भूपति भवन ॥ जग्य स्थल लगे सवै वेद ध्व
नि दिज उद्धरन् ॥ ६ ॥ **सोरठा** ॥ भूपति कै चित चा
ऊ ॥ रक्षक कीने सब नृपति ॥ दुरजो धन भुवरा
उभंडारी सो भित भये ॥ ७ ॥ **दोहा** ॥ जहा हिरक
कत हां दै दुरजो धन दानि ॥ रीति होई भंडार ज्यो
सोरा चै मन जां नि ॥ ८ ॥ जितौ लुटा वै भूप धन दू
नोइ नौ ॥ **होई** ॥ देखि भस्यो भंडार तब भूलि र
ह्यो ॥ **सब कोई** ॥ ९ ॥ **चौपई** ॥ कीनो गर्व जु
धियिराई ॥ कौन आजु मेरी सरि आई ॥ धनि ॥
हैं जा कौं भस्यो भंडार ॥ इह सकल वस्तन मैं सार
१० कीनो गर्व कृष्ण जवान्यो ॥ इह विचार अ
पनै उर आंन्यो ॥ करण प्राय भंडारी कीनो वेग
हि द्रव्य हो गयो हीनो ॥ ११ ॥ **सोरठा** ॥ चिंता का

॥७४॥

रित रह ॥ विष्णु कही ॥ सुनिये त्रिभुव
न नाह ॥ रीते भयो भंडार सब ॥ १२ ॥ **रुद्र उवाच**
तैं कछु कीनो गर्व मन ब्रह्म हस्त कुराई ॥ घटे
घटा यो द्रव्य नहि जो वह देहि वह आई ॥ १३ ॥ देत क
न कै कं पाउठै संकै गिर वार मेरा ॥ है कुराज कन
को इत नो ॥ ही नृप फेर ॥ १४ ॥ **आपा अर्जुन को दई**
लंका को अवजार् ॥ जीतिलं कपति को सुभट
बहु सुवरन ले आई ॥ १५ ॥ **सवैया** ॥ धाई कै जाई
चणयल यो धनु सागर वान निधारी लयोई ॥ को
वरने वरवाहु पगक्रम मार गलंक को बार कि
योई ॥ नवाइ कै गर्व निसा चरनाथ को घोर अ
दंड निदंड दियोई ॥ को सरि दीजिये देव अदेव
सुपथ्य समान नि और वियोई ॥ १६ ॥ **चोपई**
पुरन जग कस्यो भवराई ॥ भीम कस्यो उठि कै सु
षदाई ॥ आई सुदेव सबै अबनी को कौन के भा
ल करै अबटा को ॥ १७ ॥ **दोहा** ॥ इह वनि आई
सवन को ॥ कही सुषद सुषपाई ॥ अथ मतिल
क हरि सीर कीयो ये प्रभु त्रिभुवन राई ॥ १८ ॥ वै

मोतहां। से मुपाल नृप॥ १९॥ जो तै न कहो
कहा को भूपहरि॥ कहत तिल॥ सि॥ दीन॥ १९॥ चो
प॥ गाये राषत जनम सिरानों॥ ता को नाम कहा
मुष आनों॥ कोरव आदि मही पति जहां॥ हरि को
देत मान कत तहां॥ २०॥ जुरा सिंधु धलिके जिन
माख्यो॥ मेहुं अवइ हमंत्र विचाख्यो॥ मारो याहि खैर
सोलैहु रहन गेह हो याहिन देहु॥ २१॥ इत्युक्ते मे
वाहो और॥ अलका गयो पथ्य सिर मोर॥ जी सों
धन पति तिन बखाई॥ मिल्यो पथ्य को माथो नाई
२२॥ कंचनमनि गनमानि कजाल॥ दीनी चंद्रवदन
वहुवाल॥ तब सुषस अबीर चलि आयो॥ नृपति
जुधि स्थिर हरि स्मयायो॥ २३॥ जब तैं टीका हरि सि
र सुन्यो॥ करि करि को धसी सति न धुन्यो॥ वारवा
र प्रनृतर कहै॥ श्रीपति वैठे सन मुष सहै॥ २४॥ स
वया॥ एक कहही दसवी सपचास काही कहियो
हूतै आगरी नाथी॥ देव अदेव सवै नर देव जाते छि
ति देव भए सब साधी॥ जेती कचू कथमी जती कथ

॥७५॥

जहीम राजाद जै वटि गयी ॥ चक्रह नौसिमुपाल
कौसीसहभामहिरचककाननराधी ॥ २५ ॥ दोहा ॥
सबकेउरसंकाभई ॥ सबकंपेभुवराई ॥ जैजैजैभाष
तइहै जैजैत्रिभुवनराई ॥ २६ ॥ प्रथमतिलकहरिसी
रकस्यो ॥ भफीरिभूपतिकैसीस ॥ विधिसैंसबपह
राईकैकोनेविदाछतीस ॥ २७ ॥ इति श्रीमहाभारते
पुण्योविजयमुक्तावलीकविष्टात्रविरचितायां स
मुपालवधो नाम पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ इ
जोधनभुवराई ॥ नौतिबुलयेइंरूपथ ॥ कर्णसहितमु
षयाई ॥ आदरकानौधर्मसुत ॥ १ ॥ सुंदरमंदिस्वादि
भूलिरहेकोखसकल ॥ जनुअमरावतीआहिआ
षंडलसौधर्मसुत ॥ २ ॥ दोहा ॥ जवभीतरिकौनप
चले ॥ सरवरसोचितचाहि ॥ जानतअमितअगाध
जलपैतहीनीरनाआहि ॥ ३ ॥ बसनउठाएआपन
पधस्योफटिककैताल ॥ गयौगर्वसौसदनलषिभ
योविकलवेहाल ॥ ४ ॥ आगेसरवरकावरी ॥ नारनप
रैलप्राई ॥ जांनिभूमिधोषैपस्यो ॥ जलअगाधमैजग
पदरावजिदीनेंहुते ॥ उज्जलफटिककपाट ॥ तहेमा

मप्रवले कि कैलीनी सोई वाट ॥ ६ ॥ तामारा कु
राज कै लागी चोटली लाट ॥ तब आगे सहदेव कै
नृत्य हि गहाई वाट ॥ ७ ॥ निखी भूपकी इह दशा पंच
बीर मुसीकाई ॥ अरु हसि दुपद सुता गई ॥ रह्यो
नृत्यति नूर गाई ॥ ८ ॥ हिम करहत जैसे नलिन त्यों
भूपति मुख देखि ॥ उत्तराये भीजे वसन आदर कि
ये विशेष ॥ ९ ॥ बैठारे भूपति सभा धर्म पुत्र तिहि का
ल ॥ रच्यो अघारो नृत्य को बोलि गनिन के जाल ॥ १० ॥
आनी अर्जुन जीति कै ॥ उत्तर तें जे वाल ॥ भीम जीती
परवल ईते आइति हि काल ॥ जीतिन कुल सहदेव
बर आनी हीजे नारी ॥ नृत्य हेत आगे नृत्यति ते सब
लई हकारि ॥ १२ ॥ सोरठा ॥ नृत्यत त्रिय वहु भाई उर
पतरप उलथा सहित ॥ उपमा दीजे कोई मानहुं रभा
उर्वसी ॥ १३ ॥ इंदु पुरी सम सो सभा धर्म पुत्र सुराई नृ
त्यत त्रिय जनुं मै निका ॥ तिलोतमा छवि शाय ॥ १४ ॥
चौपई ॥ देखि सभा आये त्यों नार ॥ जेवत घट सभोजन
सार ॥ भांति भांतिके विंजन आने ॥ नाम कहा लगी को
नव धांने ॥ १५ ॥ जीम उठे जव दीने पांन ॥ गए प्रहजव

विज्ञे०
॥७६॥

बुद्धिनिधानं ॥ मरुत्तनिम ॥ पुनमुहाई सवबं
धुन ॥ १६ ॥ पंडसुतनिमों कहमति
कीजें करौ सुदेसनिकारो दीजे ॥ मारत सवविधिमेरो
मांन देसत जै सो करै सयान ॥ ७ ॥ चलिधृत राखुप
भूपैंगये पंडसुतनिवक्रुधा दुषदये ॥ तबजै हैपितु
मोह अंदेस ॥ पांचौबीरनिघृटेदेस ॥ १८ ॥ भीषमउवा
च ॥ जववैसववालकहुते ॥ दीनेदेसनिकारि ॥ अमत
फिरेवनवाधिकनिस्थोसहाईमुरारि ॥ १९ ॥ मननवि
चारोदृष्टा ॥ कारनभलौनयेह ॥ कह्योमानिमेरोउ
नैजीवदानकिनिदेह ॥ २० ॥ योसुनिकैउसरेनृपति
आयेअपनेग्रेह ॥ सकुनिउसासनकरनतहांबोलेस
हितसनेह ॥ २१ ॥ दुष्टचौकरीजुरीतहां ॥ कहैविचारि
विचारि ॥ सोकीजेपांचौअनुज ॥ दीजेदेसनिकारि
२२ ॥ सकुनिउवाच ॥ मंत्रविचार्योएकमेंआपमांनि
मनलेहु ॥ भूपहरावक्रुज्जुमे देसनिकारोदेहु ॥ २३ ॥
जोविरंचिठनकोकरै ॥ इहियलिआनिसहाई ॥ भूप
जातिहौआपवैलहैनकोउदाउ ॥ २४ ॥ दोधकंधु ॥
मंत्रमहीपतिकैमनआनौ ॥ सत्यइहेअपनेउरआनौ

भीषमविद्वत्तहांनिगिलि॥ नहिमयादतहंमिजये
लि॥ २५॥ प्रोणहिआदिसवैचा॥ २६॥ ॥ ॥ ॥
कोंसमगाए॥ २७॥ ऐसोमंत्रकधूप्रतिपारोभूपजुधियि
रभूदेसनिकारो॥ २८॥ **भीषमदोहाउवाच॥** जोलगिउ
नकंभूपसुनित्रिभुवननाथसहाई॥ तोलगिकाहूकी
कधु॥ कैसैहूँनवसाय॥ २९॥ **प्रोणदंडक॥** देखिकेपा
रावोकधूकीजीयेनअनरावो॥ दावोकिनादावोकि
येकैहैमहाहंनिये॥ ऐसोअवबेकाहैकुटेवटे
वटेकीजिहिनेकहूँतौत्रासहरिहूँकोउरआनिये
साजतुहैकाजतकसाई॥ अंतराईकेसेकैहैअपज
सइहनीकेंउरजांनिये॥ बंधुनिसोंकीजेमोहरोहउ
रकोहछाडोकीरतिकलितजातैंभूतलवघांनिये॥ ३०॥
दोहा॥ परप्रोहीरुक्मनघनीतेअंतकबसहोतदी
ततनरकअघोरमेजातेसंघरतगोत॥ ३१॥ सुनिनृपन
हिउत्तरदीयावचनकह्योगरघोर॥ सरसौलाग्यो॥
चित्तमेंचित्त्योंभीषमओर॥ ३२॥ **भीषमदोहा॥** बेल
कपटकोनासजो॥ कैहैमूलविनास॥ वाढैबंधुविरोध
अतिकैहैजगउपहास॥ ३३॥ **छंद॥** विनसैसोईध
र्मजहांपाषंडहिकीजे॥ विनसैसोईप्रातिजहांहंसी

मनदीजे॥ विनसेसोई कथा जौनतामहिमन
नसेसोई नम आपहुल करणी छंडही॥ विनसेसो
धनवेगिही धनहीतै जौनकरहि॥ यत्र सुमतिमा
राचलो कुमति कलह नृपपरिहरहु॥ ३२॥ विनसेसो
ई विप्रजोनषट्कर्महिमाजे॥ विनसैमंदिरवहिनिक्
टगवरिकैराजे॥ विनसेसोई कथा जौनतामहिमन
दीजे॥ विनसेसोई काजजहापर आसाकीजे॥ विन
सेनारी प्रचंड॥ ग्रहसकलकुमतिप्रतिपरिहरो॥ सिष
सीषिभूषभीषमकहै सुनृपतामहिमंडलकरो ३३
विनसैसोई वंधुबुद्धयाजाकै उर आवै॥ विनसेतस
कर वहभेद अपनो जवतावै॥ विनसेसोई नेहक
पटउं ग्रहउरमै धरिछै॥ विनसैद्विजसेवाकरतडु
॥ विनसैसरितानिकट॥ इहिभांतिभीषससीष
भीषमकहै समग्रहु भूपति आपघठ ३४॥ दो
तजौ जूपकी वांनसव॥ प्रलसबेटे संसार कै
इकलहकुटंबमै च रचीराखीकरतार॥ ३५॥ धर्मपु
नको भूपयों आयुसदेहुवलाय॥ बचननमेटै रावरो
ठिकाननको जाय ३६॥ भूभीषमकै यौवचन

मुनि॥ भूपतिगये॥ आपुवरा॥ अनुज
राव॥ हितुकैं॥ अपनिपास॥ ४१॥ पाई॥ जाई॥ सुसकु
नितव॥ रचोकपटके॥ ४२॥ निरषकरनराविपु
त्रकौ॥ योवोत्योभूवपैल॥ ४३॥ आनहुं॥ वोलिजु
धिष्टि॥ योवोत्योसुषपाई॥ कपटजूपमैलेषिकै
लेहै॥ ताहिहराय॥ ४४॥ कर्नगयो॥ चलिइं॥ प्रपथक
ह्योभूपसौ॥ जाई॥ वोलतषेलनजुपको॥ दुरजोधन
सुषपाई॥ ४५॥ चलेभूपइ॥ हवातमुनिभीमसेन
सुधिपाई॥ जाहुहस्तनापुरनही॥ कहीनृपतिसौं
जाई॥ ४६॥ राजासुधियरउवाच॥ चौपाई॥ जुवाहु
धकौं॥ शत्रीभागै॥ ताकुमहाअपजसमुवलगे॥ क
ह्योभीमकौ॥ कसौनकाम॥ चलोभूपतववुधिनि
धान॥ ४७॥ चलेअनुजसंग॥ कसिकरिवार॥ चलीइ
पदीलिये॥ भंडार॥ साहनलै॥ परिघहि॥ सिंधार॥ नगर
हस्तनापुर॥ चलिआये॥ ४८॥ कोसरक॥ आगै॥ कैलि
ये॥ आदरभाव॥ अमतिगति॥ कीये॥ हितुकैं॥ लियेस
भामहि॥ आई॥ निरषतविदुरमहासुषपाई॥ तवआ
रंभूपको॥ कीनों॥ वोलिसकुनि॥ रूसासनलीनों॥

विज्ञे०

॥ ७८ ॥

भीषमविदुरभावयहजामैं॥ कपटघेलअपनेअरआं
ज्यां॥ ४४॥ भूपजुधिष्टिरकौंतवदेखि॥ दादिरदनकरज
विसेषि॥ चक्रतभयेचहुंघांतकैं॥ भूपतिउरकष्ट
कहिनहिसकैं॥ ४५॥ कपटघेलकौकीयैविचारको
रवजीत्योंसबभंडार॥ राजपाटआपनपौहास्यों विल
बदनभएबंधवआस्यों॥ ४६॥ फूल्योदुरजोधनभवरार
लीयोहसासननिकटबुलाई॥ तुरतजाहनहिलागैव
र॥ ल्याबोशेपदीसभामजार॥ ४७॥ इतनीवातकहतउठि
धायो॥ तुरतदुपदतनयाटिगआयो॥ अजुगतवातआ
यकैंभाषी॥ ताकीनैंकनकाननराषी॥ ४८॥ इसासन
उवाच॥ दो॥ जीत्योंकोरवनूपमेंपरिजुधिष्टिरहारि
तूदुरजोधनमनवसीचलिमेरैसंगनारि॥ ४९॥ जोपद
उवाच॥ दंडक॥ सत्तधर्मपुत्रकैंअसतकहुंदेखियेनजा
केंसिततेजछलिछोरत्योंमटतिहै॥ तामैंअधर्मतत्कोह
भाषतहैहसासनकीरतितसति॥ अपकीरतिवढतिहै
करकीकरंजदाविदंतनमेवारिवारिमीडिमीडिहाथ
अैसेशेपदीरटतिहै॥ मातकेसमानजेठेबंधुकीवधुसों
अवअैसीक्योंअैनैंसीतेरेमुघतैकाठतिहै॥ ५०॥ दोहा

हूसासनफिरितहांगयो॥ कह्योनृपतिसोंनाई॥ ५
 पदसुताकरिद्विनयवज्ज॥ रहीयेहभुवराई॥ ५१॥ ५
 रमोधन॥ हूसासनजियमारिहोंल्याउशेपदीवा
 ल॥ पकरिकेसनहिकांनिकरि॥ आनिं सभाउत्ताल
 ५२॥ जायगाहेकरकेसतहै कीनीकछूनकांने स
 भामाऊअपनीकरी॥ आईमननगिलानि॥ ५३॥ ५
 रमोधनवाक्य॥ बैठित्रियामोद्धंजंघपरमनमाना
 तुवनारी॥ मैतुमहितसवरीतजी निजतरुनी सुष
 कारी॥ ५४॥ ५४॥ पापीबोलन दुष्टता॥ कहैअ
 ब्रूतवैन॥ राजपाटमिटिजायगोइहिगुनकछू
 रहेन॥ ५५॥ मूकीभूपतितवयौकहीलेहुहुकुलउ
 तारि॥ सुनिहूसासनमोनिकतअबैनगावहु
 नारि॥ ५६॥ ५६॥ हूसासनकरपकस्योचीर
 भीमसेनथरहस्योसरीर॥ कहाजुधिद्विरसौअ
 कुलाई॥ आयुमुदैत्रियलैजमिताय॥ ५७॥ राजा
 उत्तरकछुनदीनों॥ तवउद्दिमहूसासनकीनौं
 बालीसुमरेअकुलाई॥ दीनबंधुकी॥ तकरौसहा
 य॥ ५८॥ शेषदा॥ दंडक॥ जिनकीपतिनिनिनपती

विजे

॥७९॥

नकी ॥ तुम्हें पति षोवत पतित पति गति कै कसा
ईकी ॥ रानी अकुलाय कही फाटि हून जाय मही
कैसें जाति सही हूय हू सासन दाईकी ॥ कीनी कए
कांनि नही प्रेण नै गिलानि करी तजी पहि चानि व
निभीषम भलाईकी ॥ जैसैं पहलाद काज की नै ह
इलाज सौं ही की जे महाराज आज लाज सरनाईकी
पर ॥ **सवेया** ॥ काहू की बार सह्यौ गिरिभार सुका
झुकी बार अंगार चवाए ॥ काहू की बार विदारि अ
देव सुका झुकी बार पयादि ही धार ॥ काहू की बा
र कौं पाइन फारि कै देन संघ के रूप हि आए ॥ दा
न के नाथ कहाय कै वैगुन धार हमारी कहां विस
राये ॥ **दंडक** ॥ मेटि कुल कांनि मां नौं जांनि पह
चानि नही प्रोप दी सभो में आनी गह्यौ प्रेर चीर कौं
रानी अकुलाय कही ॥ फाटि हून जाय मही ॥ हंजी
ये सदाय धस्यो ध्यान न डूबी रकौं ॥ दीन नि की लाज
राखी जे महाराज आप और काहू का सौं कोउ
र कौं न पीर कौं ॥ जोर साथ हू सासन हाथ थके पा

घरसे धूयोनही क्यों हूं पट रंचक सरीर को ६
 १ साहस सहित बलवाह सिक्किाई गये भीष
 म समेत कोऊ को लान तट को ॥ बाल से विसा
 ल काल दंड तै कर हवा झु अचि अचि था कौ व
 रह सासन भट को ॥ आसाष्टा डिपति की निरा।
 सवामटे स्यो हरि करुण निधान सख सुमोदी न
 रट को ॥ देहतै वढौ है पट कोटिन मढौ है धत्र
 प्रोपदी हू कल सौ जै सौ सुत नट को ॥ ६२ ॥ भीम
 सेन भीर थत जी पारथ हूं पीर तजी धीर सजी धर्म
 पुत्र सत मै दिठाय कै ॥ भीष म हूं वानित जी प्रोण
 पहि चानित जी करण तजी कानी रहे विदुर वरा
 य कै ॥ बुद्धि कुराज तजी ॥ हू सासन लाज तजी अ
 ची अचि हास्यौ पट घरोई ष स्याय कै ॥ वारन ल
 गाय करी प्रोपदी की भई तहां सां करै सहाय ज
 डुराय भयो आय कै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ अचि अचि
 हास्यौ पट हि हू सासन अकुलाई ॥ थाकिर ह्यो
 करि वरघनौ रही सभा अरगाई ॥ ६४ ॥ मारि डारो

६४ ॥

विजे०
८०

रनमैनिकारिडारोंगर्वसर्वसर्वमूलतैंउधारिडारों
वाऊहसासनके॥ तोरिडारोंजानुजंघडुष्टुरजोष
नकेतनकतनककौरोंडुष्टनकेतनके॥ चाहिमप
नृपजुधिष्टिरकोभीमकहे॥ आयुसुजोदेहसबै
सारोकाजमनके॥ हमहिअश्रतषलचीराह्यो
प्रोपदीकोधर्मकतहियेमांनजैसैघायघनके॥ ६४
॥ दोहा ॥ उपदमुताकोइनगह्योजिहिकरडुष्टकू
ल॥ होबरवाहुउधारिहोंतेईभुजासमूल॥ ६४ ॥
उपदमुताहिहाईहोंताकेरुधिरमजार॥ भीमपेज
बोलीमहाइहविधिवारंबार॥ ६५ ॥ भीषमउवाच॥
सांचो जायेअंधकेअश्रितप्रगनजेअंध॥ चलैकहा
देएककीअैसेईसबअंध॥ ६७ ॥ महिमाकरुणा
सिंधुकीदेष्टतहैषलनेन॥ भएलटपटेमूठभुजअ
चतप्रटनिवरै॥ ६८ ॥ स्नापदेयत्रियक्रोधकरिस
भामसमकैजाई॥ होंनीहैसोक्योमिटै॥ देषिदेषिय
छिताई॥ ६९ ॥ सुनिसकलधृतराष्ट्रहृततछिनहि
अकुलाई॥ धर्मपुत्रजुतप्रोपदीलीयेनिकेतबुलाई
६९ ॥ समाधानसंतोषकरिदीमेंग्रेहपठाई॥ पऊचै॥

त्रियजुतइंद्रपथपां चौबंधवआई ७९ ॥ ५॥ श्रीम
हामारतेपुराणे विजयमुक्तावली कविष्ठत्रविचि
तायांशोपदी अक्षयद्रूपवर्णनं नाम षोडशोऽध्या
यः ॥ १ ॥ चौपद ॥ इरजोधनसबअनुजबुलाईति
नसोंकहीवातअकुलाय कहाहमारेजीतैंहोई वर
वैसुषविलसतहैंसबकोई ऐसौमंत्रकछुअब
काजे इनकोसुषसंपतिसवछीजे पांचौंअनुज
निदेसनिकासि तवकैहैसुषकीबज्रासि २ पठ
योकर्णइंद्रपथगयो खेलनजूपसंदेसोदयो चल
नजुधिष्टिरभूपतिकह्यो न्योतिपठयोजायनर
ह्यो ३ खेलकपटकोवैसवजांनि कह्योभीमको
चित्तनआनैं चलिक्कैनृपतिपुंजेजाय आद
स्कीनोंकौंखराय ४ खेलजूपकोतवतिनठान्यो
कपटमहाअपनेचितआन्यों अबैकीजियेवच
नदिठाउ फिरिपाछैनहोईकलहाउ ५ तवति
नलीनेबचनदिठाइजोहारैवनवासैंजांई वाचा
बंधउज्जमिलिकीनों जूपखेलमेंतवमनदानों

जे०

८१

६॥ हास्यो राज जुधिष्ठिर रूप ॥ हास्यो साहन पाट अन्त
प ॥ हास्यो देस सहित भंडार ॥ हास्यो गज बाजिन को दार ॥
प्रफुलित कै उर जो धन कही ॥ राज पाट सब दारी मही
बारह वरष जाईवन होय ॥ गिरिगघ्र के सब दुष सहो
८॥ दोहा ॥ वरष तेरही जाउ डुरि जो हम लेहि निहारि
फिरि कै द्वादश वर्ष को दै है तुमै नि कारि ॥ १॥ **मीम**
न उवाच ॥ कपट रूप इन घेलि कै कांन नदि नौं वास
पाई राजाई सुहों करौं कौरव कुल को नास ॥ १० ॥ नृप ता
लहु छु डाय कै ॥ कौराज भवई स ॥ कौर स कल जगव
द नाधरौ छत्र कि न सीस ॥ ११ ॥ **राजोवाच ॥** नल दम
यंती की कथा भूप कही सम जाय ॥ द्वादश वरष विप
नाहि राज करैगे आई ॥ १२ ॥ **अर्जुन उवाच ॥** मो कु
आयु स देह जो राज छीन सब लेहु ॥ सकल परेषौ जा
य मिटि ॥ नृप ता विप्र नि देहु ॥ १३ ॥ मिटै परेषौ नीत
को डु जै कै है धर्म ॥ आयु मुदै है कृपाल कै ॥ इहै करौ
मैं कर्म ॥ १४ ॥ **राजोवाच ॥** छप ॥ धनि धनि नुव पा
ए ॥ घंड घंड न ज सकी नों ॥ धनि धनि भुज दंड क

सौ सुरपतिवल हीनों॥ धनिधनितुवपा
निकोपि धन करत जुक्त सर॥ धनिधनुर्धर
धीरदीयो विधनां तो कौं वर॥ कविश्रत्रुनकी
जियेरो समन तुव सरवर कहिको करहि॥ सं
कतदसदिगपालधर सुशरथरथरथरहर
हि॥ १५॥ दाहा॥ विप्रनको इह दान नहि दे
हु पश्य वलिवंड॥ बारह वर प्रवातीतिकें।
करि है राज अघंड॥ १६॥ सहदेव ठवाच॥ ह
तौ अंध सुत अनुज सब॥ इस्मे रै जीय आज
प्राप वचन प्रतिपारिये वनहि चले महारा
ज॥ १७॥ राजसिंघासन प्रवधन साहन अरु
नंडार॥ रघवारों के राषी हों कीजे इहै वीचा
र॥ १८॥ विपन दुषी जीन होऊ नृप मो सो से
वक पाई॥ अन्न अन्न जुत भक्षण निदेहु वन
पहुंचाय॥ १९॥ राजा वाच॥ तेरो पोरष मे स
ब जांनों॥ अतिसुरंतन कहावमानों॥ येनि
जवचन हमारो मानि फेरि राज करि हे हम

विज्ञे०

॥ ८२ ॥

आनि ॥ २० ॥ नकुलपरजस्योयोंहठिभाषे
कौरवमारैकोअबरावै ॥ आग्यादेहुभूमि
भरतार ॥ हतौअनुजसवलगेनवार २१
हारीपडुमिसुनीचैधरौ ॥ तरकीधरतीउपर
करो ॥ तापरवैठिराजनृपकीजेसकलअ
रिनउपरपगदीजे ॥ २२ ॥ दोहा ॥ नकुलनि
वाख्योनृपतितब ॥ योकहिवारंवार ॥ तोसो
वलीनऔरभुवजान्योसवसंसार ॥ २३ ॥ ग।
हिठोडीनरनाथतव ॥ लघुबंधवसमजाय
तवैइंद्रपथधांममै ॥ पडुत्तेसवजनआय
२४ ॥ दोहा ॥ तेरहवरषवियनिवसि ॥ फेरि
आयहेधांम ॥ क्रोधनहीमनमैकरो ॥ मन
सावाचाकाम ॥ २५ ॥ इति श्रीमहाभारतेपुत
लेविजयमुक्तावलीकविअत्रविरचितायां
राजाज्ञधिधिरुड्योधनज्ञपवर्ननंनामसप्त
दशोऽध्याय ॥ २७ ॥ सभापर्वसमाप्त ॥ अथवन
पर्ववर्णनं ॥ गीतिका ॥ राजचिह्नतोगेमुधि।

स्थिरभूपतववनकौंचले ॥ चतुरभ्रातासंग।
लानैहुतेसुरभलेभले ॥ मातुराषीविडुरकैग्रह
हेतवहुविधिजानिकै ॥ राषीसुभद्रापुत्रजुत
पुरधारिकामहिआनिकै ॥ १ ॥ प्रोपदीकेपंच
सुतनृपदुपदठिगतेराषियो ॥ पंचबंधवदुपद
तनयासहितवनअभिलाषियो ॥ छत्रपाट
धरेसिंहासनसअमेसुषपायकै ॥ २ ॥ चलत
हीयेकअसुरमारगविपनकौंतवरोकियो वि
विकटघटअतिरदनदीरघभिमसेनविलोकि
यो ॥ गदाजुघहिष्ठाडिकैवलवंतरथतजिधा
यकै ॥ मध्वजुघकीयोवलीवक्रदुष्टअंकह
लायकै ॥ ३ ॥ भूमिमारिसंधारिराक्षसविपन
कौंतवपगधर्यो ॥ लष्योवनअतिसघनदुम्व
हुभांतिकैवहुफलफर्यो ॥ ललितललितल
वंगलतिकाकलितकरनौंसोहिये ॥ वेलिवेली
वक्रचमेलीजुहिजुतमनमोहिये ॥ ४ ॥ छयेसो

विज्ञे

८३

सोहततरवरतालकेरि करण अमृतफल सो
हति कुंजनि सुक्त किते सरवरजल निर्मल सो
हतनि ऊर ऊरत सुथ सथल सलित प्रसंडित
सोहतलतिका फूल भवर पुंजनि सुषमंडित सी
तलमंद सुगंधी प्रतिवहत पवन प्रति सुषद
गति ॥ कविश्चरम्प अवनी सुथल सुनिरघत
होत प्रसन्नमति ॥ ५ ॥ भुंग प्रयात छंद ॥ तहां आ
पही कौ कुटी भूप कोनी ॥ विलोकी वनी ताथ
ली की नवीनी ॥ कहुं काल के वृक्ष फूल फले हैं
तहां को किला आदि पंछी भले है ॥ तपी विप्र के
तहां चित्त मोहें ॥ मनौ देव देवे सलो के स मोहें
मदूरी चहों आरतै नृत्य साजें ॥ कहूं हंस नीहं
सनी के विराजें ॥ ७ ॥ दोहा ॥ तपती मरकट देषी
रीषिकी ने नृपति प्रनांम ॥ भांति भांति करि वंद
मां ॥ कही नृपति गुन ग्राम ॥ ८ ॥ मो कह होहु प्र
सन्न रीषि ॥ देख कछु उपदेस ॥ दीनों सरजमंत्र
तव ॥ सुनि सख भयो नरेस ॥ ९ ॥ जाय्यो भूपति नर

तही प्राट भयो भुवभांन ॥ कही भूपसों मंत्र
 कौ सुनिजे सकल विधान ॥ १७ ॥ प्रात नाय के
 भूपतुम जपियो मंत्र कित ॥ षट्सभोजन द्यो
 सप्रति ॥ पशुचाकृतो हित ॥ १८ ॥ इह विधि दिन
 प्रति भोजन पावहि ॥ आपन जै वैरिषिन जिमां
 वैहि ॥ रिषिसव भूपतिकों समजा वैहि तिह
 वनवासितन कसु दुष पावहि ॥ १९ ॥ करि दुष्टता
 जय द्य आयो ॥ हरन दुष्टतनया कों धायो स
 कौ न नैक दुष्ट कों कां धि ॥ लोनो भीम सेन सौ
 बांधि ॥ २० ॥ भीम सेन उवाच ॥ अणामोहि एसा
 ई दीजे ॥ बांधि दुष्ट अवही मारीजे ॥ भूपतिका
 है न अैं सो कीजे ॥ बांधि मारिये अपज सलीजे
 १४ ॥ पाई रजाई सुसो मुकरायो ॥ लजित पलुच
 लिकें ग्रह आयो ॥ करीत पस्या सीव की जाई के
 तीवर पै तन मन लाई ॥ १५ ॥ दोहा ॥ वज्र दिन वी
 ते करत तप भयो महे स उदार ॥ मांगितो कों द
 यो सोई वर सुषसार ॥ १६ ॥ जय द्य उवाच ॥ भीम

मांगी नुर

विज्ञे

८३

सोहततरवरतालकेरि करण अमृतफल सो
हति कुंजनि सुक किते सरवरजल निर्मल सो
हत निरु ररत सुथ मथल सलित अषंडित
सोहतलतिका फूल भवर पुंजनि सुषमंडित सा
तलमंद सुगंधी प्रतिवहत पवन अति सुषद
गति ॥ कवि अरम्य अवनी सुथल सुनिरघत
होत प्रसन्न मति ॥ ५ ॥ **मुंग प्रयात्र छंद** ॥ तहां अ
पही को कुटी भूप कोनी ॥ विलोकी वनी ताथ
ली की नवीनी ॥ कहुं काल के प्रथ फूले फले हैं
तहां को किला आदि पंछी भले है ॥ तपी विप्र के
तहां चित्त मो हैं ॥ मनौ देव देवे सलो के स मो हैं
मयूरी चहों और तै नृत्य साजें ॥ कहूं हं सनी हं
सनी के विराजें ॥ ७ ॥ **दोहा** ॥ तपती मरकट देषी
रीषिको ने नृत्यति प्रनांम ॥ भांति भांति करि वंद
मां ॥ कही नृत्यति गुन ग्राम ॥ ८ ॥ मो कह होहु प्र
सन्न रीषि ॥ देह कछु उपदेस ॥ दीनों सरजमंत्र
तव ॥ सुनि सख भयौ नरेस ॥ २ ॥ **जायो भूपति तुर**

तही प्रगाट भयो भुवभांन ॥ कही भूपसों मंत्र
 को सुनिजे सकल विधान ॥ १७ ॥ प्रात नाय के
 भूपतुम जपियो मंत्र हित ॥ घटर सभोजन द्यो
 स प्रति ॥ महु चाहु तो हित ॥ १८ ॥ इह विधि दिन
 प्रति भोजन पावहि ॥ आपन जै वैरिषिन जिमां
 वेहि ॥ रिषिसव भूपतिकों समजा वैहि तिह
 वन वसित न कसु दुष पावहि ॥ १९ ॥ करि दुष्टा
 जय द्यो आयो ॥ हरन दुपदत नया कों धायो स
 को न नैक जुव कों कां धि ॥ लीनो भीम सेन सौ
 बां धि ॥ २० ॥ भीम सेन उवाच ॥ अणामोहि पुसा
 ई दीजे ॥ बां धि दुष्ट अवही मारीजे ॥ भूपतिका
 हेन अैं सौ कीजे ॥ बां धि मारिये अपज सलीजे
 ॥ २१ ॥ पाई रजाई सुसो मुकरायो ॥ लजित बलु च
 लिकैं ग्रह आयो ॥ करीत पस्या सीव की जाई के
 तीवर घेत न मन लाई ॥ २२ ॥ दोहा ॥ वहु दिन वी
 ते करत तप भयो मेहे स उदार ॥ मांगितो कों द
 यो सोई वर सुख सार ॥ २३ ॥ जय द्यो उवाच ॥ भीम

मांगी नुर

वि०

॥८४॥

धनं जय धर्म सुत सहदेवनकुलकुमार मीचल
है मोहाय ते इह इष्ट्या मो सार ॥ १७ ॥ श्रीशिव
॥ विष्णु भक्त वै पंचजन ॥ तिन सों कहाव सार्
एक द्योस वै पंड सुत जीति जय इष्ट जाई ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ तव ही जय इष्ट इह वर पायो ॥ चलि कै डुर जो
धन द्या आयो ॥ आय परा जय सक प्रनु सारी
तव मै शिव की सेवा करी ॥ एक द्योस शिव दीनों
मोहि ॥ जीति जाय में दानों तोहि ॥ सुनि कै डुर जो
धन बहु लाज्यों ॥ दुष्प भयो मन आनद भाज्यों ॥ २० ॥
॥ दोहा ॥ धर्म धुरंधर धर्म सुत विरह तवन मह जा
नि ॥ भेट्यो चाहत पुत्र कों धर्म राज सुषदां नि ॥ २१ ॥
लहै प्रकै लो पुत्र नही तव दान व व पु सजि सि
र अका स पग धर नि सों ॥ दो ॥ पिउ द्यो गल गा
जि ॥ २२ ॥ उ पै लै गयो नृपति कों वांन धनं जय ता
नि ॥ घालत नहि ता दुष्ट कों कांनि भूप उर मां नि ॥ २३ ॥
सिंघना दलौ भीमत है ॥ गर्ज उ द्यो किल कारि ॥ मि
स्यो असुर भुव आय कें ॥ ज्यों मरह त्यो मुरारि ॥ २४ ॥

॥ सोरठा ॥ कस्योयासरिषिराई ॥ अर्जुनसोउप
देसतव ॥ सेयोईश्वरजाईमनवचकायकेनेम
सों ॥ २४ ॥ दोहा ॥ रुद्रवांनलहिरुद्रपैंकहैपथ्य
सत्यभाउ ॥ त्रिभुवनसाईकस्त्रियाअमरपुरी
दरसाउ ॥ २५ ॥ तवईश्वरआज्ञादईकुसुम
विमानचढाय ॥ दरसायोसवअमरपुरमेयो
तहांसुराई ॥ २६ ॥ चित्रसेनागंधर्वसोंप्रीतिब
ढीबहुभाई ॥ नित्यकलातिनिअर्जुनैविद्या
दईसीखाई ॥ २७ ॥ पथ्यरिगयोइंदवकुसातौ
सुरतवगाई ॥ नित्यकस्योसुरतरुनितववाज
नविदितवजाई ॥ २८ ॥ तोटका ॥ अर्जुनकीबहु
धाहरषीमति ॥ तासहदेवप्रसन्नभयोअति
ईश्वरकोसवधांमदिषावत ॥ देषतपथ्यमा
हासुषपावत ॥ ३० ॥ विष्णुपुरीअवलोकिसबै
तहां ॥ देषहजायविरंचिपुरीतहां ॥ इंदुपुरीमहि
मंदिराजत ॥ सुंदररूपनिजुक्तविराजत ॥ ३१ ॥
वेया ॥ सुंदरमंदरिकंचनेसमनिनीलकंठरनि
सोंधविष्टार ॥ लालमनोहरमांनिकजालष

विज्ञे०
॥८५॥

चेसितयंभविचित्रसुहाए॥ विदुममुक्तअमोलिक
सोंप्रतिहारनिवंदस्वारवनाये॥ सूरप्रभासिआभा
कविष्टत्रविलोकि कैपथ्यहियेसुषपाए॥ ३२॥ दो
पई॥ कहिगंधर्वप्रचभोयेह॥ काहेतेंसुनौइहग्रेह
कि। हइहमंदिरस्योवनाई॥ किहिहततज्योसुक
हिसमजाई॥ ३३॥ चित्रगंधर्वउवाच॥ तालवर्ण
दांनवइहनांम॥ तिहिमुखेजीत्योसंग्राम वाके
त्रासधांमइहतज्यो॥ आखंडलहज्योयहसज्यो ३४
सुनिकैपथ्यहिचिंताभई॥ सहसनैनपेअज्ञाल
ई॥ कीनोरनदानवसोंजाई॥ वहरनजुस्योघोरद
लल्योई॥ ३५॥ दोहा॥ कहौकहांलगीजुधकोंवा
ढेकथाअपार॥ तालवरणकासवचमूमारतल
गिनवार॥ ३६॥ छप्पे करतअमितगतिजुधकर
तदानववरजांन्यो॥ इंदुपुत्राशिववांनकोंपिकैं।
तवसंधान्यो॥ रुंडमुंडकटिवाहुजानुजंघाकरदुटे
एकहिवाननदानसर्वसेनावललरुटे॥ भयभीत
सेषहतअसुरसव॥ तजिततिरनवनडुविगए॥ ज
यजुधपथ्यकरिवाहवरसुतनमनआनंदउगए

३१ ॥ इन्द्रि सुवसवसाधकै सुचितेकरतहि
धाम ॥ लहि अग्रा आयोपहु मितीति असुर
संग्राम ॥ ३८ ॥ दोषक ॥ आ यजुधिषिरकेपग
बंदे ॥ बंधवसकल मुनत आनंदे ॥ तो सो तु
ही काहि सी रदीजे ॥ सुरनर कौन वरावर कीजे
३९ ॥ इति श्री ॥ ॥ ॥ अर्जुन विजय तालवर्णवध
नाम अष्टादशो ॥ १७ ॥ नराज ॥ तबै नरे सधर्मप
त्र संगबंधुलै भले ॥ निकेत नारी प्रोय दी महा अ
रुमै चले ॥ लखेत हां अनेक पुष्प स्वर्ण वर्ण
दक्षिकै ॥ सबै सुगंध फूल में न बान्है विसे धिके
४० ॥ उषय प्रोय दी लिये सराहि ताहियो कहै ॥ म
गाई देई भीमसेन पुष्प राज हां लहै ॥ उजयपौ
नइ हां परे कहा मुनारि पाईये ॥ न जानिये दिसा
सु कौन कौन देस धाईरा ॥ ४१ ॥ प्रोय दी ॥ विलोकि
दह आपनी विचारितु न को को कहै ॥ विना अने
क जत्न तै न सर को डियो लहै ॥ कहा प्रसून देत तै
विचारि चित्त में कियो ॥ न देह मोहि औ निसौक

श्री॥

विजै०

॥६६॥

के रहे महाहियो॥३॥ दोहा॥ गदलई तव भीमक
र॥ जे दोले अकुलाई॥ उत्तरदिसि गिरकी द
रनि॥ काननयो हों चो जाय॥४॥ बेठिबार गीरी
सी घर पर॥ उठनौ महागल गाति॥ पाव सघन गर
ज्यो मनौ॥ चले सिंध मनौ भाजि॥५॥ गिरिग क्रम
सघन डुमट्टे गुहा पहार॥ सुनत नाद हनु मंत तव
आय गयो तिहि बार॥६॥ कियो वृद्ध कपि रूप
तिन पस्यो बाट विच आई॥ अवलोक्यो सो भीम
तव सकैन बाट छुड़ाई॥७॥ तारी दे दे भीम उरावै
जानर के मन कथुन आवै॥ मूकि मूकि कै कूहति
नल लकास्यो॥ छुटै न मार गप चिप चिहास्यो॥८॥
मउवाच॥ मार गछा डिकहत हों तोही॥ नाथ तज
वहिल ज्या मोहि॥ मेरे वचन पस्यो जोरै है॥ अपनौ
कियो आपु ही पेहै॥९॥ मरकट उवाच॥ हों अस
तव डुभांति न हास्यो॥ तुम समरथ इत उत गहि
सौ॥ भीम सेन वर करि करिहास्यो॥ मरकट तटै न को
हुटास्यो॥१०॥ तवतिन वडु विधि अस्तु तिहांसो॥ सत्य

कहौ तुमको होभाई ॥ असुरसुरेसक गंधर्वकोई
साचीचातकहौ तुमसोई ॥ ११ ॥ गर्वहमारावहुवि
धिभाग्यौ ॥ दादोरिभीमतवचरननलाग्यौ ॥ अब
जिनिकपटहियेमेराय्यौ ॥ अपतेभेदसकलविधि
भाय्यौ ॥ १२ ॥ **हनवंतउवाच ॥** हनूमानहैमैरोनांम
वहैसुपुजर्जुतुवमनकाम ॥ सुबनतहिभीमठग्यौ
अकुलाई ॥ चरनकमलतिनवंदेजाय ॥ १३ ॥ **दोहा ॥**
क्षलिगर्वमेंमनकसौछमियोसोअपराध ॥ सदा
चुकजाकीछमुजोजनसाधअसाध ॥ १४ ॥ लीनी
तंकारूपजिहिं ॥ सोवपुदैदरसाय ॥ कहौजुधिषि
रभूपसौंनिजकैमनपतिपाय ॥ १५ ॥ मूंदतआंखेभी
मकैकीनौरूपकराल ॥ पगधरतीआकाससिर
निरघतभीमवृक्षाल ॥ १६ ॥ **भीमदोहा ॥** देखिसकौं
इहवपुनही ॥ विकलहोतममदेह ॥ तातेंदरसावो
वहनिजसरिरकरिनेह ॥ १७ ॥ निजमुरतिहनुमंत
करिदरसाईसोवाट ॥ पठ्यौहितुकरिकेंतहांहु
तेकम ॥ जिहिघाट ॥ १८ ॥ **भीमसेनउवाच ॥** उरजो

पोहीचैपुहैधन

वि०

॥८७॥

धनकरिइष्टतालीनेजुपहगई॥ वादशवरपैवन
लेआई॥ १८॥ दोधक॥ जुधमहाउनसोंअवकै
है॥ जीतहिसोधरनीसवपैहै॥ आपकपाक
रिकैचलिआयो॥ बेठिधुजागलगजिसुनायो
२०॥ होईसहाइकछांहहीकीजे॥ तोवरजीति
सवैभरलीजे॥ बैनसुनैंहितुवंतजवैअ॥ बाह
दईहनुवंततवैअ॥ २१॥ नाईचल्योसिरसो
सिरदेख्यो॥ उल्लिमकुंजनिजुक्तविशेष्यो॥ गंध
वरत्तकदेपिधनेज॥ योतिनसोतवभीमभनै
अ॥ २२॥ दोहा॥ अणादेहुकपालकैलहोप्र
स्तननिधाई॥ मुकीगंधर्वकहीइहैतुकिनि
योजाय॥ २३॥ बरवटसरवरपैठिकैलानोवा
डावांधि॥ रत्तकदौरधनकगहि॥ तीछनवांन
नसांधि॥ २४॥ कमलफूलदुमतरधरे॥ सिरतैत
बैउतारि॥ कोपिगदासौरकअंग॥ गयोकरोरि
कमारि॥ २५॥ मुदगरफरसासक्तिसर॥ भागेकिं
नरअरि॥ आनिकमलदीनेसकल॥ प्रियपांनि

सुषकारि॥२६॥**युधिष्ठिर उवाच॥** तोसों जरै न जुह
में किं नर जष्टिक कोई तोही ते मन का भना सब वि
विधि सरन होई॥२७॥**तोटक॥** जबही वज्र द्यो सबी
तीत भए॥ बन मांह अषेटक भीम गए॥ फन दीरघ प
न गए कल स्यो॥ तिहि दोरित बैपाग आयग स्यो २८
दोधक॥ भीम वली न छुडावत धूट्यो॥ हारि रस्यो व
ल दीर्घ दूट्यो॥ मारि गदा अहि कै शिर तो स्यो ताक
हे ने कस क्यौ न अंग मो स्यो॥२९॥ बीति गए दस वास
र ताही॥ बाटत हां लगी भूपति चाही॥ बंधु नि सों मिलि
कां न न देख्यो॥ सर्प ग्रस्यो तब भीम विशेष्यो॥३०॥ अ
र्जुन सों अहि वान न मा स्यो॥ दोरि सह देव वर्ग प्रहा
स्यो भूप कहै कत पन्नग मा स्यो॥ देव नि कौ अवता
र विचा स्यो॥३१॥**वैयर्थ॥** नाग घोष नृप कों संताप
सर्प भयो सुनि विप्र नीश्राप॥ तो सो जंतु आय है कोई
ता ते याहि प्रहार न होई॥३२॥ भीम से न करि कूरि ब
रहा स्यो॥ सो कत मरतु म्यो रौ मा स्यो॥ की नौ पन्नग जे
जे कार॥ जान्यो भूप धर्म अवतार॥३३॥**दोहा॥** तुव
पु रषा ऊं भूप सुनि नाग घोष मो नांम॥ विप्र दोष डर

बि जे०

॥ ८८ ॥

गतिभई॥ भयौ सर्प गुन ग्राम॥ ३४॥ अपनी नृपता मे मह
इह कानों अपराध॥ ली नौ इव सब विप्रनि कौ दी नौ
दंड अगाध॥ ३५॥ मो कह दी नौ आपति न पायौ इह अ
वतार॥ तव विनियो कर जो रिकै कै या उ सुष सार ३६
कही दिजन जव पदुमि में॥ होई धर्म अवतार जब
लगी हो सुभ गति नृपति॥ ताहि परसिति हिं बार॥ चौ
पाई॥ छुवत जुधि छिर मिटि गयो दोष॥ पायौ नाग घो
ष नृप मोष॥ छाडि भीम भयौ अंतर ध्यान॥ आये कं
धवनि ज अस्थान॥ ३७॥ सब ही के मन आनंद भयो
सोक सोप दी उर कौ गयो॥ पंड पुत्र वन में व्यौ परहि
बन फल पाई अहे रौ करही॥ ३८॥ इति श्री॥ नाग
बोध मोक्ष वर्णन नाम एकौ नविं शोऽध्यायः॥ १८॥
दाहा॥ इर जो धन वैठ्यौ सभा बंधनिसौ सुष पाई॥ पंड
पुत्र पाचौ तवै हिय राषट्कै आय॥ १॥ करण दुसास
न सकुनित व बोलि लीयो सुष पाई॥ मो मन पाई सो
करी॥ और न कछु उपाई॥ सवैया॥ ब्रह्म हो सब ही
इर जो धन बुद्धि उठी इह मो उर हातें॥ सुखिल है न पि

तामहभीषम जायजुधिष्टिरभूपहिजाहै॥लैहि
तेयेसवदेसभंडार सबैधन आयलय औधिवित्तितै
साजिवलैचतुरंगचमूसबबंधहिजातैकुंजकुटीतै
३॥दीहा॥मांनिरजासुसीसतिनि साजेदलचतुरंग
चलेभूपकरिदुष्टता॥कैर्णदुसासनसंग॥४॥गिरि
गकरमगदेषकरिलष्येघोरवनजाई॥चित्रसेन
गंधर्वतवरोषितयज्ञच्यौआय॥५॥बांधेविधिकी
प्रासिसौंदरजोधनभुवपाल॥मनवचकमेवकुंज
नटपकीनौकोपकराल॥६॥गंधर्व॥सुंदरा॥क
रनमहीपतिकोपकस्यौवर पुरिलयोवरवाननि
अंबर॥गंधर्ववोलिउठ्योतिनसौंहसि कौनघू
डावहिभूपलीयोअसी॥७॥देवनसुरनत्कतर
ठांनहि॥मांनवजुधनहीउरआनहि॥गाततक
र्णसुवांननघंडन॥होतनहीकधुपौरिषमंडित
८॥अवनकुलाहलयथ्यसुनि॥आयोसरधनुसा
जि॥निरषिवंधुडरजोधनैवलीउठ्योरनगाजी॥९॥

विजे०

॥८९॥

॥ अर्जुन उवाच ॥ चौपई ॥ जो बांधो डुर जो धनरा
जा ॥ कह पथ्य तो हम कौं लाजा ॥ जह पि हम कौं मा
रन आए ॥ आपन किये आप फल पाये ॥ ११ ॥ तब
पथ्य विन वै गल गाजि ॥ तू मो पै कित उवरै भाजि
छाडि राय जौ चाहै जियो ॥ ना तरबेधत होतु वहि
यो ॥ १२ ॥ गंधर्व उवाच ॥ दोहा ॥ डुर जो धन करि डूष
ता आयौ तु वबध काज ॥ अक्ल अकेले जानि वन
उर कछू धरि न लाज ॥ १३ ॥ मित्र भाव मे डर धस्यो
तो बांधो भुवराई ॥ बोलि पासि सों प्यो नृपति अर्जु
न कर सुष पाय ॥ १४ ॥ छूट्यो मृग ज्यौ वधिक तैं यों
भुवपति उर जांनि ॥ दियौ रजाई सुधर्म सुत विदा ॥
करे सुष मांनि ॥ १५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ आजु भए
तुम तैं अरि नयों क हिसम देराई ॥ विलष वदन तु
त कर्ण तव ॥ बले सदन दुष पाय ॥ १६ ॥ जैसी करै सो
तैसी पावै ॥ ओछे ता कैं ओछे आवै ॥ परि हि
त कूप जु कौं धो दै कोई ॥ निश्चै गिरि हेता मे सोई

१६॥ **वैषई**॥ दोहा॥ मलिनभूप-आएसदन निसि
दिनकछुनसुहाई॥ लषीलषीपुरवासी सबैयौस
बकरतववाई॥ १७॥ **पुरवासी उवाच**॥ गएविपनि
करि दुष्टताधर्म सुवनवधकाज॥ बांधिलिये गंध
र्वनृपउपजीदल उरलाज॥ १८॥ कुलहिकलंकवि
चारिकैं पथ्यउठौअकुलाई॥ नास दिषायौ गंध
बैलानौतुरतछुडाय॥ १९॥ गयेताकिहे दुष्टतागईजी
वकी-आस॥ पथ्यछुडैराजांनिकैं वैठेमलिनअवा
स॥ २०॥ हुतेजहांनृपधर्मसुतधर्मराउतहांआई॥ दे
षनसत्पाकरिदयौमायाम्रगमुकराय॥ २१॥ आपवि
प्रकौरूपकरि आयौभूपतिपास॥ कह्यौदेहुम्रग
मारिकैंइहपुजबोमोआस॥ २२॥ तुमक्षत्रिहोवि
प्रहौंइहटारोमोआरि॥ तौष्रीजैमोकाजसवसंघ
जाईजोमारि॥ २३॥ **दोधक**॥ बंधवपांचतहांउठिधाए
काननमेमृगकैटिगआये॥ डुरिकडुकडुसुगतनिय
रै॥ हाथिचटैनघीरैकडुघेरै॥ २४॥ लागित्रषावनथाकि
रहहैं॥ लेशभयेनहिजातकहेहैं॥ पर्वतपेचटिकैत

विजे०
५२०

बहरे॥ देषतसूत्रियसौ जलनियरे॥ २५ ॥ दोहा ॥ नकु
लायौतवअंबुहित॥ लीनौभरिकरिनीर भईअका
सबांनीतहां॥ चक्रतभयोसुनिधीर॥ २६ ॥ दोहा ॥ मे
रेवसेउत्तरदेहि॥ तवतनीरआपकारलेहि कछोन
ताकौइतकछूमान्यो॥ नकुलनीरतववाहिरआन्यो
२७ ॥ प्रानतजिगईताकीकांबनि॥ चिंताकरीयुधिधि
राय॥ सहदेवधाईनिरहितगयो॥ वाहीविधितिनि
हंज्योदयो॥ २८ ॥ अर्जुनभीमगरजलपास लयो॥
अंबुमलकेभरिबीस॥ फीरिसोशयअकासहभयो
उत्तरताहिनेतिनहंदयो॥ २९ ॥ अतकपरेतेताजल
पारि॥ गऐजुधिशिरभूपविचारि॥ नीरडहुभरिअंजु॥
लिलियो॥ सोईशयअकासहभयो॥ ३० ॥ अकासवं
नीउवाच॥ होवमौतउत्तरदेहं॥ पाछेदेवनिरभरि
लेऊ॥ धर्मविवादसकलतिनिष्यो॥ भूपसत्यसवउ
त्तरदयो॥ ३१ ॥ दोहा ॥ लोभकहागुनवंतमिकोंसुगु
हानिकहाजुसमोवितयेतें॥ दुष्यकहाजडमूरमसं
गति॥ सुष्यकहाअपवादकियेतेंने हकहाजीमइत
वसउदेसकहाअदेसकियेप्रीतमसोयतिआहिस

मेंत्रियसीलवतीहितकेचितयेतैं॥३२॥**चौपई**
 कलौभूपमेंराज्योतोहि॥ प्रीतिभईउरअंतरामो॥
 हि॥ अवतेरेमनमेजोभावैं॥ वरुमागेंसोमोयेपा
 वै॥३३॥**दोहा॥** चारौविरमरेपरे॥ तेअबदेहुजी
 वाय॥ औरनहीमनकामना॥ इहकरोसुषदाय
 ३४॥**धर्मवाचा॥** जोचाहेचारौनमैसोईदेहुजी
 वाई॥ औरनजीवैतीनएनिश्चैजानौराई॥३५॥ सो
 ईअबकीजैसत्यभाऊ॥ कहीभूपसहदेवजीवाऊ
 फेरिभईउरधमेंबांणी॥ बातभूपतुममिथ्याजानी
 अर्जुनभीमबीरमाज्ञाये॥ कहिकाहेजैवैनजिवा
 ए॥३६॥**राजोवाच॥** निजबीरनकीपकरौवांहअ
 जसहोईअतिधरनीमांह॥ तातेसहदेवदेवजिवाय
 मिथ्यावचननभाषोराय॥ रीजौधर्मदेहधरिआ
 यो॥ सतवंतभूपतिउरजायो॥३७॥ तेरोपिताधर्म
 होंआई॥ अबदेहुरेसबैजिवाय॥ जनसौछिर
 किजीवायेआरि॥ कहीसुनौसुतसवसुषकारि
 बारहवर्षगईवनवीति॥ चलियोव्यासकहजाहि

१४८

विजे०
॥ ५१

रति॥ धर्मराउकहिस्वर्गसिधायो पांचौबंधुकटीतहं
आये ३२॥ इति श्रीमहानारतेपुराणे विजयसुक्तावली
कविष्मत्त्रविरचितायां दुरजोधननामभंगवर्णमंनोमहि
शोधायः ॥ २३ ॥ दोहा॥ धरमसुवनभूवभूपतव सुमि
रश्रीरिषिआस॥ आयगरेतिहिठावही करनसकलउ
षनास॥ १ ॥ चामरधंद॥ बुद्धिदैरिषीसमोहिजायकै।
कहांहैं॥ सुषसौरहैजहांसमूहवस्तुकौलहैं सोध
अंधपुत्रसोधरंचकौनपावहि॥ ठावसोहमैरिषीसकै
ऊपावतावही॥ २ ॥ आसउवाच॥ औरतौदिशानभू
परावरेहूरोनही॥ जाऊजहविगटदेससुषपाइहोतह
आरिवर्णकैहियेतहांमहादयारहै॥ गुप्तहोईजाय
कैंरिषीसवातयोकहै॥ ३ ॥ दोहा॥ तवरिषीसकौव
चननृपकीनौपरमप्रमान॥ तवविचास्कीनौइहै
सवगुनपाननिधान॥ ४ ॥ चौपई॥ जेरिषीनामभूप
कोभाषै॥ नामजयंतभीमकौराष्यै॥ विजेब्रहंडला
अर्जुननाम॥ सहदेवबालभयौगुनग्राम॥ ५ ॥ बाह
कअश्वनीनकुलकुमार॥ योकहिकैरिषीकियौवि

चार॥ अडिगर्वसेवगज्योंसेवा॥ कीजेमननारेतु
मदेवा॥ ६॥ **व्यास उवाच॥ सीध्या॥** क्रोधतजोहे
विरोधतजो अरुगर्वतजोतुमधामपराये॥ आइसु
पायकरोसवधायसुजायरहोसवअपदुराये॥ ७॥
चोऊनीचोकहैकोऊआयकैंसोऊसुनौरहियो
सिरनांयकैं॥ सोचनमोचनराजीवनेनसदरहि
योतिनसौचित्त्याये॥ ७॥ **सोरठा॥** चलियेतैहीध्या
हजबजेसोसमयोलेषै॥ गर्वनहीमनमांहनैकहूं
भूपविचारिये॥ ८॥ **दोह॥** इहविधिकेवहुसिष
देगयेव्यासरिषिधाम॥ सोईमतहिरदेलह्योमन
सावाचाकाम॥ ९॥ **८** पाईसीषभूवपालतवाब
नते८भयेउचाव॥ **८** पांचौबंधवकरिछिमाआये
नगरविराट॥ १०॥ अतकपुरुषसोबेगिहीआवध
बांधेधाई॥ नगरनिकटतरवरसमीतापरराष्योजा
ई॥ ११॥ निरषिगवालताथलकह्योयाहिषुवैजोआ
ई॥ बरषदिवसलोंअतकइहताकरह्यैहैधाई॥ १२॥
इहकहिकैगवालनिबोराय॥ आपनचलेनगरको
राय॥ पठतनगरसगुनभयेघने॥ सहदेवसौभूपति

विज्ञे०
॥ १२ ॥

॥ १३ ॥ **राज्ञे वाच** ॥ कैसे सगुन भये मुख कारि ॥ सो
तुम बंधव करौ विचारि ॥ ऐसे लखिन ऐसे पहि चानों
॥ १४ ॥ **सहदेव वाच** ॥
वाल बिलावत बाल ककों सुत ॥ अस्तन पाल करै सुभी
कों ॥ सुषमै द्योस सिरा वहिगे ॥ सब होय गो का जमहा
पति जीयकों ॥ लीन गयो दिसि वाम चिकारी ॥ कष्ट
इह मो उर लागत फीकों ॥ केनिक काल वितीत भगे
तव सोच उठै कष्ट विग्रह जीकों ॥ १५ ॥ **चौ पई** ॥ पुरमै
बंधव आरु रहे ॥ रात्र सभा चलि भूपति गए ॥ द्विज के
रूप करे तिलिये सोहत वादशा तिल के दिये ॥ १६ ॥ उठि
विराट निरखत सिर भायो ॥ कोत विप्र कहोते आयो
दे ॥ असी सविन वैयो राई ॥ धर्म सुवन कौ वरवा आय १७
गिरिग कर कै दुरि गये पांचों ॥ मो सों वै न कस्यो इह सां
चौ ॥ जाउ विराट मही पति पास ॥ रहि हों तहां सुषी सु
विलास ॥ १८ ॥ धर्म पुत्र तुम पास पठायो ॥ तातै निकट
तुमारे आयो ॥ सुनि भूपति की नौ सनमान बैद्योग
नमनि ग्यान निधान ॥ १९ ॥ **राज्ञे वाच** ॥ जैरि घीना मया
सरिषि भाष्यो ॥ सुनि छिति पति वहु आदर राष्यो ॥ अ

धीसनवैढौ भुवपाल ॥ ^{नृप} सिरपरितानौ शत्रु ॥ १८ ॥
 पिरिकै प्राये भीम कुमार ॥ प्राई भूप को
 कियो सुख ॥ दीरघतन दीरघ भुज दंड निरघत को
 तिक भए अघंड ॥ २० ॥ **राजा विराट वाक्य ॥ दोहा ॥**
 कितते प्राये कौन तुम ॥ कहा तिहारौ नाम कौन
 पाति किहि हेतु तुम ॥ प्राये मेरै धाम ॥ २१ ॥ **भीम**
सिना ॥ गीतिका ॥ व्यास नाम जयंत भाष्यो पंड सुत को
 स्वार हैं ॥ सर्वदा करतो तहा सम भीम भीम को आ
 हार हो ॥ दया करते रचत हो भोजन सलौने प्रतिघ
 तें ॥ अतिहि स्वगंधित स्वध्विंजन ॥ सकल घटर स
 सो सेने ॥ २२ ॥ रिग्रीग्न रे सदिन प्रतिदेत पट भूष
 न घने ॥ राघते बहु मान मेरो अतुल सरिवर मोणे
 के विराट उदार हित करि वचन अमृत भाषियो ॥
 हत सो बहु मानि करिकें निकट अपने राषियो ॥ २३ ॥
॥ दोहा ॥ नीरख्यो सरवर भीम की भूपतिता को देह
 वे सोवली विचारिकें ॥ टिगराख्यो करि नेह ॥ २४ ॥ फि
 रि अर्जुन नट राव के ॥ कीनो त्रिय को रूप ॥ कंकन किं
 कनि प्रादिदै सजि ॥ ^{नृप} प्रहस्य ॥ २५ ॥ सीधुर सी ॥

विज्ञे०

॥९३॥

सतमोलमुखमहिदीजत ^{सुप्र} ~~मुपनि~~ वावकचरनम्रदंगा
कीधुनिकीनीतिन ~~मुपनि~~ ॥ ३॥ मुनिभीतरिवोलेनृप
ति ॥ सबवृजोबोहार ॥ सकलगणवसंगीतलमि ॥ कला
चौगुनीचारु ॥ २० ॥ **अर्जुन उवाच** ॥ होअधारेधर्म
मुतकैरहतवकुमुखपाईकै ॥ भांतिभांतिरिजावतो ॥
करिनृत्यगीतमुनाईकै ॥ कौनअपनोगुनकहेसब
हफिजेरिषिबोलिकै ॥ देहिसकलमुनायकैसबक
हतविद्याषोलिकै ॥ २१ ॥ **दोहा** ॥ पारथकोमैसारथी
विजेब्रहंडलनाम ॥ जीवनअयेरावरेग्रेहलयोविआ
म ॥ २० ॥ **ब्रहंडल उवाच** ॥ धर्मपुत्रकरिकैवकुनेहपठ
एइहांजानिकैग्रेह ॥ अवआभारहमारोलेकु ॥ वस्त
रअन्नवरषभरिदेहु ॥ ३१ ॥ लघुकन्यावालकहिपछउ
सरनगुनसंगीतसीषाउ ॥ भूपमुताउत्तराकुवारि ॥ सो
प्रीपटनयोगमुखकारि ॥ ३२ ॥ फिरिसहदेवपहोओ
आय ॥ सुधिकरिभूपनिसौजाय ॥ **सहदेव उवाच** ॥
हौतौधर्मपुत्रकौगवाल ॥ करतोमहाक्रणभुवपाल
३३ ॥ वैतौडुरिवनविथिनगर ॥ देउपदेसपठेइहांदये
करिआंनौंगायनकीसार ॥ अरुसबविधिगहिसकौ

हृष्टार॥ मोदेष्टतधनुकोकहिहरे दोरन्तुरिजोस
मताकरें॥ नामसैनइहव्रतिहमारी इहजीवका॥
चित्तविचारि॥ ३५॥ अरुजयंतजैरिषिमोजांनैं उ
न्हैद्विभूषितितवमानैं॥ सुनितिनिजान्मोदूदिवि
साल॥ सोपीसुरभीकीनोग्याल॥ ३६॥ दोहा॥ फेनि
निकुलआयोतहांलीनौताजबहाथ॥ देषिरूपकी
रासितहां॥ चक्रतभयोनरनाथ॥ ३७॥ विराटउवाच॥
कौनपातिकोआपहैं॥ कहातुमारोंनाम॥ कहिका
रणकविष्टत्रकहिआयेमेरेधाम॥ ३८॥ दोधक॥
बाहकभूपजुधिष्टिरकेरो॥ राघतमानसबैविधिमे
रो॥ विदुरिकैवनमांहिसिधारे॥ दैसवतैंहमकुडुषभा
रो॥ ३९॥ काटरकूटरअश्वचलाऊ॥ जौजनसोइक
वासधेधुईदूरहुजोरिषिकौंगुनमेरो॥ मैंवहुनाम
सुन्योनुपतेरो॥ मोकहुसोपियेसाहनजेते॥ जान
हुगेगुनमोमैतेते॥ योसुनिभूपउदारभयोचित॥ हे
तकसोवहुधानितहिनीति॥ ४०॥ दोहा॥ आप्यो
साहननकुलकरि॥ कैभुवपालउदार॥ वज्रोआई
शोषदीभूपतिसदनमजारी॥ ४१॥ देष्टतभूपतितरु॥

विजे०

॥८४॥

निजुतसंभ्रम बओ अपार । सचिकिधोरतिमैनका
रंभातेसकुमारी ॥४३॥ नगीपनगीकमलयाभुवआई
धस्दिह । सवरनबासचकोरसौससियोआईग्रह ॥४४॥
राजोवाच ॥ कहौकौनकीकुलवधु आईइहांकिहं
म कौनग्यातिवरणौसकल सबविधिकेंगुनगंम
॥४५॥ प्रोप दीउ वाच ॥ पंडपुत्रग्रहप्रोपदीरानीपरम
उदार ॥ ताकिदासीमोहिगानि ॥ आईहौतुमद्वार ॥
६ ॥ सुंदरी ॥ वेपतिसंगआईवनमैशुरि ॥ मोसहबैन
कह्यौहसिकेंमुरि ॥ जाहुविराटमहीपतिकेघर ॥ का
वहुकालतहांइहओसर ॥४७॥ आईतुवसेवाकरन
मोहिमुजानीनांम ॥ अग्यादेऊकपालकैकरोइहांवि
श्राम ॥४८॥ रानीउवाच ॥ कौनसेवउद्विमकहाक
रिजानौकहिवाल ॥ चंद्रवदनिसोवेगकहि ॥ सोसोयो
उत्ताल ॥४९॥ प्रोपदी० ॥ दंडक ॥ मंजनकराउसब
भूषनवनाउ ॥ चुनिचारपहिराउआछेभाईनसंजोय
हैं ॥ दर्पनदिषाउंदरसाऊंमहानिकीइति कुंकमसुग
धधनसारउरलोयहैं ॥ बीजनडुलाऊं ॥ जलसातलपी

लांऊ ॥ असुसेजहोविष्ठांउनकरोगीकाजदोयहैं
 ऐसेकैंसुजांनीकरुजांनौनीकैंमोरीरांती ॥ मूठहु
 नषाहु ॥ औरयायहुनधोयहों ॥ ५० ॥ राजीवाचस
 त्यवचनतैकहेसुजांनी ॥ मैतुनिजपंडुकीजांनी ॥ त
 नयासैमेरेग्रेहमैरहिये ॥ मोसौमनकीबाताकहोयें
 ॥ ५१ ॥ हलकीभारीजोकोऊभाषें ॥ तजिनताकोआ
 दराषें ॥ घोरहिकाज्योसंतोष ॥ निसदिनकरिहो
 तुवपरिपोष ॥ ५२ ॥ सुजानीउवाच ॥ गीतिका
 करतरत्तापांचगंधर्व ॥ अंतरीश्वसदावसैं ॥ विक्रमी
 बलवंतवहुविधिघोररूपमहालसैं ॥ देहिमेकोहु
 ष्यजोवैं ॥ आईताहिसंधारिहैं ॥ देवकौनरदेवकौं
 निदेवकौनविचारिहैं ॥ ५३ ॥ पापदृष्टिजोमोहिदेखें
 प्रांनगतजोजानियो ॥ पांचसरक्षकवैसदाइह ॥ सत्य
 कैउरआनियो ॥ निकटतिनराषीसुजांनी ॥ परम
 जियसुषपायकैं ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ इहिविधिपांचोपंड
 सुत ॥ औरदोपदीवांम ॥ कालघेपनिनकैंकरै ॥ धत्र
 सकलगुनग्रांम ॥ ५५ ॥ चौपई ॥ होहिएकसंगकाल
 हिपाई ॥ सकलअवस्थावराणैजाई ॥ ५६ ॥ जबभूप

दाहिना सुख सिंगरि नवनयन

वि०

॥ ८५ ॥

तिहिजहारण आवै ॥ प्रथमहिजेरिषिकोशिरना
वै ॥ ५६ ॥ अतिश्रीमहाभारतेपुराणेविजयसुक्तावली
कविछत्रावरचितायांपंडवअणातवसवर्णननाम
एकविंशतिमोध्यायः ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अपनीहुहिता
कौरव्यौनृपतिविराटविवाह ॥ छत्रसकलपुरमेंभयो
यहयहप्रतिउत्साह ॥ १ ॥ छिनिकेकितेश्चितीसत
बआयेतिनकैंधाम ॥ सत्रसमानपराक्रमीजगमे
जीनकेनाम ॥ २ ॥ सोरठा ॥ सभारचीतिहिकाल ॥ अ
मरावतीसीजगमों ॥ आपनज्योसुरपालभूमिदेव
सबदेवसे ॥ ३ ॥ नराजछंद ॥ कहंनृत्पकालीनके।
जुयसोहैं ॥ कहोंरागकीतानसोंचित्तमोहैं ॥ कहोंक
चनीलैमृदंगीनचावैं ॥ लसैउर्वसीसीसवैमांनपावै
४ ॥ कहूमक्षमातेतरैंभीमभारे ॥ कहंसेबसूरेउराडे
रारै कहूमक्षमातंगकेघोरधूमैं ॥ तमीपुत्रसेदेवि
येचारुमैं ॥ ५ ॥ दोहा ॥ मक्षएकअप्यौतहांवांनेवां।
धेजाल ॥ पागमैटोडरपीतपटबोलिउद्योउताल ॥ ६ ॥ स
भामांनरनाहसवचारवनरनकीभीर ॥ बडेधनुर्ध
रसादसीदेष्टतहोंसबवीर ॥ ७ ॥ मोसौमक्षजुरेनही

कोउकाऊदेस॥हेकोऊमोंसौजुरै॥अग्यादेहुने
स॥८॥छप्ये॥मरहठसोरठजीतिजीतिसारंगतिलंगी
जीतिविदरभीमद्वसकलभधरकेसंगी॥मगधजीति
मेवारबगरवरजीतिचंदेरी॥बंदरवारिधघाटजीतिकर
नाटकहेरी॥कविछत्रजीतिअंगदनगरनहिकोऊस।
रिवरिकरि०सकैं॥भुजबदहुसभातिहिसरकेसुकरि
वरमोसनमुषतकैं॥९॥चौपई॥सुनिसुनिसभानवो
लैकाई॥मनसाहसकाहूनहीहोई॥नृपतिविरावहि
सुधिभईआई॥लानौस्वारथजयंतबुलाई॥१०॥राजो
वाच॥सुनिजयंततुआयुसमांनि॥मध्रजुद्धतुयासों
ठांनि॥जोहोरैतोलाजनहोई॥जीतेदेईइवसवकोई
११॥दोहा॥तबजयंतइहमध्रसोंकहीबातहरवाई
हमतुमरससोंबेलियेलीजेसभारिजाय॥तजोआनै।
रोसमनडारैभुजाउषारिहमपरदेसीनन्यागहीदेहै
भूपनिकारि॥१३॥दोहा॥तनदीरघदीरघभुजावच
नकहतकतदीनयोंसोऊंनहिउच्चैरैहोयजुतनकैं
हीन॥१४॥चौपई॥मध्रजुद्धदोऊंमिलिकरै॥लट
पटायधरतिधुकिपरै॥फिरिफिरिवरकरिउठतस

विज्ञे०

॥९६॥

हारि॥ कोउ न माने इह न मे हारि॥ १५॥ तव जयंत सुज
वर कियो॥ मध्व उठाय पदुमि तैल यो॥ करि वहु को
ध सुभूत लडा सौ॥ जनु सुख जग धाई गि पासो॥ १६॥
समहरि उठौ ये वचन सुनाई॥ अवमारुंतोष कला
कित जाई॥ लैत वगर ज उठो अकुलाई॥ हन्यो जयंत
नाशिका आई॥ बीषम चोट थारह सौ सरीर॥ मुरछी
तप कुमि गि सौ बरवीर॥ १७॥ निरघत जै रिषि और
सुजांनि॥ हे है करि करि के अकुलांनि॥ चेति जयंत
त उठो गल गाजि॥ जानन पायो सोषल भाजि॥ १८॥
भूमहि सात बार उठि मासो॥ गहरौ गर्ब दुष्ट को मासो॥
फिरि सो जु सौ न करि वर जोरि॥ देवर की नों म इम
रोर॥ २०॥ देषत सभा सकल नर हर्षे॥ बस नर जत
मनि मांलन बर्षे॥ अतैं दियो सुर सरी वहाई॥ तब स
बस मदेरा जग आई॥ २१॥ दू तोटक॥ मत्त गयंदहु तो
इक ऐसे॥ अंजन कौ भूव भूधर जै सौ॥ नीर निकेत
सो छोरि चलायौ॥ गर्जत धांमनि डारत आयौ॥ २२॥
कांनि महावत कीन करै सौ॥ प्रांन तजै टिग आवत है

सो ॥ सुंदरमंदिरजरिदयेज् ॥ भीतसबैनरानारिभ
 रज्ज् ॥ २३ ॥ भूपतिसौसबलोगुपुकारे ॥ हैनरकेति
 ककुंजरमारै ॥ ताहितकैतिनलोगपठये ॥ बांधहु
 याकहमाषतआए ॥ २४ ॥ चौपई ॥ कोउनीकटसकै
 नहिजाईभूपतिसौसबहिनीसुनाई ॥ क्योंहुंहाथि
 नकुंजरआवे ॥ करैउपावसुभूपवतावे ॥ २५ ॥ दोधक
 कैसवमिलिकरबांधहुजाय ॥ कैप्रवससुत्रवधोकि
 नताहि ॥ वोलिजयंतेअज्ञादई ॥ यागयंदतेचिंताभ
 र्द ॥ २६ ॥ कैवरबांधिकिताकहमारि ॥ पुरकौकंटक
 बगिनिकारि ॥ कहेजयंतजुमारैयाहि ॥ कुंजरकोजि
 नपकरोजाय ॥ २७ ॥ सिंधनादगाज्योवलबीरतवग
 यंदथरहस्योसरीर ॥ प्रंष्टपरिवरकजोस्योअसौ ॥ २८ ॥ धा
 वतमगकौचोताजेसौ ॥ २९ ॥ पकरिरदनलैपहुचौ ॥
 थान ॥ ज्योअजयागहिलोजहिकांन ॥ बांधिताहिभ
 पहिसीरनायो ॥ तवजयंतवसननिपहरायो ॥ ३० ॥ दो० ॥
 इहविधिवितेमासदस ॥ नृपबीराटकैतार ॥ कालखेय
 इहविधिकैरैपंडुपुत्रवलबी ॥ ३१ ॥ इतिश्रीमहाभा

रतेपुगीविचारहारद्वलीकविष्टत्रविरचितायांभीमसे
 नविजयगादज्जानामद्वाविंशतिमोधाय॥२२॥ सोरठा
 नृपतरुनीकौबंधु॥ कीचकवलीविसालतन॥ जोवनम
 दप्रतिगंधसहस्रदसताहिवल॥१॥ दोधक॥ सतबं
 धवकीचकअतिवली॥ वरप्रवगाहतनअस्थली सी
 हतएकमांतकेजाये॥ ऐसेसुमटमहीपतिपाए॥२॥ गी
 तिका॥ एकघोसकीचकमोहकैनिजमहलभूपतिकैग
 यौ॥ कीनैप्रतांमअसेषभग्रीदेधिकैआसनदयौ॥ वाउ
 तहांदोरैसुजाती॥ नृपत्रियाभोजनकरै॥ रूपदासीकौवि
 लोकतदेहकीचकथरहरै॥३॥ बातभग्रीसौकहेचित।
 अटकदासीसौरह्यौ॥ कालघेस्योमूढइहहसिकैसुजा
 नीमौकह्यौ॥ हैपंचगंधर्वमोहिरक्षक॥ तुरतताहिसंधारि
 है॥ वहवलीहोईकहोयनिर्वल॥ कधूचितनविचारिहैं
 ४॥ कामअंधभयोसुआतुर॥ तुरतभगनीसोंकहेदे
 हदासीमोहिमांगै॥ इच्छामोउरयौरहैं॥ दैहुवदलैस
 हसनारी एकइहमोदीजीये॥ थाडिलज्पाकहीतोसु
 कह्योमोरोकीजीये॥५॥ रानीउवाच॥ आहिदासी

जो पदी की कहो कि हि विधि दोइ ॥ ७ ॥ उतरा
समलोभचित्तन कीजिये ॥ जीवका ॥ आयतीर
मी ॥ सो कहौ कौ पाई कै ॥ दर्शन जाई बीर मोये ॥ आयधं
म सिधाइये ॥ ८ ॥ कीचक उवाचा ॥ कहि कै सैं तराषी
है दासी बर करिलेंहु ॥ राज पाट सब छीनि कै कोटिको
टिडुष देऊ ॥ ९ ॥ चौपई ॥ चेरी लागिन सावै राज ॥ तेरो
कहा सुधरि है काज ॥ अति बलवंत बीर है मेरे ॥ राषि
लेहि कौ अैं सो तेरे ॥ १० ॥ रानी ॥ परतरुनी रत जे नर भ
ये ॥ अपनी करनी ते मिट गए ॥ जो चाहै अपनी कुस
रात ॥ फेरि कहौ जिनि या की बात ॥ ११ ॥ सवैया ॥ अंध
महादशकंध हरि सीया घव कौ सरता उर साल्यो ॥ स
कहि स्थापदियो मुनि गौतम ॥ जानि कुकर्म के कर्म
निचाल्यो ॥ सुंभनि सुंभ हते तरुनी ॥ अरु तारहि ला
गि वधो बरवा ल्यो ॥ यौ समजै मन मै सत् किनि
कौ न गयो परवाम कौ घाल्यो ॥ दोहा ॥ भगनी मुख
वचन सुनि ॥ उठिसि सुधा यौ धांम ॥ विकल महा जि
य कल नही ॥ घरी म हूत जांम ॥ १२ ॥ चौपई ॥ कीच

विज्ञ०

॥६८॥

ककुसुधिवृधिनहारही॥ सुनैसदनसुजांनीलही का
मन्त्रधर्मचलतवगह्यो॥ आतुरकैयाविधिसोक
ह्यो॥ १२॥ चित्तमेरोतेसों अवलागो॥ भोआसक्त
सुधीरजभाणो॥ मेरैतरुनीससिउनहारि॥ सवपरिह
रोसुहागनिरारि॥ १३॥ उत्तिमभूषनवसनवनांउ
अरुदासीकौनावमिटाऊं॥ कहिजीवनजनमगमा
वे॥ तूतोमोउरुमैअतिभावे॥ १४॥ सुजानीबाक्यं॥ गं
धर्वपंचमोस्त्रिषवारे॥ दिग्घतनवलविक्रमभारे॥ मो
हिष्ठीवतवेतुरतहीआवे॥ कीचकनैरेप्रांननसा
वे॥ १५॥ तोयमैमोअपजसकैहै॥ मोहैदोससक
लजगदेहै॥ इहसुनीकीचकवडुभौमानी॥ तुरत
गयोमुकरायसुजांती॥ १६॥ निसदिनताकुंमिंदन
आवैधनसंपतिघरवारनभावे॥ इतीबोलीसुहा
हविधिकही॥ वहदासीमोचिवसिरही॥ १७॥ भो
रेंसावसुजांनीअवे॥ मोमनईष्टापूजैसवे॥ वडु
भांतिनहुतीसमजावे॥ चित्तसुजानीकधूनआवे

१७॥ इह विचारि नही बोले सोई ॥ आजु कालिक
छूकलहन होई ॥ कीचक आतुर कै उहि धायो ज
हां मुजानी तिह थल आयो ॥ १८॥ दोहा ॥ सुनें ग्र
ह मे पाई कै गहे के सकरि धाई ॥ अब कहि धौ तो
कौं अवे ॥ कौन छूड़ा वे प्राय ॥ २०॥ दासिकर्म कर
य कै त्रास दिषां ऊ तोहि ॥ अपनी मन भाई करों
इहे आन है मोहि ॥ २१॥ कौं कुंषल नही हृष्ट
जे ॥ अंचल डास्यो फारि ॥ करै तैं केसन सो तजै अ
ति अकुलानी नारि ॥ मुजानि उवाच ॥ जान तरसा
कीरीति नही ॥ तूषल एक हू बात ॥ परतरुनी कै
मन दीये ॥ तब सुषस वसर सात ॥ २२॥ रस ही रस
ही मन मीले ॥ तवल हिर पर नारि ॥ बौरायो ये वच
न कहि ॥ मूट ऊ पाऊ विचारि ॥ २४॥ सिथल भयो
ये वचन सुनिके सदिये मुकराय ॥ मुजानी वाक्य रै
निभये तैं कौं न तनांच अघोरै जाय ॥ भोग जोग सुने
सदन बैनिसि कीच कराई ॥ जाऊं तहां हौं आई हूं

धिजे०
॥८५॥

जांमुकैनिविहाई॥२५॥ कीचकयौसुनिकैंसुषपायौ
वैनसुंनोहितवंतसुहायौ॥ जातुभयौअपनेग्रहसोई
बाहतवाटनिसाकबहोई॥२६॥ वैनकह्योतहेप्रा
यसुजांनी॥ हेपतिभूपतितहांसुषदांनि॥ कीचकका
नितनैकनराधी॥ सोगतिबांमतहांसवभाषी॥२७॥
प्रायसअर्जुनकौनृपदीजे॥ कीचकमारहिसोमत।
कीजे॥ रोवतबांमहिस्वासनआवत॥ भूपतियावि
धिकैंसमजावत॥२८॥ दोहा॥ मासद्योसवितैंत्रिया
मोव्रतएनहोई॥ तोलगिकालहिकाटिएलखेक
छूनहिकीई॥३०॥ चौपई॥ अवविधितैंकीचकसं
घारूं॥ तवनाहीऔरविचारविचारूं॥ कैंतोलागि
रहियेमनमारि॥ कैंवनवासकरावऊनारि॥३१॥ किन
षवदनत्रियपौहोचीजहां॥ हुतेब्रहंडलअर्जुनतहां
बसनीकीचककीअधिकाई॥ भूपतिकेमनकछूनआ
ई॥३२॥ मेरोकह्योगुसाईकीजे॥ हतकीचककौ
जगजसलीजैं॥ तुमहिअश्रितकीचकउषदयो॥

मौरिषकहांतुमारोगयौ॥३३॥ अर्जुन उवाच
जौ भूपति को आयु सपांऊ॥ तौ किचक कौं मारि
गिराऊ॥ नृपकी कानिन तो रिजाई॥ तौ तै कष्ट
करो न ऊं पाय॥३४॥ दोहा॥ गई न कुल सह देव
पें विलषि वदन वरन रि॥ अधिक आई ता दुष्ट की स
ब विधि कहि विचारि॥३५॥ सुजांनी वाच॥ कीचक
बाह हमारी गहि॥ तुम में कहो कहां पति रही मे
रे जिय को परिह सुसारो॥ कौं न आपने अरि कौं मा
रो॥३६॥ सह देव न कुल उवाच॥ सुनि सुनि तेरे ब
चन अब॥ वाद्यो क्रोध अपार॥ मे द्यौ जाय न नृप
बचन॥ विनयों वारंवार॥३७॥ मारै कीचक छिन
क मै को अब स कै वचाय॥ करै अवगणान रि अ
ब कौ कहिन की हिजाय॥३८॥ चौपई॥ मा स एक
त् और निवारि॥ तव सकि हौं कीचक कौं मारि
ई न हते त्रिय भई नीरास॥ पद्मची भीम सेन कै पास
३९॥ सजल नयन भरि आं सुठारै॥ मीजत नयन भ
येर लारे॥ पवन पुत्र जव सह विधि जांनी॥ विलषी

विजे०

॥१००॥

गदीघारसुजांती ॥४०॥ आयोघारलषीत्रियनेन
स्वासातैलैकहैनबेन ॥ बोलिविलषीअसुवनीमा
ह ॥ कीचकडुगहिमोवाह ॥४१॥ पंडूसुतनपैंकि
रिपकारि ॥ वेनगहारिलगेकौऊचरि ॥ अबजोसां
ईतूसहिरैहै ॥ गहिसोडुमोहिलैजैहै ॥४२॥ सवै
या ॥ रोसवद्योविषसोसबअंगलषीत्रियकेमुख
पेमलिनाई ॥ ब्रूमतऊतरफेरिनदेत ॥ गरोभरि
मुखवातनआई ॥ कीचककौसुनितामुखनांम
मुदोरिगिस्तोइगमैअसुनाई ॥ देषतहीवधि
होछिनमैइहइहपैजजुधि ॥ शिरलाषडुहाई ॥४३॥
सेहयिमीचतुलाईलईतिनस्यारवरायकैंस्पघ
सोंपेत्यो ॥ दाडुधायजुसोअहिसोंसुकपोतकि
घोंबरवाजसोंजोत्यो ॥ मुखकजुधमजारहासोंप
गल्पीलकोचाहतगर्धनठेत्यो ॥ घेसोहैकाल
करालसोईकर ॥ जाइजुजंगमकेवलमेत्यो ॥४४॥
दोहा ॥ कालसर्पसोषतडस्यो ॥ कामलहरिअ
कुलाइ ॥ पूंछमरोरीस्पघकी ॥ अबजीवतकित

जाय ॥ ४५ ॥ जो नहि मारों छिन कर्म ॥ आवै कौं
तहि लाज ॥ जौ वैरी करि जाव है तौ मो जीवन कछु
न काज ॥ ४६ ॥ सुजानी वाच ॥ तुम देखत सब पंचनि
मांरु ॥ ह्मासन पकरी ही वांरु ॥ ह्म जो धन जव श्री
ने चीर ॥ हुते अशित तहां पांचौ वीर ॥ ४७ ॥ विपन
जय दृष्ट छल के हरी ॥ बांध्यो दुष्ट कांनि नही करी ॥
दुष्ट दे कीचक पाफा सौ चीर ॥ तातै व्याकुल भयो
सरीर ॥ ४८ ॥ दोहा ॥ सभा मांरु सुनिकीच कै भीम
चल्यो अकुलाई ॥ अवही मारो दुष्ट कौ को अब
सकै वचाय ॥ ४९ ॥ दोष दी वाच ॥ ॥ अवन उताव
वल की जिये जां नौ काल वचाय ॥ ह्म ह्म मारो रैन
में रहै अघोरै जाई ॥ ५० ॥ मै सहै तसौ धवरी आ
वें तहां नि संक ॥ ताहि तहा संघारियौ करियौ दया
न अंक ॥ ५१ ॥ प्रेम तौ सुकी जीये आवै जामै जी
त ॥ नही उतावल की जिये ॥ इह स्पानन कारीति ५२
चो पई ॥ भीम सेन तरुनी वपु की नौ दिग अंजन सिर
सै हरि दानो ॥ पट भूषन आभरन सवारे ॥ कटि किंक

विजै०
॥ १०१ ॥

निनूपरऊनकारे ॥ ५३ ॥ करितरुनीवपुपौहौचौ
तहां ॥ बदीसहेटअघोरजहां ॥ बैठिरह्यौताग्रहमें
जाय कीचककालपहौचौआई ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ हौ
नहारसोनहिमिटैभाबीमहावलीसृ ॥ कीचकम
नसिजसिंधुमेंवोसौवलिअरिसृ ॥ ५५ ॥ चौपई रेनि
भयेसुखकीचकपायौवांमसहेटधलीतहांआयौ
देषित्रियावपुयौहसिभाष्यौ ॥ तूधनिहैअपनौ
पनराष्यौ ॥ ५६ ॥ आवतहीकरताकहुमेल्यौ मान
कियौवहुवारनठेल्यौ ॥ नैंकजहीवरकीचककी
नौ ॥ इष्टकेलित्रियातवदीनौ ॥ ५७ ॥ जांनिगयो
इहवांमनहोइ ॥ हेवरबीरनमेइहकोई ॥ तोकह
मारिसुजांनिल्यांऊ ॥ दजोनवधौद्विजदोषनपांऊ
सोरठा ॥ भिरेकौषिदोऊवीरलटपटातलोटतलप
टि ॥ सरसमरनधीरभूधरजन्मभूधरभिरत ॥ ५८ ॥ दो
धक ॥ द्वैमेंहरिनकोउमानैं ॥ कापिअमितगतजु
छहिगानैं ॥ अतिबरभीमसेनतवकियौ ॥ मूठउठाय
भूमिनैल्यौ ॥ ५९ ॥ पटक्यौभूमिगरैपगदीयो ॥ मारि

सुखमस्वप्नप्रानविनकियौ ॥ मारचौहटैरण्यो
जाइ ॥ जानैपुरजननहीयेजाइ ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ मारि
हुएधरिचौहटै ॥ जियकीविशानसाई ॥ अर्धरें
निसुतपोनकौनिजथलपडुचौआनि ॥ ६२ ॥ जा
गेपुरजनसदनसंप्रातभयेनरनारि ॥ मृतकदे।
षिकीचकसकैंकोऊनहीविचारि ॥ ६३ ॥ भुजा
प्रयात् ॥ नृपालसुद्धिपायकैं ॥ गयेतुरंतआयकैं
विलोकिभीतकैरहेनवैनजायतेकहे ॥ ६३ ॥ वि
लापतामसौंतए ॥ असेषसोकसौरहे ॥ उपाव।
कौनगंनिए कछूनवातजांनिये ॥ ५४ ॥ दोधक
बंधवकीसुधिताछिनपाई ॥ भूपतिकीतरुनीत
हांआई ॥ ५५ ॥ रुदनकौंअतिहिउषगंन्यो ॥ दीषतभू
पमहाविलषानैं ॥ ६५ ॥ रोजोवाच ॥ कौनहिकीच
कसरप्रहास्यो ॥ आसहजुधजुसौसोईमास्यो ॥ अं
गनहीश्रुतसोननआवे ॥ अलिरहेकछूसोधनपा
वे ॥ ६६ ॥ रानीउवाच ॥ रहैतुन्हारेयेहमें ॥ जांहिपु
तानीनांम ॥ गंधर्वरक्षकतासुकेरक्षकअष्टहजंम

विजे०

॥१०२॥

६७ की चक अति आसक्त है गही सुजानी वाल
ताई दिन तैं में लमो घे सो है इह काल ॥ ६८ दो थक
की चकति न मं धर्व निहयो ॥ काहू पास निरामो ग
यो ॥ प्रवचलीया की किरिया कीजे ॥ लै लै कुसस
व अंजुल दीजे ॥ ६९ ॥ लषिकुंत वारहि वो लो शर्क
पर जालो गनि बेगि बुलाय ॥ लै की चक कौं घाट
हु जाउ ॥ विधि सो सब किरिया करवाउ ॥ ७० ॥ जी
तिका ॥ कहै जै रिषी नी चलो गनि नही अंग घूवाव
रें ॥ वरन उति म होय जोई ॥ ताहि बेगि बुलाइ
सुधि आई भूप कौं बो लो जयंत विचारि कै ॥ वार
ध वै इकराज अणाति हि दर्शत बटारि कै ॥ ७१ ॥ फे
रि आयौ पौन कौ सुत भूप ता सो यों कहैया ॥ बने मे
रो मे टिकै कहि बेगि मूढ कहार्यौ ॥ पंड सुत की कां
निरा यो क्रोध कै कै सै हनौ ॥ तर हसन मोन सो व
हु बंध सरि वरि हो गनौ ॥ ७२ ॥ भीम सेन ॥ मासो की
चक मे कहा ॥ कत की ॥ जत है क्रोध मो डष पायो बाधि

नृप-अंतहि लीजे सोधि ॥ ७४ ॥ भोजन भाजिन द्या
डिकत हों नही अनत हि जाई ॥ मन सा वाचा
कर मना तुम कों महा उपाई ॥ ७५ ॥ सोरग ॥ करी
क्रयानर नाथ ॥ इह विधिक ही जयंत सो ॥ लै की
चक कों जाऊ झरि नगर तै क्रतिकरो ॥ ७६ ॥ भीम
सेन उवाच ॥ बंधु कुटुंब ज होई ॥ सोई म्रत कहि
काटि है ॥ कहा परि है मोहि ॥ असौ कर्म न मै क
रो ॥ ७७ ॥ चौपई ॥ भूपति को फिरि आयु मुपाई
यो नर नाथ हिवे न सुनायो ॥ जो अब भोजन कों
कष्ट पाई ॥ लगहि कीचक वाट सिधाई ॥ ७८ ॥
भोजन को भूषण लमगायौ ॥ बैठि जयंतरत हां
सब धायौ ॥ रोवहि कीचक के सब भाई ॥ जैवत
सो नहि होत अघाय ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ करि भोजन
बलि बंदत ब कीचक लियौ उठाय ॥ झरनगर ते
घाट पर म्रत क उतास्यो जाय ॥ ८० ॥ बन उपवन
दुम तोरि कै ॥ अंनि धरे तिहि वोर ॥ ओर सीषर व
ऊँरीर के केति क अंने ठौर ॥ इत कीचक के वंध

13

सब पकरि सोपदीवाल ॥ जारन की चक संग ही
लिये चलेति हि काल ॥ ८१ ॥ चौपई ॥ या ॥ इहित मा
स्योबंध ॥ तुहमारो ॥ पकरिया हि वाके संग जारो ॥ ब
रजत परजन सो नही मानै ॥ काहु अपने चित न अ
नै ॥ ८२ ॥ पकरिता हिलै यहो चेतहां की चक अत
कय स्यो हो जहां ॥ भरि भरि घृत घट के तिक अने
चंदन के गन कौन बखानै ॥ ८३ ॥ रुदन करत लषि
सोपदी ॥ ग्रहत न चले जयंत ॥ क्रोध बढ्यो आश्रं
ग मै देषत कर्म डुरंत ॥ ८४ ॥ वसन उतारि धरे कहौ
भीम भीम कै धाई ॥ फूलि गात हनौ भयो उपमा क
हीन जात ॥ ८५ ॥ की चक चढ़ाई सकल अंग के स
दीये मुकड़ाई ॥ करलै तरवार वज्र सम दर्द दिषाई
जाई ॥ ८६ ॥ देषि सकल भय भीत कै भागि चले दि
सि चारि ॥ एको की चक कै ठिगे रहे न नरु अरु
नारि ॥ ८७ ॥ चौपई ॥ की चक भागे सब प्रकुलाई
रह गंधर्व पड्यो आय ॥ तोटक ॥ डुम धाई हमे
नर विर किते ॥ अव लोक भजे रन सर सजे ॥ नृप
कै नर सुसकेलिसकेलिस चितान चछापि ॥ ८८ ॥
रजित रह्यो भूप सुजाय करत रवर सै गधो ब
ले जित थल पहा चो प्राय ॥ ८९ ॥

कीचकहोतहिघांसवै सुधिलीजियेजुतहैजा
यअवै ॥ ६२ ॥ नकह्योकछूसंभ्रमभूलिरहे मुष
तैंकछूवैननजातकहे ॥ सवकीचकभीमजरायद
येतरुनीउरआनंदकोटिठये ॥ ६३ ॥ दोहा ग्रहतन
पछइशेपदीआपगयोसरपास ॥ न्हायघोपपह
रेबसन ॥ आयोआपअवास ॥ ६४ ॥ सरवरतटडु
मडारिकैं ॥ आयोभूपतिकेत धाईधाईनरनारि
सब ॥ वृत्तकैकैहेत ॥ ६५ ॥ चौपई ॥ तजयंतकह
घोसबभाई ॥ कोगंधर्वपहोंघोआई ॥ ताकेहाथ
कहाहथियार ॥ सोसबवर्नउताकोसार ॥ ६६ ॥ भी
मदंडक ॥ आयोबीरअसौकोऊगंधर्वअनैसो
गिरिमंदिरहेजैसो कानवरनिवतावहि ॥ हाथमें
तमालकालदंडतैकरालवाजु देखियेविसालम
हाकालकालगावई ॥ भारेभारेकीचकसंधारेमे
रेदेषतहीभाजैहूनबीरभाजिजानिकोउपावही
मोहिवुधिआईएक ॥ कंदरामैंपाईदेखौत्रिभुवन
राईविनाओरकोबचावही ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ नीचैउ

विजे०

॥१०४॥

परिकाटदैं कीचक दीने जारि ॥ आयौ बीरक गलत
हां ॥ जहां सुजानि नारि ॥ ९८ ॥ दोधक ॥ ताके कांन मां
नक छुक छौ ॥ हो स संकत हां वैठि रह्यौ ॥ देखत सो उठ
गयो ॥ प्रकास ॥ उरि गयो दुम सरवर पास ॥ ९९ ॥ सुनि सु
निस वही ॥ अति भैं मां नी ॥ दिबी करि कै गनी सुजां नी
अरु गांधर्व भक्ति उर राषे ॥ निस दिन नृप सेवा अभि
लषे ॥ १०० ॥ पौ चो ॥ बंधव कालहि पाय ॥ भये ये कथ
ल सब जन आय ॥ हरषे भीम सेन गुन गाय ॥ कोउ स
कैन भेद हि पाय ॥ १०१ ॥ इति श्री महाभारते पुराणे वि
जय मुक्तावली कवि श्रुत विरचितायां कीचक वध
नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥ चौपई ॥ उर जो धन नृ
प इह सुधि पाई ॥ कीचक कीहि मारे सो भाई ॥ मोउर
उपजत इह संदेह ॥ भीम कसौ है कारज रह ॥ १ ॥ ५
र जो धन ठवाच ॥ तो मर छंदा ॥ ॥ सुनि हत तिहि थ
ल जाउ ॥ इह सुधिलै फिरि आव ॥ तब भूप आयु स
पाई ॥ पहौ चो तहां सो जाय ॥ २ ॥ लहि भेद बात वना
ई ॥ तिन कही नृप सों लाय ॥ सतह ने कीचक राई कि
छू भेद तां निन जाय ॥ ३ ॥ नहि पंड सुत तिहि ठाउ ल
हिये कइ नही नां उ ॥ तब हत बीन यो येहु ॥ नृप के

॥१०५॥

भयौ संदेह ॥ ४ ॥ भूपति करि संदेह मन बोली भीषम फे
न ॥ पुर विराट की चकवधे ॥ कहि धौं कारन कौं ज ॥ ५ ॥ भी
षम दिवा क्यं ॥ की चक कौं संधारि हे भीम विना कौ
और ॥ किते दुरद समता हिवर सुभट नि कौ सीर मोरि
ह ॥ सुसर्मा ॥ दोधक ॥ भूपति और बीचार नि की जे
मो संग सैं न कधू अवदा जे ॥ जो हरि कै सुरभी हम ल्या
वे ॥ हो हित हांस बपंडव आवें ॥ ७ ॥ वे सुरभी न हरि स
हिरैं हैं ॥ लागि गुहारि चले तहां अहे ॥ भूपति संग च
मूसवदां नी ॥ बेगि बिदाति हि औ सर की नी ॥ ८ ॥ तो
ठक ॥ नाना हचमूसव साजि चले ॥ चतुरंग वने सब
सर भले दिसि उत्तर आय मही पगये ॥ वन विधि नि
विधि नि दूर लये ॥ ८ ॥ दोहा ॥ कोपि सुसर्मा तव गयो
उत्तर दिसि उत्ताल ॥ तत छिन नृपति विराठ के हरे धे
नु के जाल ॥ ९ ॥ भुजंग मप्रयात्र ॥ किते गवाल वांधे
सुसर्मा जहां ते ॥ किते जीवले ले भजे हे तहां ते ॥ किते
आय हि कै भूपहि प्ये पुकारे ॥ किते धेनु के ब्रंदली ने
ती हारे ॥ १० ॥ चले सैं नलै बीर जो आप भाषो ॥ कि धो

विज्ञे
१०५

आप ही जाय के धेनु राखो ॥ तबै भूप सो चै कहामंत्र
कीजि ॥ रहै आपनो बोल सौ दाउ दीजे ॥ ११ ॥ दोहा ॥
कीचक कौ सुमरै नृपति ॥ इह कहि वारंवार ॥ बावि
नि सु र भी वे टिये ॥ को कहि लगे पुकार ॥ १२ ॥ हरये
बोले भूप तव सैन पलानों जाय ॥ धाई सुसर्मा बी
र तै सर भी ले ह्यू डाय ॥ १३ ॥ नग स्वपनी छंद ॥
नरे संधारि कै चले ॥ अनेक सूर ले भले ॥ कुरंग योत
राहे ॥ करी समूह संग रहे ॥ १४ ॥ महा काल जुध
में ॥ जुरेति विरयुध में ॥ न अस्त्र सौ कहो मेरे सव
र्म लेत हां जुरे ॥ १५ ॥ विजय ब्रहंड लघर रहे ॥ पंडु पु
त्र ते चारि देषत को तिग जुध कौ ॥ सकैन को ऊ
हारि ॥ १६ ॥ दोहा ॥ तवरन सुभट सुसर्मा को प्ये
भूप विराट नही पगरो प्ये ॥ भागत जंगनि दांधर थ
धर्यो ले करिताहि पयानो कियो ॥ १७ ॥ सहदेव
वपु ग्वाल के जे रिति नौ सिर नाय ॥ टे र सुस
र्मा हां कि दे ॥ फि स्यो तत छिन जाय ॥ के स्यो

मत करी दलता सको अंकुस दीनों जाई ॥ केरोवल
करि संघजों ॥ गह्यो को पिध सिधाई ॥ १८ ॥ चौपई ॥
तवे सुसर्मावल करि हास्यो ॥ पंडपुत्र सो धर नियस्य
स्यो ॥ मध्वजुह करि दल विचरायौ ॥ छोरि विराटहि
दल में ल्यायो ॥ २० ॥ जेरि छिकोति न माथ्यो नाथ्यो ता
की सेना बझ सुष पायौ ॥ लै सुरभी तन मन सुष पाई
चले आप ग्रह कौत वराई ॥ २१ ॥ उत्तर दिशि डुर जोध
नराई ॥ बैटि नई सुरभी सुष पाय ॥ करन डुसासन ओ
र भगदंत ॥ किते जुहले चले तुरंत ॥ २२ ॥ दोहा ॥ भगे
ग्वाल पुर आय कै ॥ बझ बिधिकरि पुकार उत्तरा
क्यों निश्चंत कै बैठ्यो सदन मजार ॥ २३ ॥ छप्पे ॥ हरजो
धनइक हरी हरि डुसासन बर करि ॥ एक करन कु
लिहरि कोपि सब आगे धरि ॥ हरी हरषी भगदंत की
पीली अरु धौली ॥ लखिन कवर कलिंग हरी के ति
कै एक गोरि ॥ हरी दोण सुरभी किति क्यों अवना
इह की जिये ॥ सुनि उत्तर उत्तर की दिसा सुसवते रो
धन लिजिये ॥ २४ ॥ तोटक ॥ करत कुलाहल गोरि

रिजात ॥ दीरघदीरघसुरकहीवात ॥ जैसे ध्रिक।
विजे ॥ हे जगमैजिये ॥ कहा कुवरत हारें हिये ॥ २५ ॥ **बस**
॥ १०६ ॥ खाच ॥ जो मेरै ढिग सारथि कै तो ॥ तो कहि कोरव
को दल के तो ॥ ताविनु कै सैं कै रथ वाहैं ॥ घे डोयातें
नृप को चाहैं ॥ २६ ॥ **दोहा ॥** उपद सुताए वचन सु
नि अर्जुन सौं हरवाई ॥ कही सकल जुत साहसे
इह विधि कै अकुलाई ॥ २७ ॥ **अप्ये ॥** अत्री जु
उरायर है जग कर्म ब्रथा सव धर्म अगारथ ॥ काज
त्रिया विज गायन के वर देत ॥ अभै पद जीति कै भा
रथ ॥ तस सवाय उरायर स्यो कत चाउन चित्त क
हाइ कै पारथ ॥ काहे तैं आप हस्यो हठि वैठि सु।
कौन ॥ करै उठि उत्तर सारथि ॥ २८ ॥ **दोहा ॥** उ
तर सौं तव ही कही विजे ब्रहंड लवात ॥ कौन जु
की वात कौं हरषत है हठि गात ॥ २९ ॥ पारथ सार
थ मै कीयो जानै रथ हों वाहि ॥ जहां होत हों सा
रथी कहौ कहा उरताहि ॥ ३० ॥ भयो ब्रहंड लसा
रथी रथ आरुह्य कुमार ॥ सजि कै दल लीनों घ

नों को पिक स्यो कर बार ॥ ३१ ॥ **उसखाच** ॥ औ सोर
थ अवहां कित ॥ तुरत तहां चलि जांऊ ॥ हनौ सक
ल सतबंध वन वचन को रवना व ॥ ३२ ॥ **तोटक** ॥
तव सारथि वर करि रथ हां क्यो ॥ औ घट घाटन का
न न ता क्यो ॥ कौरव दल लखी सीधु समांन ॥ लखि
उत्तर घटरहे न प्रांन ॥ ३३ ॥ गाजत सिंधुर अति हय
ही सत ॥ माचो मार करत भट दी सत ॥ उत्तर तव सि
न वे कर जोरि ॥ सारथि फिरि ग्रहत न रथ मोरि ॥ ३४ ॥
बार बार सो विनती करै ॥ एको सारथि चित्त न धरै
रथ तजि सो भाण्यो अकुलाई ॥ धाई पथ्य पक सीधो
सो जाई ॥ ३५ ॥ बांधि धस्यो रथ उपर जाई ॥ सनमुख
चल्यो सैन के धाई ॥ तब गुरु द्रोण पथ्य पहि चान्यो
सब ही सोइ हवै न बघान्यो ॥ ३६ ॥ **सवैया** ॥ बांधि
रथी रथ आनि धस्यो जिहि आयु न संकनि संकष
रीसी ॥ साईर संयम को अवगाहत प्रापु भुजा ब
र पै जघरीसी ॥ बान सरासन सरस जोइ हवै न भ
ली क्यूं मैं न हादीसी ॥ पौन के गौं न हूं तैं अतिल

विज्ञे०
१२७

घव-प्रावानेसूततअर्जुनकीसी॥३७॥**दोहा**॥ उ
सरसौसारथीकहीकरनकधूमयअंक सकल
निपातौ-अरिचमूरहिए-प्रापनिसंक॥३८॥ नगर
निकटतरवरसमितापरधनुअस्वान॥-प्रानिउ
तायलमोनिकटगंजौअरिदलप्रांन॥३९॥**दोहा**॥
वेनसुमौउठिउत्तरधायोवेगिहीताइमकैंतटप्रा
यो॥लितहीपन्नगसेसरदेये॥संभ्रमचित्तमहाति
नलेये॥४०॥ सारथिकौतववैनसुनायौ॥ब्यालभ
येइषमोकहु-प्राए॥योसुनिकैंतवसोउठिधायोवां
नसरासनलेतहांधायौ॥४१॥**दोहा**॥ निर्गुनधन
गुनवंतकरिसुधेकीनेवांन॥काटीगंगाभूमितें
धोयेसकलक्रपांन॥४२॥ पहरिकवचसिरटोप
देंकरीधनुषटंकार॥हांकौरथवज्रक्रोधकरि
पहुच्यौंकटकमजार॥४३॥ वीरधनुर्धरधीरकैंउ
रमैंकजुनसंक॥भटदुरघटघटसबकटककौर
वकैंआतंक॥४४॥**चौपई**॥ वैढनौ-प्रांनिध्वजाह
नुमंत॥जाकेवलकोकधूनअंत॥सूखोसंषध

नषटकास्यो ॥ जीतनर्जुनदलपागंधास्यो ॥ ४५ ॥

उत्तरवाच ॥ मोसों कहन ब्रहंडल आन ॥ सत्य कहो
को आपनिदानं ॥ अर्जुन उवाच ॥ सुनिये उत्तर ए स

त्यभाऊ ॥ जेरिषिभूपजुधिष्ठिराउ ॥ ४६ ॥ हैं अर्जुन
इह सुनिये कुमार ॥ भीमजयंतनुम्हारी स्वार ॥ सहदे

वसुभीराषतसेन ॥ बाहकनकुलमनोंमहिमेंन

४७ ॥ दोहा ॥ बहरानी है दीपदी जाहि सुजांनिनांम
कष्टून भयचितकि जिये सवजितौ संग्राम ॥ ४८ ॥

हमहीलगी सुरभीहनी ॥ लेत हमारी सोध अवसु

निधाति सो अवधि ॥ तबमैं कीनौ क्रोध ॥ ४९ ॥ कि

रि उत्तर लाग्यो चरनि ॥ सुनिसाई सत्यभाई ॥ दसों

नांम अपने कहैं ॥ तोमो मन प्रतियाई ॥ ५० ॥ अ

र्जुन उवाच ॥ जनम्यौ क्यौं हरब्रह्म तन ॥ अर्जुननांम

बषांनि ॥ सितवाहन अरु फालगुन ॥ कृष्णजि

ह्म उरजांनि ॥ ५१ ॥ विजयकिरीटीनांम मो अरु

विभत्सहिजांनि ॥ सत्यसाचधनंजई ॥ एदसनांम

बषांनि ॥ ५२ ॥ चौपई ॥ भीमसेन सवकीचकमारे

जि०
॥ १०८ ॥

लषि अपराधीति संघारे ॥ मासौ मध्वदुरदगदि
लायो ॥ तिरेग्रहहमवज्ज सुषपायो ॥ ५३ ॥ तिरे आय
बिपति सबटारी ॥ वर्षदिवसकी प्रवधिनिवा
री ॥ द्वादशवरेष्वेव नमहरहे ॥ तव ध्यायामि अति सुष
लेहे ॥ ५५ ॥ विराट् ३० ॥ हलकी भारी जोहम कही
समरथ आपन सो सब सही ॥ जो कछूहम तेन
भयो अपराध सो सब धर्मियो आपन साध ॥ ५५ ॥
॥ दोहा ॥ वीर धनं जय क्रोध करि च लै सो सब तर
थहां कि ॥ प्रतिवर परै तुरंगत व अमित रहै त
वथां कि ॥ ५६ ॥ तेज दीयो गंधर्व तब फिरि वरम
रे तुरंग ॥ कहि क्षीण गुरु पथ्य सों कौन करै रन रंग
५७ ॥ दोहा ३० ॥ आयो धनुर्धर धीरवली सुकहो
अवरण स मुषको अबरहे ॥ जु वज्र सो नही
नैक कसो जम पायगयो मष तौं दल घेहैं ॥ या
ही तैं सो चव घो उर अंतर को कहि धो वरवान
न सैं हैं ॥ कोरि उपाय करौ तुम पारथ जी त्यों
जैहैं न जैहैं न जैहैं ॥ ५८ ॥ सौरा ॥ बाट कली

॥ १ ॥

यो कलिंग जीतन पारथवीरकों ॥ की यो को
हिरनरंग ॥ अचल मेरु सौरन रुप्यो ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
पथ्य सहसद सबांन सों हन्यो कोपिकै बीर ॥
मूर्छित गि स्यो कलिंग रन ॥ धरन सक तरन धीर ॥ ६० ॥
जब कलिंग मूर्छित गि स्यो तब विकरन रन गा
जि ॥ कोपि सरासन बांन ले आयो सन मुषसा
जि ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ तब विकरन बांन तीस पक्ष के
हिये दिये ॥ विसेषि बांन दृष्टि सों सलोप सरकै
गये ॥ न जानिये दिने सद्यो स अंधकार सों छये
सरोष पंड पुत्र के कृपान कोपिकै लये ॥ ६२ ॥ त
ब विकरन चालीस सरहन्यो कोपि वलवंड ॥ को
रि बांन न भघाई कै संग्राम कियो ॥ अषंड ॥ ६३ ॥ त
ब विकरन साहस सहीत भूमि गि स्यो मुंकराय रनाय
निरष करन वरि बीरत बली नो धनुष चढाय ॥ ६४ ॥
रन अर्जुन के नैक डु सहिन सक्यो सो बांन ॥ रन
मंडल तजि सो भयो रवि सुत तेज निधान ॥ ६५ ॥

॥ श्री ॥ चौपई देखे करन महा बल भारे ॥ हसासन
॥ १०२ ॥ भादंत स म्हारे ॥ दुर जो धन सत बंध वधाये ॥ च
हं दिस घेरि पण्य कौ आये ॥ ६५ ॥ सुंदरी ॥ नीर
द घेरि हे गिरि कौ जनु यौ चहुं ओर नि ते भट अ
जुन ॥ को पित बीर घने सर डारत ॥ एक लै लै
गिरि के गन गारत ॥ ६६ ॥ ले करवान निषथ उ
ठौ तव मारि भाग्य दये वर कै सब ॥ भागत
सर नहि फिरि देरत ॥ ते रन भूमि घिरै न ही घे
रत ॥ ६७ ॥ सुंदरी ॥ अह यत्न न ते एक कठे
सर देखत ही लघि एकर पे सौ ॥ आवत ही मृ
ग जूथ निउपर ॥ को पिउ ठौ सुत के हरि कै सो
सेहि करे भट बेधि सबै तिन ॥ ओर कियो वर वि
क्रम असौ ॥ काटि दिये धुज बैरख चौर विधा
य दयो कदली वन जै सो ॥ ७० ॥ भुजंग प्रयात्
ज वै पण्य के को धतै वान घूटे ॥ किते सैन के
अह के सी सफूटे ॥ गर भागि के एक पाये

नचाहे॥ कटे एकते जानु जंघा नुचाहे॥ ७१॥ म
हाक्रोध के कैंधनै वामसांधे॥ ससो के किते वी
र के जूझ वांधे॥ घूटे मोहनी वांन सों सर्व मोहे
कहां लौ वधानों न मेहे सुकोहे॥ ७२॥ चौपई मो
हिर ह्यौ दल संग्रम भारी छाई॥ एक न भीषम मो
ह्यौ जाई॥ उत्तर पठ्यौ तवै पचारि पट भूषन सब
लप्याव उतारि॥ ७३॥ गीतिका॥ सीस भूषन सैन
के नृप आदि देखे सब के हरे॥ आनि कै तिहि वार
उत्तर पथ्य कै आगे धरे॥ जागि कै कुराज लजि
त वांन धन गहि कर लियौ॥ धाई भिषम वरजिराष्यो
प्रगट नासौ यौ कियौ॥ एक पथ्य अने कजांनौ जु
ध जीत नही सकौ॥ लाज कै है वीर भागत चित्त में
रहवा त कौ॥ विकल कै बिलषाई विथ कौ कछू
नही भूषतैं कही॥ बाल ज्यौ लै स्वास वचन घन
से उर सही॥ ७४॥ दोहा॥ भीषम आयु समानि कै
दल ले चल्यौ अवास॥ धावन धाय गयो तवै नृपति
विराट के पास॥ ७५॥ हसासन उवाच॥ जीति उत्त

विजे०

॥११०॥

र-प्ररिचूं कौखगणपराई॥ सतसप्तकीनी
विजेभागतिहारेराई॥ ७१॥ चौपई॥ भूपतिछे
लतपासिसारि॥ संगलीयें जैरिषि सुषकारि ह
रप्रौसुतकी कीरति गावें॥ सवजनमन आनंद
वढावै॥ ७८॥ राजोवाच॥ विजेब्रहंडलहोइजहै
सोकतजीतौ जाई॥ जुद्धजुरै संयांमथलजमहु
दयेभगाई॥ ७९॥ चौ०॥ इतनी सुनत भूपपरज
स्यो॥ रातेदगकरिवहुरिसभस्यो॥ ततछिनहि
नरनाथविराट॥ पासौ जैरिषि हयोललाट॥ ८०॥
छूट्यो रुधिर सोपदी धाई॥ आंजुलमैतिनली॥
नौ जाई॥ नीरषि भूप उरचिंता मां नी॥ क्यो नक
है इह भेद सुजांनि॥ सुजानि वाक्य॥ भूतल रु
धिर पस्यो जो येह॥ द्वादस वरषन वरसै मेह॥ यो
कहि कै भूपति समूजायो भीमसेन कै उर दुष।
आयो॥ ८२॥ दो०॥ ओधभयो लषि भीम उर
धर्म पुत्र दै सैन॥ वरज्यो के हरि छुधित सो जुक्त
कछू रह है न॥ ८३॥ ध दोधक॥ उत्तर गेह त।

हीचलिआये॥ भूपतिकोइहवै नपुनाये॥ आ
जुब्रहंडलहीदलजीतों॥ कौरवकोवक्रधाव
लरीतों॥ ८४॥ सूरभगायदयेसगरेयों॥ यौनवि
हारतमेघघनैज्यों॥ मोंनहिभूपतिधामसिधाये
उत्तरभीतरकोलियठायों॥ ८५॥ जुधकथासग
रीसुनलीनी॥ सारथकीसरजालप्रवीनी॥ अ
जुनहैजीनकौरवमारि॥ द्योसइतेइहिठांऊं।
निवारि॥ ८६॥ दोहा॥ धर्मपुत्रनरनाहसोंअ
जुनकोल्येंवैन॥ जांनेहमसवकौरवनिअव
कष्टचिंताहैन॥ ८७॥ तेरहवरषद्योसदस।
बितिगएइहिगंड॥ अववैठौसिरछत्रधरिगु
प्तकरौकतनांभ॥ ८८॥ सवैया॥ पायकैत्रास
अवासतजेवनवाससजेदुषसाधनासाधी
नैकहूं सोचसकोचकरोनहिकानिसवैकुर
नंदनबांधी॥ भूषनप्यासउदासमहागतिजो
गकेंजोगनिकीअवराधी॥ आयुसदीजिये
आपमहीपतिलैहिभजावलसोंभवआधी॥

वि०

॥ ११ ॥

८९ ॥ दो० ॥ प्रात होत सिरछत्र धर धर्म पुत्र सु
षपाइ ॥ दां नदी यौक विछत्र कहि ॥ छिप्रहि
विप्रबुलाई ॥ ए० ॥ बंधव आस्यो जोरि करि
छाडे भये सुजांनि ॥ कारन सब ही का जे के का
जे का हि समांन ॥ ९५ ॥ नहि वाहन हूं आरुहे
उत्तर सहित विराट ॥ नृपति जु धिष्टि स्वरन
पर राख्यो आंनि लिलाट ॥ ९२ ॥ विराट सोर
ठा ॥ टिठई भई जु होइ ॥ सो छिमिये करि कै क्र
पा ॥ भूप वडे जो होई ॥ चकन मांन त ज न न का
९३ ॥ चौपई ॥ धोषै तुम पै सेव कराई ॥ सो अव
छेक कहि नहि जाई ॥ ओ छिष्ट रिमन न ही
धरीये ईसी अनुग्रह हम कौं करिये ॥ ९४ ॥ जु
धिष्टि रठ वाच ॥ तो सो तुही न हूरो जग मंडल
मे आंन ॥ विपति हमारी सब हरी ॥ राखे पुत्र स
मांन ॥ ९६ ॥ चौ ० ॥ तुम पटत रको दिजे आं
न ॥ अरिन न कै है अपनं जांन ॥ तुम हम कौंस

वकीनीभली ॥ तुमकीरतिसवभूतलचली
२६ ॥ नितिवितिनेहदीसीहैनर ॥ अबतुम
भुजाहमारिभए ॥ जीतिसमरसुरभीजेआनी
जितनीजितनीजाकीजांनि ॥ २७ ॥ तेसवता
कीताकौंदानी ॥ सवकीविदामहीयतिकीनी
दुरजोधनसंदेसपठायो ॥ भूपजुधिष्टिरपैचलि
आयो ॥ २८ ॥ दो ० ॥ प्रगटेभीतरिअवधितु
मफेरिकरौवनवास ॥ मितिसोहरनकीजिये
तवतुमकरौअवास ॥ २९ ॥ कहीसवविधिम
लमांसकीसमगायोसोदूत ॥ समदिताहि
बैद्योतहां ॥ योंसुरसरपुरऊत ॥ ३० ॥ इतिश्री
महाभारतेपुराणेविजयमुक्तावलीकविष्णु
विरचितायां ॥ अर्जुनविजयवर्णनं नाम चतु
र्विंशतिमोध्यायः ॥ ३४ ॥ छि ॥ दोहा ॥ उत्तर
सौकीनोंमतौनृपविराटतिहिंवार ॥ दुहिता
दाजैअर्जुनैकरिविवाहसुभचार ॥ १ ॥ दोधक
अर्जुनताकहनृत्यसिषायो ॥ द्यौसनिषाण

विज्ञे०
॥ ११२ ॥

नतासहपायौ ॥ ताकहसोडहिताअबदीजे
जीमैऔरबिचारनकीजे ॥ २ ॥ यो कहिकेंति
नहतपठायौ अर्जुन कौं इहवैन सुनायो ॥ तो
ई सुतानपआपनीदीनी ॥ हेतविवाहसवेवि
धिकीनी ॥ ३ ॥ **अर्जुन उवाच ॥** मेंडहितासम
जांनियठाई ॥ लाजतुहैनहिभावतआई
मोसुतकौं डहिताइहदीजे ॥ आनंदसों सब
कारजकीजे ॥ ४ ॥ भूपतियो मुनिकें सुषपा
यो ॥ वूमिमहूरतमंगलठायो ॥ गावतआनं
दसों नरनारी ॥ भूपजुधिष्ठिरकौ सुषभारी ५
॥ **दोहा ॥** हतवारिकानगरकौं पठरावडसु
षपाई ॥ वारनलागाई बाटमें ॥ कहीरुक्ष्म
सों जाई ॥ **राजा युधिष्ठिर उवाच ॥** संदेसो हत
हाथि पठायौ ॥ सवैया ॥ दीननिकेनेहनहेडोल
तहै गहेगहे प्रोपदीकी लाजवहे ॥ अैंसैं कौं ना
बहतौ ॥ तातमांतपासपहलादकै निरासहे

जोनहोतीतेरीआसत्रासकेसैंसहतौ॥ ओक
आदिआपनौंसुलोककियोलोकलोककौंन
भांतिथिरथोकध्रुवलोकलहतौ॥ त्रिभवनराई
जोपेहोतेनसहाई॥ आपकैसैकैधौमेरोका
जऔरलौंनिवहतौ॥ ७॥ दोहा॥ करिआएहो
करतहोकरिहोसदासहाई॥ सहितमातुअ
भिमन्युलैआपपहुंचिबीआई॥ ८॥ चलेक
स्मभगनीसहित॥ लैअभिमन्युहिसाथ॥ च
लेतुरतसुषपाइकै॥ धरमसुवननरनाथ॥
मिलिकैंसारंगयानिकौलैआबेनिजग्रेह।
स्तुतिबंधुनिसंजुतकरी॥ मनवचकर्मकरि
नेह॥ १०॥ जुधिछिउवाच॥ श्रीजडुनंदनमु
जिजनवंदन॥ कल्मषहरसवडहनिकंदन
जगत्पारनवकवदनविदारन॥ इषटारनगज
राजउधारन॥ ११॥ जगपावनिसंतनिमनभाव
नि॥ ब्रजआवनगिरवरनपल्यावन॥ जनमन

दोहा॥ दैसो बो समदी सुता हरषे भूपविगट ध
मे पुत्र सुषपाई कै॥ लसित अनंदित पाट॥ २५॥
गजा युधिष्ठिर उवाच॥ सुनि अर्जुन गुन ग्राम ले
गिबुला उमया सुरे॥ वल सवार दुधां मषचि
षचिरचिरचिजां लमनि॥ २६॥ चौपई॥ तव पा
थ्य मया सुरवो लिलयो॥ बहु भांति न कै वरु स
य्यो॥ प्रतिधाम निचि॥ त्रिविचित्रक स्यो रंग
रंग नई गुरवां न ठस्यो॥ २७॥ अतिदासत उज्जस्ये
त अटा॥ इक नील वने जनु घोर घटा॥ उपमा कवि
कों न वर्षा न कहै॥ निरखै नर कौ तिग भूलि रहै
२८॥ इव प्रदुत वाहिर सो भसने॥ नय के हरिहि
वेहित धां मवने॥ तहां वैठत भूपति नित्य सभा
अमरावती मोहित देख प्रभा॥ २९॥ पुर अंत दुधां
मस सो भाग है॥ रन वास जहां सब वां मर है॥ ह
यही सत वार न गाजत है॥ निशि वास उंद भी
वाजत है॥ ३०॥ भुव भूप सभा सुषसाजत है॥

वि०

॥ ११४ ॥

वज्रभीरतहांदरवारहे ॥ कहिकोकविता ॥
हिवषानिकहे ॥ ३१ ॥ इति श्री ॥ अभिमन्युवि
वाहराजधामवर्णननामपंचविंशोऽध्यायः ॥ २५ ॥
तोटक ॥ सोमवंसधर्मपुत्रसक्रसोसभालसैं वा
रिवंधदेविसेविलोकिडुष्पकौनसैं ॥ अंजुली
नजोरिजोरिरुहसोंविनैकरै ॥ सोधिकैंजा
हांतहांविपतिजीवकीहरी ॥ १ ॥ अर्धदेसपाइ
एविचारआपसौकरो ॥ ज्योहरेअसेषसोक
लेसहेहरो ॥ देसतैनिकारिअंधपुत्रकांनिन
करी ॥ धामग्रामष्ठीनिष्ठीनिसंपदासवैहरी
२ ॥ दोहा ॥ करिआयेहोकरतहो ॥ सेवकसदा
सहाउ ॥ करीवंदनाह्मकीधर्मसुवनभुवरा
उ ॥ ३ ॥ राजायुधिष्ठिरउवाच ॥ चौपई ॥ कष्ट
पचपुबरसायरथाहन ॥ मंतसरूपसंघासुरदा
हन ॥ वंदनमुनिजनसनकसनंदन ॥ जैजैजै
तुमजैजागवंदन ॥ ४ ॥ सुकररूपरदनधरनीध

विजे०

॥१५॥

र॥ बरहिरनीष्टिपत्तिप्राननिहर॥ भूतल
षलदत्तदुष्पनिकंदन॥ ५॥ नरहरिवपुहितभ
गतसवारन॥ हिरनाकुसनषउदरविदारनके
टिककष्टहर्नजगफंदन॥ जैजैजैतुमजैजग
वंदन॥ ६॥ श्रलवलवरपातालपडाउन॥ वाव
वपुधरिभूतलिआवन॥ काटतसुवमायादुष
दंदन॥ जैजैजैतुमजैजगवंदन॥ ७॥ फरसपां
निश्त्रियमदनासन॥ रघुकुलकमलदिनेस
प्रकासन॥ रामचंद्रसरथनृपनंदन॥ जैजै
जैश्रीजैजगवंदन॥ ८॥ कंदकुटिलअसुरन
काभयहारी॥ केसीमर्दनअरविहारी॥ पात
बसनतनवर्चितचंदन॥ जैजैजैश्रीजैजग
वंदन॥ ९॥ बोधसरूपपद्मिपरिधरिहो
कलिकाकैअनिसंघरिहो॥ वर्णतवदित
षत्रवकुषंदन॥ जैजै०॥ १०॥ दोहा॥ विनय
मानिकैकरिकपाडुरजोधनपेजाई॥ समुगा

ये वह विधि निकैं वचे गोत को धाउ ॥ ११ ॥ चौ०
विहसि कसमत बहि उठि धार ॥ नगर हस्त नापु
रचलि आयि ॥ सुनिकुरु नंदन अनुज यथार स
भामधपलै कसमहि आरा ॥ १२ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

धर्म पुत्र तु मया सपथायो गोत विरोध हि मे टन
आयो ॥ भूपति जगमें यह जसली जैं ॥ आधो देस
वां टिकैं दी जैं ॥ १३ ॥ अपने कुलहि कलंक न ला

वो ॥ कलह गोत को भूपवचावो ॥ इजो धन वो लो
अकुलाई ॥ कैसैं सकों कले सबचाय ॥ १४ ॥ देसा

वां टि जो उनको देह ॥ जोगी द्वै कपाल हमलै हैं भू
मि वां टि कित मोयें पावै ॥ जो वेन भभूत लफिरि आ

वै ॥ १५ ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ और भूमि भूपति जिन
देह ॥ पांच ग्राम दीजे करने ह ॥ तिल पथ बाग इं

द्र पथ लीजे ॥ अरु सुनपति पां नीपति दीजे ॥ १६ ॥
इजो धन उवा ॥ दोहा ॥ सचि अग्रतीतनी कटै सो क

वहुन हि देऊं ॥ पीछे भुव वै ईल हैं ॥ प्रथम जु धकरि
लै ह ॥ १७ ॥ चौपई ॥ तुमहि कहत इह कै से आवै

विज्ञे०

॥१६॥

जीवतमोहि को धरनी पावै ॥ सुनि सुनि वचन जर
तै गात ॥ डिप्रत सुनै रह अद्रुत वात ॥ १८ ॥ कृष्ण
० सवेया ॥ ओक मै सोक समूह वितै ॥ अथ लोक
महा अपने सिर लेहो ॥ केलि सकेलि महा दुष मे
लि हो या गातिये लिकै ॥ ओज सपै है ॥ उपाई कै व्या
धिन लिजिये राई सु आइ परै तै हीयं पछितै हो सु
फिर ही रह कृष्ण कहित व आपु मही तव दै हो ज
दै हो ॥ २० ॥ कोपि कै ले श्वादा कर भीम सु पथ्य धनु
ईरवा न निवां है ॥ बंध समेत तहो सह देव सुसा
य संग्रम कौं अवगा है ॥ बैठि धनु हनु वंत वली
रन गाजि उठै रहत मन चाहे ॥ औ सोई भावत है
जिय सुँगां नै को ते रौ कहा मन साहे ॥ २१ ॥ वि
ह ॥ कृष्ण उठै रावचन सुनि कहि ॥ तिन को इ
ह समुजाय ॥ भावी सो कै सै मिटे ॥ को कहि स
केव चाय ॥ २५ ॥ नगर हस्त नापुर तवै कौं ताप जं
बी आई ॥ समाचार श्री कृष्ण जू कहै सकल स
मजाय ॥ २२ ॥ इरयो धन मति परि हरि दे तन चाखोयो

म॥ देवेकी कहिकहा चली॥ श्रवण सुणत नहि नो
म॥ २३॥ एक वातकी भय भई कर्णहि बाधो नव
मारिले हुराह करत है॥ जीतौ भारथ सबे॥ २४॥ जा
ह॥ आपतुम कर्ण पै ल्यावौ अपने ग्रेह॥ कुसल हो
यतुम सुतन की॥ वाटे अहुत नेह॥ २५॥ कर्ण पास
कोंत भाई उनि उठि वंदे पाई॥ करि आदर आस
न द्यौ चेहे सब सुष पाई॥ २६॥ कोंता वाचा चौप
ई॥ जेरो सुत तुतेरो राज॥ लेऊ सकल ग्रह चलि य
आजु॥ हस्यो कर्ण माता मुख चाहि॥ इह सब वात
अवृत्ति आहि॥ २७॥ अवतुम राज हमारो दास्यो
यालि मजु साजल में रास्यो॥ तन पोष्यो डुर जोधन
छांह॥ अब कित डारत नरक न मां ह॥ २८॥ कों
ता उवाच॥ जो न चले सुत करि कै नेह॥ एक वां
त तो मां गै देह॥ मो पुत्र नीकों करि न प्रहार इह
सब करौ दया कौ सार॥ २९॥ सुनि सुत मेरे बचन
विलास पांचवां न जो तेरे पास॥ जननी कों करि
कै हित देई॥ यामे जगत विदित जस लेई॥ ३०॥ क

विजे०
॥ ११७ ॥

लीउवाच॥ - युवहितपरहरों एकपथ्य
सोंहौरनकरा॥ औरनकोंतहिघालेंघाडे अब
मांताअपनेंघरजाडे॥ ३१ ॥ दोहा॥ दीनेपांचौवां
नकरिकोंताकोंतिहिकाल॥ विदाकरीपागचंद
नेतवैकरणभुवपाल॥ ३३ ॥ इहसुनिकोंताआ
ईतहांत्रिभुवननाथकृष्णहेजहां॥ करणकही
सोवर्णसुणाय॥ इहविधिकैसवनिसानसा
ई॥ ३३ ॥ दोहा॥ प्रातहोतश्रीकृष्णनूदुरयोध
नकैंपास॥ गएफेरिहितसंधिकैंश्चत्रसुबुद्धि
अवास॥ ३४ ॥ कह्येहमारोकीजियेपांचग्राम
किनदेह॥ बंधुरएकसौपंचसौंनिसिदिनवटै
सनेह॥ ३५ ॥ दुखयोधन०॥ नितिउठिउसलेसा
लहरिकतहिसलावतआनि॥ करोंअयांउब
अमिसबकरौनकुलकीकांनि॥ ३६ ॥ श्रीकृष्ण
दंडक॥ कोपिकोपिभीमभुजारोपिरैनमां
ह॥ ओपिओपिमुषगदालीनैंगलगाजिहै
रोसहियेआनिआनिक्रोधधनुतांनितानि॥

लेकै पथ्य पांनिधनु क ॥ ३८ ॥ धि है अश्व
नी कुमार के कुमार की नकी हक मुनि धीरन
धरोगे वरपोरि ससौ भाजि है ॥ गर्व ही अरु
मंत्र मूढ तन जांनै कष्ट ॥ चेति है तू मूढ जव प्रा
ई मुंड वाजि है ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ इह मुनि सकुनिस
रोष कै कहि नृपति सौ जाई ॥ कहा कांनियों की
करौ वांछिले दु सुष पाई ॥ ४० ॥ साव मिलि कै वा
हत कियौ वनै नहि कष्टू वात ॥ विलेख भीम विदु
र तव विकल कै गरागात ॥ ४१ ॥ चौपई ॥ भीषम
विदुर विलोकित जानि ॥ बदन पस्यौ सारंग पानि सा
मुष भीतरि देख्यो ब्रह्म मंड ॥ संभ्रम छाग्यो चित्त
अप्रमंड ॥ ४२ ॥ छंद ॥ देख्यो गगन ससर चंद्र ताराग
न ॥ देख ॥ देखी प्रदुमिस नीर भूरि भूधर सविसे
ष ॥ देख सरिता सलिल सिधु सरवर जल संजुत
देखे तरवर वियनि सघन दुम उपवन अद्भुत ॥ अ
ग संजम तमातंग लषि अवलोके रिषि राजग
न ॥ अम भूलि विदुर भीषम रहे ॥ सिथल विकल

वि०
॥११८॥

कैसकलतन॥भीष्म०॥चौपई॥बलदुरजोधन
मरमनजांतत॥सिधत्रिभुवनपतिकीनहिमां
नत॥भूत्योभूरषन्नपतागर्व॥कुलकेकर्मतजे
तिनसर्व॥४२॥कैहेसौरचीकरतार॥भीष्मक
हतवारहीवार॥चल्योहृस्मन्नपकोंसमुगार्ई
पङ्कवेधर्मपुत्रकैआई॥४३॥श्रीहृस्म०सूष्टि
ममहितुमकोंनहिदेत॥उद्दिमलीनौभारथ
हेत॥विनाजुद्धवेकधूनदैहै॥जोरनजीतेसो
भुवलेह॥४४॥इतिश्रीमहाभारथेपुराणेविजय
मुक्तावलीकविषयविरचितेश्रीहृस्मदुरयोधनव
वादेनामषड्विंशतिमोध्यायः॥२६॥इतिविरा
टपर्वसमाप्तं॥अथउद्दिमपर्वकथा॥सुंदरी॥
वैठिसभासुतधर्ममहीपति॥बोलिलियेतहांहृ
स्ममहामति॥बंधवचारिविराजतताथलकों
नवषांनिकहैतिनकेवल॥१॥राजोवाच॥जु
द्धवचैहरिसोकधूकीजहि॥भूतलमेंबहुधा
जसलीजहि॥मोहिमांहामनमेंडरआवत

विग्रहहैं निसिधौ सबचावत ॥ २ ॥ दोहा ॥ वनि
आई सबकैं मत्तै लीनों दुपदबुलाई ॥ संधिकांत
कुराजपै दीनें तुरत पगई ॥ ३ ॥ गए दुपदनरना
हत बभ्रूपतिकौरवपास ॥ आदर कहि आसनद
यो बोले वचन प्रकास ॥ ४ ॥ इरयो धन उवाच ॥ गी
तिका ॥ कौन हेत मही पआये ॥ सो कहौ समुजा
यकैं ॥ पावन भये तुषदर सतै ॥ वहु सुषदी नौ आ
यकैं ॥ दुपदभूपतियों कहै जगमै महाजसली ॥
जिये ॥ नृपजुधिष्ठिर कौंधरा नृपवांटिकैं कष्टदी
जिये ॥ ५ ॥ नेहु कैं कुलकलहनां सो लेहुति नहु
बुलाईकैं ॥ सब आपनी मरजाद सौरहि है सदा
मुषपाईकैं ॥ लगी सरसी घात हह सो चित्त कष्ट
नही की जिये लावही ॥ कहत विनुरन कौन मोपे
भूमिरंचक पावही ॥ ६ ॥ तोन छाडो वरन सुरपति
आपुआं निवचावही ॥ कोनु धिष्ठिर भीमको है
वचन कै सेंपावही ॥ दुपद सुनि कैं सी सटो सौरखी
सोई करे है ॥ सोवचाई कौवचै मुकि क्रोध सो तब

विज्ञे०
॥११८॥

यो कहै ॥ ७ ॥ **दंडक** ॥ लोक में आप कष्ट अवलो
कन लीजि ॥ नलीजि नलीजियेजू ॥ चाहत भूष
मिनु धिष्टिरसु धिम ॥ दीजिये दिजीये दिजीयेजू
यो करिराज नि कंटक आपन कीजिये कीजि
ये कीजियेजू ॥ अत्र महा हितु कै तु ववैन याती
जै पती जै पती जीयेजू ॥ ८ ॥ दीजिये पंच उन्है ॥
अवग्राम न हिनृप की नृपता मिटि जै है ॥ बैठि
रहै तिन में सुषर्मानि ॥ जु धिष्टिर प्राप महा सुष
पै है ॥ जांनि अजांनि प्रमान कै मानि कि भूमि
अवै अपनै वलै रलै है ॥ बांन की धार में स्याप
रवार हितो हि वहाय धनं जय दै है ॥ ९ ॥ **दोहा** ॥
फिरि आयौ तव दुपद नृप नृपति जु धिष्टिर यास
दुरयो धन की कुमतिके कीने वचन प्रकास ॥ १० ॥
दुपद ॥ बुधिकै कै वक्रु चातुरी अरु कै कै बहु
ग्यान ॥ समजायो समजौ नही करि देखे सव स्या
न ॥ ११ ॥ हठि विराट पठयेत हां नृपति तीसरी वा
र ॥ समजायो दुरजोधनै बाचौ कलह अपारा ॥

१२॥ चौपई॥ नृपविराटवक्रुविधि कैकही॥ सु
श्रमसीकछूदीजेमही॥ वैसंतुष्टिवैठितहंरहे
फेरिकछूनहीतुमसोंकहैं॥ १३॥ दुस्योधन० कैहै
केंजगबावरोमागतधरनीआई॥ हनोयंडसुता
छिनकमें॥ कोअबसकैंवचाई॥ १४॥ हमसौरा
घोहेततुममतिभाषोयेवैन॥ जौलौंनियमेजीव
धरकहौंनतिलभरिदैन॥ १५॥ विराटा॥ सवैया॥ आप
बरावक्रुगोतकोघाउउतैंउनवारहीवारवराईदैं
नकहौंनहिआसिकयांम॥ कहामतिधौतुमकोंव
निआई॥ कौनीजुहोयजोहोयरहेनमिटैइहभ
पतिमेंमतिपाई॥ नीकीऔरबुरीविधि कोसव
कैकरताहरताकरताई॥ १६॥ चौपई॥ इनकही
बेमेकछूनराखीजेमुषआईतेईभाषी॥ कहक
रेकाइकैंहोई॥ हौनिमेटैसोकहिकोई॥ ७॥ आ
येनृपविराटठठिधांमकीयेकृष्णकोअमितप्रनां
म॥ कहेनमानतषलकछूवात सुनिसुनिबैनज
रतहैगात॥ १७॥ यईसुनिकृष्णविदातवभयेचलि

विजे०

॥१२०॥

कैनगरवारिकागर॥ मुधिरि नृपमनड
चिताई॥ वांचतसूनीहीलगाई॥ १८॥ दो

उतडुरजोधनअनुजनुतकीनेचित्तविचा

र॥ भीषमअरुआएविडुरवैठेसवपरिवार

१६॥ डुरजोधनवावाकां॥ **भुजंगमप्रयात॥**

वदोसोचतौआपनैचित्तकीजै॥ मतौहो

ईशरोपितामोहिदीजै॥ सदापंडकेपुत्रा

हैसालमेरे॥ तिन्हैनासकेजलकीनेघने

र॥ २०॥ कहौमंत्रजोजासुकेचित्तआवेहि

तुहोयसो॥ हेतुकीसीवतावे॥ गईतेरहेव

र्षएसुखमांहीरहेसालजाकेसोजीवैत्र

थाहि॥ २२॥ **भीषमविडुरउवाचा॥ सवेया॥**

एकसुनेनहीभाषीअनेकसुटेकसबैहै

कुटेवकीटेकी॥ ताकोभलौनभयोकब

हं॥ जिहिपैजतजीनहीआपुकहेकीयौ

समग्यौअपनेमनमेहठंरकीमांदिन

वांनिभलेकी॥ आदिदईकुलकीकरवी

॥२॥

॥१२॥

शहरातिलईहठिकेअववेकी॥२४॥चौपई॥
 भूपररहतनदीसैंकोई॥अमरएकजसअ
 पजसहोई॥हिरनाकुसअरुवाचगयोइ
 हधननाहिनकाहूकोभये॥२५॥कतअभिला
 षकाजसोंकाजे॥लोकविलोनअलोकन
 लीजे॥हानिहोयजीतैंअरुहोरैं॥जमुरहिहै
 नित्यवदनपसारैं॥२६॥सुनतवचननहिभूप
 हिभायो॥तवतिननियरोसकुनिबुलायो॥सो
 ईकरोजुमंत्रविचारो॥मोउरभाववचनतिहा
 रो॥२७॥सकुनि३०॥मेरोमतौमहीपतिकीजे
 नगरविराटबेगिलेदीजे॥जौलौंउनकैंनही
 सहाउ॥लेसवसेनांतिहिथलजांउ॥२८॥पांचु
 बंधुनिमारोंआजु॥सीफिजायतौसगरौकाज
 उपजतहीजोकोटेवाधि॥फिरिकतमरियेक
 तऔषधिसांधि॥२९॥दोहा॥अंकुरनिरषिक
 एषकोकपितोरततिहिकाल॥त्योंअपनेअ
 रिमिठियेकुटमसहितभुवपाल॥३०॥तोमरा॥

विज्ञे०

॥२१॥

सुनिमतमांनिभूपदलसाजा ॥ सकलबुलाए
भुवकेराजा ॥ सकिलेदलपद्मीनसमां हि
शरभएसवगिरवरजाहि ॥ ३१ ॥ आयेसोमदत्त
भुवराउ ॥ अरुभगदंतसवलदलभाउ ॥ तिनके
दलकीसंख्यानांही ॥ रथहयरथहाथीगनेन
जां हि ॥ ३२ ॥ सेनासत्यघोहनीतीन ॥ कोरथ
बाजिगनैकरीनि ॥ करनमहारथवंतपलामें
अगिनि तदलकलिंगतहांआंम्यें ॥ ३३ ॥ को
पिचब्रोदलआपुसुसमी ॥ कौनगनेरनअ
दुतकर्मी ॥ दुरयोधनद्वारावतीआयेआव
तश्रीहरिदरसनपार ॥ ३४ ॥ दुरयोधनउ०
करोसहायहमारेआप ॥ तोजगमेअतिहो
तप्रताप ॥ दलसजिचलोहमारेसाथ ॥ बारबा
रविनवैनरनाथ ॥ ३५ ॥ **रुह्यावाक्यं** ॥ मैतौस
वआयुधतजे ॥ अस्त्रगहौनहिहाथ ॥ कृतक
मीजादौदियो ॥ दलजुतताकैसाथ ॥ ३६ ॥ जादौ

॥२१॥

दलसजिकेचल्यो॥ सुभटचमूचतुरंग॥ सख
अखत्रनत्रानकसिकसेवमेसवअंग॥ ३७
तीनिशेहनीसकुनिदल॥ नीरदघोरसमान
चपलाचंचलचलधुजाधनुषहिधनुषवषांम
३८॥ दलएकादसशेहनी॥ समिटिचल्योकर
षेत॥ महारथीअरुअतिरथी॥ बलकतहेर
नहेत॥ ३९॥ **सवेया**॥ कोपिचढौडरजोधनको
दल॥ कोपिचलसवसरवलीहे॥ कुंजरपुंज
निपाईकजालसुभारपरेभुवभूरिहलीहे॥ वाजि
नकीषुरतारनिसोंउडिकैधरधरिअकासच
लीहे॥ घाहीरह्यो॥ तमलोपिदिवाकरलोप
गईसवव्योमथलीहे॥ ४०॥ **सुंदरी**॥ कुंजरपुंज
निपुंजनिसोहत॥ लालधजातिनयेमनमोहत
दीरघसद्धमहाधुनिगाजत॥ योतडिताजुतवा
रिविराजत॥ ४१॥ हेहयचंचलकैषगघंजन
घोनकुरंगनकीगतिगंजन॥ संघघनेवकुंड
भीवाज॥ बंदिसबैविरदावलिसाजत॥ ४२॥

विजे०

॥ १२२ ॥

॥ मधुभास्कर ॥ सुपर्वतचूरि ॥ भगसबधूरि
गरमिदिनीर ॥ हतेजुगभीर ॥ ४३ ॥ गरकुरषेत
सजेरनहेत ॥ पस्योदलजाई ॥ धरानसमाई
४४ ॥ दोहा ॥ इतदलसाज्योसबलअतिजुधि
धिरनरनाह ॥ चढ्योबीरससबनिकोंसब
हिकैउत्साह ॥ ४५ ॥ साज्योबहोरिविराटदल
डरासिंधुसुषपाई ॥ चलेपंडसुतसाजिकेंगर
जिनिसानबजाई ॥ ४६ ॥ अर्जुनसमदेधारि
कात्रिभुवनपतिकैहेत ॥ हमसों अरुकुलि
कैरवनि ॥ घेतहोईकरषेत ॥ ४७ ॥ अर्जुनउवा
च ॥ हेरतवातयुधिधिरराय ॥ चलियेसांईक
रोसहाय ॥ जैसैकाजसबैकरिआये तेनक
घूअवजीतगनार ॥ ४८ ॥ श्रीहृष्मउवाच ॥
इयोधनवक्रदल्लेगाये ॥ तेजेअस्त्रइहमेंपन
लाये ॥ जोजियमेंइहभावैतोहि तौअर्जुन
लेचलियेमोहि ॥ ४९ ॥ अर्जुनउवाच ॥ दलउ
ओधनकोंसबदाजें ॥ हमबीनवैसोधरनकी

जे ॥ आपचलो नितदरसन पावहि ॥ कलमस
 ओर कलेसन सावहि ॥ ५० ॥ दोहा ॥ आप
 हमारे पग धरो ॥ दल को ऊलै जाडु ॥ पथ्य सा
 थ श्री हरि चले जहां हुते नर नाह ॥ ५१ ॥ आव
 त धर्म पुत्र ॥ प्रसुष पाए ॥ हरषि हरषि हरके गु
 न गाए ॥ सिमिटो सो नष्टो हनी सात उदित
 रन को प्रफूलित गात ॥ ५२ ॥ उमड्यो घमड्यो ज
 लधि सो ॥ कीनो कटक पयात ॥ तदित पताका
 गरजि घन गरजत सिंधु जांन ॥ ५३ ॥ सोरठ ॥
 चलि आयो कुरषेत ॥ जितति तदिसत घोर दल
 बल केत भटन हेत ॥ सजे कवच संनाहत न
 पठ ॥ दोहा ॥ जुरि अष्टादस घोहनी ॥ दोउ दल
 शक ठोर ॥ महारथी असु ॥ अतिरथी सरभट सिर
 मोर ॥ ५५ ॥ अथ फौज घोहनी संख्या ॥ एक डुरदरथ ०८

एक हेती नि ॥ अश्व ॥ अस
 वार ॥ पाईक पंच विचारि
 ये कहिये पति विवार ॥
 हाथी ॥ रथ ॥ असवार
 ११ ॥ ११ ॥ ३३ ॥
 पयादे ॥ पतिसंख्या १०

ती नियति को होई शक से
 नायति तानामं ॥ अपने अष
 ने बुधिवल ॥ समहिते हगु
 नग्रांम ॥ ५५ ॥ हाथी रथ
 ३ ॥ १ ॥
 असवार ॥ पयादे सेना मुख १५

विज्ञे०

१२३

तातेतिगुनीगुलमस्क
जांनिजांनिउरलेडु ता
कीसंख्याशत्रकविबुधि
वरवसवकहिदेह हाथी
रथ असवारपयादे ४५
८॥ ३॥ गुलमपटे

कीजेतिगुनीवाहनीता
हिप्रतनांजांनि ह्यहा
थीपायकरथी कहुक
विशत्रवयोति ६०
हाथी रथ असवार
८१ ८१ २४३

एकचमकेजोरिकैति
गुनीकरैजुकोई शत्र
सकलसममेहिये अ
नीकिनीसोहोई ६१
हाथी रथ सवार
७२५ ७२५ ७२५
पयादा ३६४५

किरिगुलमतिगुनीकरैजे
कंशुसंख्याहोई शत्रक
होसोवाहनी कहेजाय
तसवकोई ५२ वाहनी
हाथी रथ असवारपयादे
२७ ३७ ८१ १३५

तीनप्रतनाजोरिए एक
चमंतवहोय अपनेअ
पनेचित्तमें समझिलेह
सवकोई ६३ हाथी
रथ सवार पयादे
२८७ ६५६ १०८३५

अनीकिनीसेनासक
ल तिगुनीकीजेतहि
सोईसंख्याशत्रकवि
दसअनीकिनीआहि ६३
हाथी रथ सवार
२१८७ २१८७ ६५६
पयादा १०८३५

पयादा

४०५

दशअनीकिनीदशगनी
साजतपंडितजांचि ताही
सो एक षोहनी कहिक

विष्णुवधानि हाथी २१८७०
रथ ॥ असवार ॥ पयादे ॥
२१८७० ॥ ६५६१० ॥ १०२३

जुरेअठारह षोहनीको
कविकरतवधानि अत्र
कहिसंख्यासकल जां

निलेऊसवजांनि ६५
हाथी ३२३६६ ॥ रथ २१८७०
सवार ३५६१० ॥ पयादे १०२३५८३ ॥

सप्त षोहनी पंडसुतरा
जतसैन्यसमाज ॥ पुपद
विराटनरेसतहां ॥ शुभका
रीव्रजराज ६७ हाथी १५३०
रथ १५३०२ सवार ४५२३०
पयादा संख्या ॥
१७६५४५० ॥

क्लरकादश षोहनी
करनंदनतरनाथ भीष
मअरुभगदंतनृप ॥ शे
एकर्णसवसाथ ६६
हाथी २४०५९०
सवार ७२१९१०
पयादा १२०२८५८

रतिश्री ० ॥ राजादुरजोधन राजा युधिष्ठिर कर घे
नअगमनो नामसप्तविंशतिमो ध्यायः ॥ २१ ॥ दो ॥
कार्तिककीसितपक्षकीत्रयोदशी शुभजांनि स
नमुषदलदोऊजुरे ॥ फिरितहे कियो मिलान १
६६ ॥ भानुगयो ७ पिरेनिभईतब ॥ आपनेगेर
विराजतहेसव ॥ धैरघटासमसेनपरोतहां ॥ वंदि

विज्ञे०

॥१२४॥

सबैकुलिको किल के नहे ॥ २ ॥ हे चपला
चल सीध्वज मोहति ॥ सो बिदिसा निदिसा मनु
मोहति ॥ गाजत कुंजर यौ धन गाजत ॥ गोरमा
दाइन से घन गाजत ॥ ३ ॥ नाद सजे सब ठां वगुनी
जन ॥ बोलत ज्यो पिक चाति ग के गन ॥ घोर घने
घन सो उमडो थल जो जन वा दश लोपिल यो
दल ॥ ४ ॥ दोहा ॥ कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी प्रात
भयो सब जानि ॥ इहों और कौं से नत वडा डो
भयो पलानि ॥ ५ ॥ बुधि प्ररो विक्रम बली साधु
सत्य सागपान ॥ सुरसरी सुत दलपतिक स्यो कुर
नंदन बलवान ॥ ६ ॥ अमित पराक्रम मेरु न
सरवर किजिये काहि ॥ सेन भारभीषम लीयो
सब लज्जा उरताहि ॥ ७ ॥ सुरसरि सुत दलपति
भयो सुन्यो पंद सुत कांन ॥ विलष वदन उचिते
भए ॥ रहे न घट में प्रांत ॥ ८ ॥ चौपई ॥ जब इह भी
षम की सुधि पाई ॥ जब जन के मन में उचिताई
त्रिभुवन पति अवराध्या करि हे ॥ धर्म पुत्र के स

बडपहरिहे ॥ ५ ॥ कृष्णहिष्टिमतो इहली
नों ॥ शृष्टिदिवनिचमूपतिकीनों ॥ महापराक्रम
मसंजुतप्ररो ॥ रनमेजोवलविक्रमसरौ ॥ १०
॥ **दिहा** ॥ लैयोसैन-आभारसिरकैकैप्रफुलि
तगात ॥ ताकोसाहसकोकहे ॥ कहतनवन
ईवात ॥ ११ ॥ जुरिठाडेद्वैदलभारजषायोअ
समांनि ॥ भईश्यासीद्योसहीभयोश्याकरभां
न ॥ १२ ॥ उतदलयतिभीषमलष्योकहतपश्य
नटराऊ ॥ इहत्रिभुवनपतिजुक्तनहि क्यो
करिघालौघाऊ ॥ १३ ॥ **नराज** ॥ विनैकरोमुरारि
जुसुमांनिचितलीजिये ॥ तेजेकमानगोतघाऊ
कोंनभातिकीजिये ॥ विलोकिकैकुटवबंध
बंधपुत्रकोगनै ॥ अलोकिहोईलोकलोक
जुद्धमैतिन्हहने ॥ १४ ॥ **तोटक** ॥ इतभीषम
कोटिकडुषाहरे ॥ वरुभांतिनकैप्रतिपालकरे
तिनकौकिहिभांतिहण्यारकरो ॥ अपकीरति
सोवडुचितलहो ॥ १५ ॥ इहकाजनहिहमसौ ॥

विजे ०
॥ १२५

सरिहे ॥ नहि न सुषकांनधसोपरिहे ॥ जब
अर्जुनयेवेन ॥ १३ ॥ अरु आतुं केधनुवांनतजे
१४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ कहि कौं इह कातर
बुद्धि भई ॥ सिमुता मन तैं अज कुन गई ॥ अव
छत्रीय धर्म विचारि हियें ॥ नहि पाप कष्ट अ
बजु धकीयें ॥ १७ ॥ दोहा ॥ सम जाये वज्र गान
कथि भागवत गीता गाय ॥ अमर एक भुवज स
रहे कह्यो कृष्ण सम जाय ॥ १८ ॥ सवैया ॥ तेज
धरा जल पौंन अकास ॥ मिलि कैं विरंचि सरीर
रच्यो है ॥ क्रोध विरोध सुलोभ सकाम सगर्व स
मोह समूह सच्यो है ॥ बंधु कुटुंब त्रिया सुत हेत
हिली न भयो वज्र नांचन च्यो है ॥ एकर है जग
में जस ओज सकाल बली तैं न कोउ वच्यो है १
२ ॥ दोहा ॥ बदन पसा सो पथ्य कृष्ण तव ॥ पथ्य
लष्यो अकुलाई ॥ देख्यो सब भारथ भयो ॥ अहु
त कह्यो न जाई ॥ २० ॥ श्रीकृष्ण ज ० ॥ मत अ
अर्जुन तू संसो करै ॥ इह दल इह थल सव सं

धरें॥ यामहिसवबचिहै दशजने॥ औरसकल
 कृतेतुगने॥ २१॥ मेइहसबभारकिकरिगयो॥ इह
 तोसोमेजसहिभाष्यो॥ तेरोकस्योकहाअवहो
 ई॥ करैंकहाताकौंअवकोई॥ २२॥ अर्जुनकोंसु
 निसंसौगयो॥ लयोधनुषहरिआईसुदयो॥ संभ्र
 मकेवलकृष्णभगयो॥ उद्योबीतिनकोसिरना २६
 यो॥ २३॥ इतिश्री॥ श्रीकृष्णभगवतगीतापा
 नउपदेशवर्णनं नाम अष्टाविंशतिमोऽध्यायः ॥ २४॥
 इतिउद्योगपर्वसंपूर्ण॥ अथभीषमपर्वकथनं
 पंडपुत्रकुरराजराज॥ कोपिउठेदलदोय॥ चर्म
 बर्मतनत्रानकसि॥ बलकतभटसवकोई॥ १॥
 ॥ दंडक॥ बीरसरसेसुरकवचसंनहकसेको॥
 पिकोपिजत्रतत्रपैजुधकीलई॥ दूरिदूरिवननी
 रसोषिभूरिभूरिपरिदूरिभौमधूरिद्योसहिनासा
 भई॥ थरथरकंपिठेभूतलकेथलथलधरधर
 कुरमकीछातीमेंमहाठई॥ पायकअपारनिसों
 मलदंतभारनिसों॥ बाजिघुरतारनसुधितिष्य

विज्ञ०

॥१२६॥

रक्षैगई ॥२॥ **मीषमउ०॥ श्रुत्यै॥** श्रीकुलहिक
हार्इ ॥ सकलकलधर्मनसांऊ ॥ पातकनीदैनो
गमत्रौ **विजदोषनपांऊं ॥** गुरकेवचननिमे
ठिसकलतिरथजतहारों ॥ गुरजनसासनभंग
लोकाकीलीकहि तारों ॥ बरुलाजहोइनुपसं
तनहि बांनकपाननिपरिहरो ॥ प्रतिद्यौस
दीहदुरघटसुभटसुजौनसहसदससंधरो ॥ ३॥
॥ दोहा ॥ सरसंधारोसहसदस ॥ दिनप्रतिक
रिचितचाऊ ॥ नित्यकरौजलपांनतवस्तनो
करिवरभाउ ॥ ४॥ **चामर ॥** ब्रह्मइंद्ररुद्रजस
हार्इप्रायजोकरै ॥ कोपिकोपिजुद्धबांनको
रिकोरिजोधरों ॥ लोकपालजोजुरै तोउनपे
जहारिहो ॥ आजतैइतेसुनित्यमारिहो ॥ ५॥
पथ्यसोंजुरेकरालजुद्धभोमहाधनौ ॥ लंकन
थसोसकुंधरामचंद्रयोभयो ॥ गंगपुत्रजत्रत
त्रवानवृष्टियोकरै ॥ सारथिरथिसमेतठांउठां
उंसंधरै ॥ ६॥ **दोहा ॥** उत्तरजुगोप्रथमहीक

॥१२६॥

रिवहुधासंग्राम ॥ एकप्रयुतभीषमहनेगने
नपरईनाम ॥ ७ ॥ जुजैदोडसैनकेरथीडुरदरन
मांरु ॥ भीषमपुजयोआपुपनबहुरिदैईसं
ज ॥ ८ ॥ रेनिभयेसबसूरिमां कियोनसरसंधा
न ॥ सजेसकलभटसैनकेप्रातउगावतभांन
॥ ९ ॥ मारुमारुदोडदलभई ॥ उठेवीरनगाजि
पाईकरथीमतंगगन ॥ अरुजुगेवहुवाजि ॥ १० ॥
मंडलीककीनौधनुष ॥ सरशाएआकास ॥ ब्र
तपाल्योदससहसहनि ॥ करिसेनाउरत्रास ॥ ११ ॥
॥ चौपई ॥ दिनप्रतिदसदससहससंधारे ॥ रथी
अतिरथीगजसंधारे ॥ मारगहृष्माघष्टीभई
पंडपुत्रउरचिंताभई ॥ भीषमअगनितसूरसंधा
रे ॥ पंडपुत्रसवहियहगहारे ॥ रह्योजुधतहांनि
दैगई ॥ पंडसुतनकेउरमतिभई ॥ १३ ॥ दोहा ॥ अ
ईरेनिसिगइ ॥ आएभीषमपास ॥ बहुविधिकेअ
स्ततिकरि ॥ बोलेवचनप्रकास ॥ १४ ॥ दोहा ॥ आ
जुपिताकधूसोमतिदीसै ॥ जाविधिजातिसवैद

विजे ०

१२७

ललीजे ॥ ज्यौ कुरु नंदन कौं श्रीजे ॥ आयु सदेहु सु
 तो सज कलि ॥ १५ ॥ **भीषम ॥ छप्ये ॥** जौ लगि मो
 घट प्रांन ॥ **रुहै** को सरवरि पावे ॥ चिरं जीव कुर
 राज कतहि पद ओषो आवे ॥ **विजय** करै को ॥
 सर मोहि देष तरन मांही ॥ जो जितै ब्रज राज तो
 हितौ अरि चितै रजनाही ॥ सुनिधर्म पुत्र सिष सी
 षइह सत्य मां निचि न लीजिये ॥ नरनाह दुपद
 सुत आय करि विजय सकल रन किजिये ॥ १६ ॥
सवैया ॥ मोहि पितु बरदां नदी नौ परम उर सुष
 पाइ कै ॥ बिना वोले काल नियरो को स कै गो ॥
 आय कै ॥ मां गि है मुष मृत्यु लहि है ॥ नां पराज
 य देखि है ॥ बांन जां कौं सां धि है गत प्रांन ता के ले
 धि है ॥ १७ ॥ मोहि को रन जीति है विधिरु सु रप
 तिरन करै ॥ जाहि ता कौं हरों प्रांन नि बांन नि फ
 ल ना परै ॥ ब्रह्म सि मु अरु नारि कौं दिज कौं धनुष
 करना गहौं ॥ भग्यो देखि न ताहि मारौं ॥ सत्य तो
 सौं हो कहौं ॥ १८ ॥ आपनी जय भूप का हो तौ क

हो सो कीजिये ॥ दुपद नृप को सुत सीपंडी ताहि आ
गे कीजिये ॥ नारि तैव ह पुरष भौता की कथा सुनि
लीजिये ॥ तुम जोग सिध्या हों कहों न नाना थ ताहि
पती जिये ॥ १९ ॥ चौपई ॥ का सिराज की सुता डलारी
करि सेवा सिंभुति हि नारी ॥ तिय तै पुरुष भई वरुपा
इ लीनौ जन्म दुपद ग्रह आय ॥ २० ॥ आगे दै उपदे
सों तो हि ॥ बानन पथ्य बेधिये मोहि ॥ भीषम हज
बइ हि विधिक ह्यो ॥ पग वंदे ही संसार ह्यो ॥ २१ ॥ अ
पने धर्म सुत आयो ॥ सत्य वचन भीषम को पायो ॥ सु
ष सुते भिन सारो भयो ॥ उद्दिमत हां जुद्ध को लयो ॥ २२
॥ दोहा ॥ सुभट सीपंडी अग्र करि ॥ पंड पुत्र बलिवंड
आइ लयो सरजाल नभ ॥ संग्रम कीयो अखंड ॥ २३
मारु मारु द्वै दल रटे ॥ होत अमित गति गाजि ॥ उठ
त अगनि असि वर बजत जूगत सुभट समाज ॥ २४
जीति मारग सप्तमी ॥ समर होत अतिकाल ॥ रुधि
र सलील परिपझु मिदी सत ठाउ कराल ॥ २५ ॥ जुद्ध
होत दिन नो गर ॥ कोक विक है बंधा नि ॥ दसर घे
स करारन ॥ पखौ भटन सौं प्रांनि ॥ २६ ॥ वीसौ अ

विज्ञे०

॥१२७॥

पसौं ॥ अभिमनुहिसंश्राम ॥ अनविक
स्यो जाहिघरूकी नांम ॥ १२७ ॥ भीमसे
नसौंतव ॥ स्यो ॥ हसासानवलिवांन ॥ चित्रसे
नसहदेवसौ कीनोकोपिक्रपांन ॥ १२८ ॥ नकु
लसुसर्माद्रोणसु दुपदरायसोंजुध ॥ धृष्टदि
वननृपद्रोणसुतसमरकस्योकैक्रुध ॥ १२९ ॥ जुस्यो
जुधभूरिश्रवा दुपदसुतासुतसंग ॥ राउबिराट
कलिंगसोंकोपिकियोरनरंग ॥ ३० ॥ क्रतवर्मा
अरुपथ्यसौ वाजी असिवरमार ॥ पाइकह
यसारथिरथीभयेकितेसंधार ॥ ३१ ॥ भूपजुधि
सिरसौकस्यो ॥ संग्रमकल्पअपार ॥ इतेसुभ
टरणभूमिमैजुटेएकहीबार ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ को
पिभीमतिहिबार ॥ हयोहसासनकौडरद मि
स्योपकुमीविकार ॥ अंजनकौसौगिरिपस्यो
३३ ॥ क्रतवर्माजादौतहां ॥ करिदृष्टिसरजाल
काटनौपिंजरपथ्यसौ कीनोकोपकराल ३४
जेसरथाडेपथ्यरन तेघंडेउनवांन ॥ अंधका
रधरउर्धमै ॥ कैहीगयोनिदांन ३५ ॥ कौनगनें

अवपथ्यको भयकारी संग्राम ॥ ३८ ॥ योंवे
धौ कटक ॥ वरनिसवै कोनां म ॥ ३९ ॥
ओमृगजृथनि उपरिके हरि ॥ कापि उग्रारनप
थ्यवली ॥ बांनचले असमान हंलौ सुमनौ स
लभा उडि मोमचली ॥ घंडकरी ध्वज चौरपता
क ॥ भई उपमा इह छत्रभली ॥ मानौ उडित जि
सेलके शृंगनि हंसनिके वंसनिकी अवली ३९
॥ दोधक ॥ गंवहि गंवहि सरसंधारे ॥ कोपिके
तेहय सिंधुरमारे ॥ बांन बिसाल हयो कृतवर्मा
मोहि गिह्यो धरवर्मसचर्मा ॥ ४० ॥ जादव मोहि
पह्यो जव देख्यो ॥ सैन सबै भयकाल विसेख्यो
भागत यो भट अर्जुन आगे ॥ पौन विहारत ज्यौं
घनभागे ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ आयौ सकुनिसरोष
कै ॥ कह्यो पथ्य कित जाई ॥ जादव जानै मोहि
कित डारौ भुजा उषारि ॥ ४२ ॥ आयौ सन्मुख
क्तिगहि ॥ पथ्य करी द्वैषंड ॥ धाई सरासन वां
न करत वली नौ वलि वंड ॥ ४३ ॥ सोऊ की नौं वं

विजे ०
॥ १२९ ॥

विजे ० ॥ अर्जुनसमर ॥ १० ॥ रथकादोसारथी
द. ६. ॥ राघीन ॥ ४२ ॥ लज्जितषष्ठल
थलत. ॥ योतनकीनही ॥ सहारि ॥ लषी
डाजोधनआदिसब ॥ संसौकस्योअपार ॥ ४३
॥ दोधक ॥ रोषकरेसतबंधवधार ॥ अर्जुनसों
सवजूरुनआए ॥ घेरिलयोवरहीरथअसैं ॥ घे
रतपर्वतइंरहिजैसैं ॥ ४४ ॥ ज्योमघबाधनसू
रहिलोपैं ॥ त्योंचहुघांसवकौरवकोपैं ॥ बान
निकैरथधायलयोहै ॥ संभ्रमकृष्णहिचित्त
भयोहै ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ सहदेवधाशनकुलभी
मघरुकासाथ ॥ सोचगहेससिराहज्यौंधर्मपु
त्रनरनाथ ॥ ४६ ॥ अर्जुनवांनवृष्टितवकारीकु
रनंदनदलधीरनधरी ॥ उड़ीपताकावांननिसा
थ ॥ कटिगराधनुषरहेनहिहाथ ॥ ४७ ॥ ज्योवउ
वागनिपौंनहिपाई ॥ कौरवसेनाचलीपराई
मारमारदोउदलगाजे ॥ अतिगतिषर्गरवर्गसों
बाजे ॥ ४८ ॥ पवनपुत्रसुनधर्मप्रचास्यो लैकर ॥ २९ ॥

गदाधनुषभुवडास्यो॥१॥ यदहं नीति
मारे॥ वज्रधाईजनुपर्वतपारे॥ २॥
ईभटभानकभेसु॥ जत्रतत्रजनुपर्वतकस्त
अद्भुतसमरनसकौवषांनि॥ गिरिसेगिरिक
रीभुवषांनि॥ ३॥ जूरेदुरजोधनअनुजहने
भीमपचीस॥ कहुं बाहुकहुधरपरे॥ कहुं परे
धरसीस॥ ४॥ सवैया॥ कोपिगदाकरलैतिहि
षेतकितौदलदुर्गमदीहसंघास्यो॥ जूरेरषीक
टिकुंभनिसीधुरश्रोनि तक्षरप्रवाहविचास्यो या
हभसुंडकुलधुजाफषचामरकेससिवारनि।
हास्यो॥ पौनकोपूतवलीरनजीतिकेंसांचहुज
धकौसिंधुमुधास्यो॥ ५॥ दोहा॥ राख्योभीमका
लिंगतबद्धघटिकाविरमाय॥ धनुषधरेभटरा
उतहै॥ भीषमपहुंछौआय॥ ६॥ दूउतपाईथा
हजिमि त्योदलतिनिकोपाई॥ धीरक्षरीसाहस
बदौ॥ कोकविकहेवनाई॥ ७॥ इति श्रीमहा
॥ कौरववधभीमसेनविजयवर्णनं नाम नवविं
सतिमोध्यायः २॥ भीमसेनउवाच॥ सवैया॥

विज्ञे

१३७

प्राजुहीचक्रगहाय कंकुस्महि ॥ प्राजुघनैदल
दद्यविदारौ ॥ प्राजमहारथवंतहतौ ॥ सबप्राजु
हीकुंजरवानिसंधारौ ॥ प्रपांडवभूमिकरौवर
प्राजही ॥ प्राजुहीकाजइतेसवसारौ ॥ जौनक
रौइतनौपुरुषारथ ॥ तौकुलधत्रीयधर्मनिहारौ
१ ॥ दोहा ॥ भीषमकोप्योदेषिकै ॥ तवप्रजुनग
नग्रांम ॥ दुपदकवर ॥ आगेकसौताहिसीघंडीनां
म ॥ २ ॥ भुजंगप्रयात् ॥ हस्यौगंगकौपुत्रसौमेन
देष्यौ ॥ तवैप्रापनौकालजियमांहिलेयो दियं
चर्म ॥ आगेगहैषर्ग ॥ आयौ ॥ महारोषसोंकोपिकै
पथ्यधायौ ॥ ३ ॥ महाकालकोकालसौवांनली
नौ ॥ फरीषर्गसोतोरिद्वैषंडकीनौ ॥ ४ ॥ तवैगंग
कौपुत्रलैसक्ति ॥ ऐसी ॥ महंमीचूंहुंकेतेजहू
लैं ॥ प्रैनैसी ॥ ४ ॥ लषीपथ्यद्वैषंडलैवांनकीनी
सवैदेषिसेनातवैत्रासभीनी ॥ महारोससौगंग
कौपुत्रधायौ ॥ धनुर्वीनलैसैनकोंसो ॥ अघायौ ॥ ५
॥ दोहा ॥ कोपिहतेद्वैअयुतरनरथी ॥ अतिरथीस

१॥ पाइ कहय गज छत न छटि ॥ चले श्रोन केष्ट
२॥ **छप्पे** ॥ धीर न धरै न चहुं चतुरंग सुभागत
कोउन काहु सम्हारो ॥ थाकिर हो पुरषारथ
हु अति पारथ ॥ प्रापुहिये वझुहासो ॥ अश्वमि
रे कहूं बीरगिरे कहूं मत्त गयंदन कों गनडासो
भूपजुधिष्टिर को जण सो दल को पिकि आगि मे
भीषम वासो ॥ ७॥ **दोहा** ॥ कुतो पंड सुत दल सब
ल ॥ विचरि चले पोदिसि चारि ॥ भीषम सौं मना
बचन कर्म सबही मां निहारि ॥ ८॥ अवजानी से
नाचली भीषम सौ सबहारी ॥ धार कर धरि च
क्र प्रभुर छक भक्त मुरारि ॥ ९॥ **सवैया** ॥ चक्र ग
ह्यो कर को पि मुरारि ॥ निहारि तहां अपनौं जत
टासो ॥ योरथ तै घसि धाय धरा गज नृथ निऊ
पर सिंधु पचासो ॥ देषत ही तिलकावली सी
सनिही चित और विचार बिचासो ॥ पिठि बई
करुण निधिताहि ॥ कृपा करि कै जन को प
न पासो ॥ १०॥ **अनुन उवाच** ॥ **दोहा** ॥ साई हा

रतयेजकत॥ ११॥ तौहसंग्राम उपदपुत्रपद

विजै॥ ज्योतसंध्रष्ट॥ नतगनांम॥ १२॥ दोधक॥ को

॥ १३॥ स्वकोदनकोपिसंधास्यो॥ तत्रतत्रहतिभूत

लडास्यो॥ पथ्यसीघंडीलेतवधायो॥ भीषम

केतवसनमुषआयो॥ १४॥ देविसिघंडीवा

ननगह्यो॥ तिनकेसनमुषठाडोरह्यो॥ वान

निबेधोपथ्यसरीर॥ तवहसिवोलौभीष

मवीर॥ १५॥ अर्जुनक्षवेधतअंगमेरे॥ बाह

नहोईसिघंडीतेरे॥ उपदपुत्रजेतेसरह्ये॥ ल

गेनतनमेंनिर्फलगये॥ १६॥ अर्जुनवांननिमो

हेघांन॥ भूमिगिह्योयो कहिवलवांन॥ माण

हृष्माअष्टमीनई॥ तवभीषमसरसज्पालई

॥ १७॥ दोहा॥ भीषमपौद्योसेजसर॥ दसयेदि

नबरवीर॥ शरवसिरपश्चिमचरनपस्योपद

मिरनधीर॥ १८॥ वरषेस्वमननस्वर्गातेस्वसव

चढेविमान॥ आईकौतिगसुरतरुनिजितति

तरूपनिधान॥ १९॥ जैजैशयअकासभौंधनि

भीषमभटराउ ॥ कौरवकों ॥ सकुनिकोंमि
दोचितकोंचाउ ॥ १८ ॥ भयोकुलाहलसक
ठक विलषवदनदीसंत ॥ जनजनउर ॥ प्रांतक
केसंभ्रमवधौ ॥ अनंत ॥ १९ ॥ भीषमसरकीसेज
लषीलटकतसीसहिजांनि ॥ पटभूषनकर
राजतवदयेउसीसे ॥ प्रांनि ॥ २० ॥ भीषमउवा
तुमनहीजानतइहसमों ॥ लीनोपथ्यबुलाई
बांनखेधिउचौकियौ ॥ सीसमुकटतहेजाई
२१ ॥ चौपई ॥ भीषमकहेतजोतवप्रांनजबउ
तरदिसिआवेभांन ॥ काढीगांगपथ्यहतिबां
न ॥ छाइरखौजलकितेप्रमाण ॥ २२ ॥ तहसर
सज्याभीषमपस्यौ ॥ बहौतजतनतहमंदिर
कस्यौ ॥ आयुसविनामृतुनहिआवे ॥ कौनसु
भटभीषमसरिपावे ॥ २३ ॥ समरकरनकरराज
सोंपंडपुत्रसौरैनि ॥ भयोअमितगतिदावनि
सुरपतिकोसोअैनि ॥ २४ ॥ सेनाउवाच ॥ नैक

विजे०
॥३२॥

हनमां नी डुर जो धन अठां निठां नी ॥ जाई को व
धां नी उन भूमि मागी घोरी सी ॥ गेह नि को ने
हमे टि ते हही की कां निलई सुष्प के पि पृष्प मां
हि विष मूरि घोरी सी ॥ छोटे अति जी को न सुभा
व प सो नी को कष्ट आपनी कही को सबै कुल
कां नितोरी सी ॥ कै कै सठ ह भीष मादि सैन न
न सम मूरिष बगई हा कै बा रि द्यो होरी सी २
५ ॥ दोहा ॥ तल यो सैन को भारत बद्राण चार
ज सी स ॥ तिन हि कै संग सब ल दल ॥ चढे सक
ल अक्नी स ॥ २६ ॥ इति श्री ० ॥ भीषम पिताम
ह संमोहन नाम त्रंशति मोध्यायः ॥ ३० ॥ अ
थ द्रोण पर्व समाप्त कथनं ॥ सोरठा ॥ दलपति
द्रोण वजाई वग्नौ को पिरण रुद्र सौ ॥ कटक स
मुद्र हि पाई ॥ सोषत देषत रोस करि ॥ १ ॥ दोहा ॥
सज्यो से निशत पांडव नि ॥ पथ्य च व्रो रन को पि
निरषत हि मृगा राज ज्यो ॥ जातु करी दल लोपि
॥ घुमरे धन की गाज ज्यो ॥ द्वे दल मां मै हि नि ॥

सान ॥ चपलपताकादासी सिंधुरसदा।
समान ॥ ३ ॥ दुपदराईगरोणसौ भयोनु
द्व्यतिकाल ॥ दोऊबीरसमानहीदृष्टि
करतसखाल ॥ ४ ॥ प्रथमद्यौसकरिरनरहे
दोऊबीरसमान ॥ कवचसनाहकसेसवा
निसातउगतहिभान ॥ ५ ॥ जुखीरुहुंओर
केरछेजघाईअसमानि ॥ भईनिसासीछा
ईतम ॥ लसेंछपाकरभान ॥ ६ ॥ छंदत्रिभंग ॥
सजिचर्मसवर्माअद्भुतकर्मा ॥ कोपिसुसर्मा
आयगयो ॥ जगमैजसलीजेविलमनकीति
पथ्यहियाहसंदेसदयो ॥ जुरिहमसोंन्या
रोजुधसमारो ॥ प्रतिभारोआनंदकरो वि।
लमनलपावहु ॥ मनमुषआवहु धनुषचा।
टावहुबांनधरो ॥ ७ ॥ अर्जुनकेंउरबीर
सअतिवाद्योसुनिबैन ॥ दोऊसमरप्रवी।
नअति ॥ क्योहरनउसरैन ॥ ८ ॥ आयौतह
भागदंतनृप बलकौकधूनअंत ॥ अंजन

विजे ०
॥१३३॥

जिगिरसर ॥ सो जगउपर सो हंत ॥ ताके सि
कुकेल ॥ कोक विकहे सुनाय ॥ बाहुवात
कपर सही ॥ वारन गज उठि जाय ॥ १० ॥ दोधक ॥
भीमवली भगदंत विलोक्यो ॥ आवत सो भट
कै वरयो को ॥ नै कहूं जो वर ज्यो नहि मां नै भां
ति न भांति न कर न दानै ॥ ११ ॥ अंकुस मारि
रीत ह्ये ल्यो ॥ भीमवली नही लेन ठेल्यो ॥ पौन
के प्रत सौं मुष्टी प्रहास्यो ॥ सो गज नै कटरे न
ही टास्यो ॥ १२ ॥ उद्विम के वह धां किरछो
दे ॥ जात नही मुखे नै कछो दे ॥ पै नै कौ प्र
त जितो वरण नै ॥ कुंजर सो मन नै क न ठी नै
॥ १३ ॥ दोहा ॥ चतुरदंत उनमत्त वर गर्जत भी
म ही पाई ॥ चाहत लयो लपेटि कै ॥ तो महि
कष्टु वसाई ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ भीम से नवल की
नों सर्व ॥ रोम नट्टौ भाग्यो गर्व ॥ कुंजर पे न
ही पावै जां नि ॥ को भगदंत नरे सस मान ॥ १५ ॥
पस्यो शङ्ख अर्जुन कै कां न ॥ वाही दल को छो

आं

उवांन ॥ कौकहिसकैं न साहसरह्यो ॥ तबही
धायति अर्जुन लयो ॥ १६ ॥ अर्जुनभीमलघोन्न
नत्तल ॥ लईसक्ति जैसो सिवशूल ॥ रावनज्यौ ल
छिमनकों छंडी ॥ बरकरि इंद्रपूत तव घंडी ॥ १७ ॥ पं
उकरी द्वैवान जकाटि ॥ औरलयौ दलवांन निपा
टि ॥ तब भगदंतसम्हारो आप ॥ जागो जागैव
उपताप ॥ १८ ॥ पंचवांन करै मैंति नलग ॥ तब अ
र्जुनके उरमें हये ॥ लागत उरमें सो परजस्यो ॥ बि
षमवांन तितधन परधस्यो ॥ १९ ॥ दोहा ॥ मुकि ।
कुंज स्कैं सिरह्यो ॥ दास्यो सीसविदारि ॥ पारभ
यो सीरखे धितन कस्यो फका द्वैफारि ॥ २० ॥ कुंज
रसवरसपायरो दाविगयो भगदंत ॥ गिरिननपा
वत भूमिमें ॥ साजत जतन अनंत ॥ २१ ॥ जातौ चा
हत पथ्य कों पेलत बारंवार ॥ पगुन देसक इरदसो
अंकुसहनी अपार ॥ २२ ॥ सवैया ॥ दाविगयो जुग ।
जांनुमें सिंधुरौ रिख कों कविकों नवषांनै ॥ जुझ
रे न मुरै बरबीर ॥ सुभांति अनेक नकै रनठांनै ॥ पेल
त को धकिये भगदंतन ॥ कुंजर नैंक हूं अंकुसमांनै

विजे०

॥ १३४

निर्धनकीत्रिय-आयसुज्यों अपनेपतिकों क
धूचितन-आने ॥ २३ ॥ दोहा ॥ जुगलजंघमेम
तकाजबारबारकजोरि ॥ हास्योदैदै अंकुसे
नहीसकत अंगमोरि ॥ २४ ॥ बीतरकमहूतै भूमि
गिछो गजराज ॥ प्यादौकै भागदंततवधायो सिर
ताज ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ कोपिषर्गलै धार्द्र क्रोधित अ
तिराते नयन ॥ मधवाचछो वजार्द्र ॥ चपला अ
सिवरजलदतन ॥ २६ ॥ दोहा ॥ द्वैसरलै दोऊह
नी ॥ तबही पारथवाहु ॥ बिनभुजसनमुखपथ्य
कै ॥ चल्यो बलीनरनाह ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ पथ्य
तीसरोवांन ॥ हन्यो सीसमै क्रोधकरी ॥ मूरच्छिगि
स्योवलवांन ॥ उठि अर्जुनसनमुखचल्यो ॥ २८
॥ चौपड़ी ॥ तबसो पंचपेडचलिगयो ॥ अर्द्धचंद्र
लै अर्जुनहयो ॥ काटेजांनुजंघधरपस्यो योंभा
दंतभूपसंहस्यो ॥ २९ ॥ हाहाकारकटकमें भयो स
रनमनिरविसौ अथयो ॥ कोरवनृपकै दुष अति
भारी ॥ मुखकी सकलवासनाजारी ॥ ३० ॥ दोहा ॥ लो
नो अर्जुनलायउर भूपजुधिछिर-आय ॥ आजक

रीसंग्रामजय कीनौं प्रगट्यताप ॥ ३१ ॥ इति श्रीम
होभारतेपुराणविजयमुक्तावली केविष्णुवि
रचितायां भागदंतवधवर्णनं नाम एकत्रिं सोध्या
य ॥ ३१ ॥ सुंदरीकण्ठद ॥ मूर्तिपत्न्यो भगदंतलष्यो
तव ॥ कोरवसौदलरोवतहैसब ॥ सोचवधौजि
यमेंसबसोचत ॥ नैननिमें असुवाभहुमोचत १
बंदहैगुरकेनृपपाईन ॥ दीनभएवहुभाषतभाईन
आपनहैसबकाखलाईक ॥ कौविगारैजिनहो
हुसहायक ॥ २ ॥ आजुभयोतुमअग्रपराजयवै
रनजितिगरासबनिर्भय ॥ आपविचारकछूअ
वठांनहु ॥ होईविजेमतिसौउरआनहु ॥ ३ ॥ दो
हा ॥ राचौचक्राबृहगुरमुनिअवनीपतिबोस
दुरगमदीरघदुसहता ॥ जान्यो कछूपैरैन ॥ ४ ॥ दो
हाउवाच ॥ न्योतिपठायोपंडसुत ॥ आवहिरन
कोआजु ॥ कैमुजोकेजाउवनसीजिजायसब
काज ५ ॥ त्रिभंगीछंद ॥ सुनिगुरवांनिसोसिषमं

विजे०

॥१३५॥

उर आनि तव बुधिय है ॥ तव दूत बुलायो सोच ॥
लिआयो ॥ **खेगिय गायो जाय कहै ॥** तव आयु सपा
यो नुरत सिधायै ॥ सीसन वायों भूपत हं ॥ सब नि
ज हास्यो लै बैठा स्यो ॥ बंधव आरोल सतत हं ॥ **इ**
इत सोरग ॥ दीनो इह संदेस चक्रव्यूह रच्यो त
हं ॥ रनिहित चलौ हिनरे स ॥ **केत जिविग्रह जांउ**
वन ॥ ७ ॥ राजा युधिष्ठिर उ० ॥ दोहा ॥ न्योति प
ठये आय है ॥ कहौ जाय संदेस ॥ इत समदिका
नौ महाभूत पति उर अंदेस ॥ ७ ॥ **चौपई ॥** जे ते मट
हे याद लमांही ॥ चक्रव्यूह ही जानत नांही ॥ अ
र्जुन श्रीहरि संग सीधायो ॥ तीरथ ते नही सोच ली
आयो ॥ ८ ॥ ता बिनु जुझ को न इह करि है ॥ चक्र
व्यूह पै ठिको लरि है ॥ अर्जुन विन जान्यो दल
दीनो ॥ ता ते न्यो तोरण को दीनो ॥ १० ॥ तीनो बंधु
निराजा बूझै ॥ कहौ मंत्र जो राजा को सूर्य ॥ जो या
जुद्ध नहि बनी आवे ॥ राजपाट को धृति को पावे ॥

॥१॥

११॥ प्रथमहिभीमहिब्रह्मेवजा॥ जोरनजातैसी
मेंकाजा॥ सुनिकेंउत्तरभूपहिदागें॥ प्रेमसौसुपें
नमेरनकीनौ॥ १२॥ **छप्पे॥** जुरैजुधगंधर्वसर्व
तिनकेबलगारें॥ किंनरनरअरुजशसकल
बलदलसंधारु॥ वज्रपांनिजोवज्रजलेहि
तोचिन्ननअंनौ॥ जुधकरतदिनैरनिनहाहो
कहुंअघानौ॥ बडुसंकअंकनगयन्गनि
कोमोसौसरिबरिकै॥ सुनिभूपमोहियाजु
धकीकछूनगतिजांनिपरै॥ १३॥ **दोहा॥** वु
जेनृपसहदेवतव॥ जोइहजांनहुजुध॥ जीति
लीयेहोजायगौराजपाटसवसुध॥ १४॥ **सह
देववाक्यं॥** जीतोदानवदेवहो॥ जुरैजुधजो।
आई॥ मैगतिचक्रव्यूहकीकछूनजानीजाय
१५॥ **राजोवाच॥** करोनिकुलसंग्रामइहराषीक
टककीलाज॥ नातरभूमिगईसवैरनकीनौवे
काज॥ १६॥ **नकुलवाच॥ छप्पे॥** आजुअ

विजे ०

॥१३५॥

मितसंग्रामदेवदानवसौ मंडौ ॥ जुरै जुद्धजो आ
ई ॥ कालदंडहिवरदंडौ ॥ सब अवनीस
ही जीति गर्वति न के बरगंजौ ॥ सकल सत्र
संधारि बाहु बल सब दल भंजौ ॥ सुनि भूपपा
ई तुव प्राय से हंडित नौ संग्रम हुकरो ॥ इह स
समो हित पपंडकी उलटि भूमि उपर धरो १७
॥ दोहा ॥ देख्यो सुन्यो न कान्हू चक्राव्यूहन
रेस ॥ सोन जुद्ध वक्रु मै कियो इह जीय मै अंदेस
१८ ॥ चौपई ॥ राजा वक्रु जिय मै पछिताय कौं
जीयो अब संग्रम जाय ॥ विना पथ्य वक्रु भयो
अकाज ॥ यह मिनि साई वू डो राज ॥ १९ ॥ सुरन
र सेंदल सब भीम हि डोरै ॥ ता डूतैं कधू का जन
सोरै ॥ सह देव अरु नकुल विचारि ते उगण
हिये अब हारि ॥ २० ॥ वैठ्यो भूपति नारे सीस
नही बोलत को र्व अवनीस ॥ चारो वंधव म
न मै सोचै ॥ मन पछिताय नयन जल मोचै २१

सकल कटक मे बीसों त्रास ॥ अंत ह परसव
पसो उपास ॥ इह सब सोध सुभक्ष सुखों हि
ये सोच करि मांछों धुन्यों ॥ २२ ॥ पतिकी सुधि
चित्त में धरी ॥ तेन निदेहि थर हरी ॥ कृष्ण सा
थ चलि अर्जुन गयो ॥ ब्रह्मसो न ही कहा
सो भयो ॥ २३ ॥ सुत अमिम सुगोद पसो मां
ताने न नि आंसु टसो ॥ पसो पत्र उर मे तिहि
वार ॥ चिंता की नीचों बिकुमार ॥ २४ ॥ **अभि**
मन्त्र वाच ॥ कौन हेत तुम मलिन हो कहि
धौ सो समुजाय ॥ या जग मे तो ते सुखी ॥ ओर
न को र्ठ आय ॥ २५ ॥ **सवैया ॥** जीठ जु धि थिर
जीम बली जहे ॥ हे जग वंदन कृष्ण सो भाई
धीर धनु र्धरि अर्जुन सो पति ॥ जु धजुरै जग म
हु गम खाई ॥ हे विवि वंधव सह देव देवर ॥ की
रति हे सब भूत लिखाई ॥ मो सम पुत्र हि पा
य कै माय ॥ कहा कहि धौ मुख पे मलि नाई
२६ ॥ **दोहा ॥** रुदन करन को या सम कहि

विज्ञे०

॥३७॥

धोकारनकोंन॥ काहुकोनहीत्रासउरसं
पतिसंजुतभोंन॥ २७॥ सुभशउ॥ तुवधि
तुरनहितकलसग॥ गयोकसेतनत्रांन आ
ईसुधीनाकीनही॥ कहौरहतक्योंप्रांन २८
भूपजुधिरिदूषनिधान॥ भोजनकस्योन
षंडतप्रांन॥ तीनोअनुजरुदनबहुकरें
वेननहीमुखसैंअनुसरें॥ २९॥ नहीपथ्य
कीसुधिकघृणीकी॥ इहैवातसुतमेरेजीय
की॥ चलिअभीमनुभूपपोंगयो॥ जायसभा
मेठाडोभयो॥ ३०॥ विलष्योसवपरिवारवि
लोको॥ नैननतैंजलरुकेनरोक्यों॥ मांता
बचनसत्यकैंमानें॥ जूग्योनिश्चयअर्जु
नजान्यों॥ ३१॥ दोहा॥ उलटिचल्योतबग्रेह
कों॥ निरधीभीमतबधाए॥ विलष्योदेख्यो
पथ्यसुतलीनोंअंगलगाय॥ ३२॥ अभिम
नुवाच॥ क्योंभूपतिमनमलिनहै॥ अरुउ

॥३७॥

चितेसवमो न ॥ हरषनकाह उरलष्यो ॥ कहि
येकारनको न ॥ ३३ ॥ भीमसेन उवाच ॥ अल
कीनो एकप्रोणगर ॥ चक्रा मूहवनाय ॥ ता
हितन्यो तो जुधको ॥ दीनो इहापगई ॥ ३४ ॥ क
हपठई कुरराजनप ॥ कैरनाचो आई ॥ कैत
जिकें संग्रामथल ॥ रहो विपन मै जाई ॥ ३५ ॥ ग
तिका ॥ नही हमयो समरजांनै ॥ अवनहन
सुन्यो कहुं ॥ देवपुरपाताल देख्यो ॥ नही दे
ष्यो सोतहुं ॥ और भूपन ताहि जानत पथ्य
को धोषोरह्यो ॥ सुनत ही अभिमनु उठिकें
पवन सुत सों यों कह्यो ॥ ३६ ॥ अभिमनुवाच ॥
इह काज सबेहुं सारिहुं ॥ कहाचित्त में संसो
कियो ॥ जाय भूपति निकट बही ॥ जुधहात
बीरौ लीयो ॥ आजु कौरवकुल संघारु ॥ प्रोण
कर्णहि संघरों ॥ हतौ बरहसासनै या समरकी
जय हों करों ॥ ३७ ॥ सवैया ॥ काहे कों सोचक
रो जु इतौ इह काज किंतौ अबही सब सारों ॥ आ

विजै०

॥१३७॥

आजु हतों छितमें रनमें॥ सब कौरव को कु
ल को पिसंधारो॥ देषत ही दल प्रानकों दो
रि सुषर्ग दवागनि सों परजारो॥ बाजि डुरद
गरद करौ॥ सब मीडिम हारथ वंत निमारो॥
॥३७॥ दोहा॥ अद्भुत गति भूपति गनील
पिससि साहस धीर॥ स्मरन मनिके हरि
कलित सील सिंधु सो वीर॥ ३८॥ राजा वा
च॥ नहि गरटि गवि द्यापटी॥ समर नदे
ष्यो नैन॥ करि सहस्र बीट काली यो जं
नी कछु परैन॥ ४०॥ मोहि अचंबो पुत्र सु
नि को तू दानव देव॥ गंधर्व किं नर ज ध
रु कहि सब अपनो भेव॥ ४१॥ अभिमन्यु
वाच॥ छपै॥ सेवा सोई धन्य स्वामिका
रि जमें सुरो॥ धन्य धन्य सोई पुत्र मांत पितु
आयु स पूरो॥ धन्य धन्य वह दास भंग नहि
सासन करई॥ धन्य धन्य सोई स्मर समर प्रा

उलटनिधरई॥ धन्यबोलसत्यकविष्टत्र
कहिमुजससकलजगलिज्जिये॥ तहुला
जकाजमनखाजधरिसुजनमसफलसब
किज्जिये॥ पर॥ दोहा॥ नहीभूपसंसौकरो
सोचनसावहुचित्त॥ करोविजयभटसब
हनौ॥ प्राजुरावरैहित॥ ५३॥ इति श्रीम
हार्भरतेपुराणे विजयमुक्तावलीकविष्टत्र
विरचितेन श्रीमद्भारवचनोनामचात्रिशो
य॥ ३२॥ युधिष्ठिरउवाच॥ दोहा॥ पढौन
गुरुटिगतैकहू॥ लष्यौननैननिजुध॥ कौंकां
ध्यौतैभारमुत॥ सोमोसौकहिमुद्ध॥ १॥ अ
भिमनुवाच॥ सुनिनृपशरवजनमकीकथा
कहौसमजाय॥ मथुरापुरउत्तमअवनिसोभा
कहीनजाय॥ २॥ सुंदरी॥ भारभएउपजेतह
दांनव॥ चैननहीवहुधामुनिमानव॥ होमघ
नेतपजगपनसावत॥ हौंननहीव्रतसंजमपा

विज्ञे०

॥१३॥

वत॥३॥ मारतविप्रनदेघतकोयल दीर
घदीरघदानवकेगन॥ कैत्योंहुवसुधा
जियमाकुल॥ जातुभईतवजसुपरीध
ल॥४॥ तामुषकातसुनीजगवंदन॥ भूमि
नयेतबहीनदनंदन॥ भारिउतारिदले
दलदानध॥ ठांवहिठावथपिसनिमानव
५॥ सवैया॥ भूतलभारउतारनिकोंजग
मेप्रवतारमुरारिधस्यो॥ मारिबकीवकको
मुषफारि॥ प्रधासुरकौवरप्रांनहस्यो॥ तो
रिलेयरदधाईमसुंडतैंकोपिकरीजबआनि
प्रस्यो॥ कंसकौहंसविध्यंसतहंसबदांन
ववंसनिबंसकस्यो॥ ६॥ चौपई॥ तबश्री
रुष्मपेजउरधारी॥ सकलभूमिविनदान
वकरी॥ छोटेबडेप्रसुरजेभए॥ तेवरविक्र
मकैसबहये॥ ७॥ मारेसबबहुत्रासदिषाई
मोमोतासबवचीपराई॥ गर्भवतिपितुग्रह
जोगई॥ बचीभागीइहविधिनर्मइ॥ ८॥ ताके

॥३॥

गर्न जन्म मेलयो ॥ कष्टूपा न तव मोउरुभ
यो ॥ तोषेल न जाउ सि सुन के संग नाना वि
धिस बनाना चतरंग ॥ ९ ॥ इक सि सुयों कहि गा
री दर्श ॥ सुन त मोहि बहल ज्वा भई ॥ तव उ
न क ही न ग्या तन गोत ॥ तोहि ह नैं तेरो को
होत ॥ १० ॥ चलित ब माता पै हं आयौ ॥ तव
ही सब विरतां तव ताये ॥ को कुल कौन
पिता कहि मांता ॥ कहां कुटंब पिता निज
आता ॥ ११ ॥ **माता वाच ॥** पुत्र पिता की जोग
ति सुनि हो ॥ बहु पछितै हो माथो धुनि हो
कुटंब ती हासो श्री हरि हन्यो ॥ बाल क ह
हत रुन न ही गीन्यो ॥ १२ ॥ **दोहा ॥** कोउ उव
ह्यो असुर न ही पुरषन कोउ वांम ॥ करो आ
पव सि पहि सब ॥ निर्भय मथुरा धांम ॥ १३ ॥ ला
जु भई इह वात सुनि ॥ क्रोध भयो बहु चित्त
सुनि पितु की वैसी दिसा ॥ कियौ जतन ताहि

विज्ञे०
॥१४६॥

त॥१४॥ दृमदृष्टिद्वे ओंधमु मनी दभूषस
वसाधि॥ तगमनसवरकंत्रकरि॥ शिवसंल
गीसमाधि॥ १५॥ **दंडक॥** नीचौराण्योमुउच
रनकीयेउर्धमें॥ दृमदृष्टिदृष्टितयकीनोंम
हीनाकछे॥ सूखिगईतूचासव-ग्रामिषवि
लायगयो॥ श्रोतकोसलिलचलोकेतिक
सपानिचै॥ एकचित्रसाधिकेंसमाधिमहा
कयसाधि॥ कीनोंनविरामकबहूनघटिका
द्वे॥ छत्रकहिसिंभुनांथभूतनाथभवनाथ
संकरप्रसन्नभयेमोपरदयालद्वे॥ १८॥ **दो॥**
॥ द्यौप्रसन्नतोपैभयोमांगिमांगिउत्तालजो
ईशातोमनरहै॥ सोपुर्ऊइहकाल॥ १९॥ **चौ॥**
पई॥ तवमेतिनसोंविनऊसेव॥ नमोनमोदे
वनकेदेव॥ बिरतिभूमिमोमथुरागांव तीनों
भवनप्रगटतानांम॥ २०॥ बासुदेवभूतल-अव
तस्यो॥ दानवकौकुलतिनसंधस्यो॥ लघुवाल

ककडूरहननपायौ॥ सोहरितहअवनीयक
हायौ॥ २१॥ भागीगर्भवतीमोमता॥ विहरिग
ईजहांनिजभ्राता॥ ताकैगर्भभयोतिहिउं थ
सोमांतअहिदानवनाव॥ २२॥ अवसांईसोक
रोउपाउ॥ अपनेकुलकोपाउंदाव॥ लगेन
आयुधहोयनधाव॥ देकधुअसौकरोसहा
य॥ २३॥ दोहा॥ जाकेवलहरिकोंहतोंकुल
कोवदलोलेऊ॥ लहौविरतवरआपनौंजा
ननीकोंसुषदेऊ॥ २४॥ दीनोएकमज्जसता
बकेशिवपरमउदार॥ तवरदाकैहेसमर
सबभाष्योबोहार॥ २५॥ श्रीशिवजी॥ मा
लतीकछंद॥ जबरनजेहे॥ जयजसपेहे
अरिकुलगंजे॥ बरदलभंजे॥ २६॥ जबस्न
जांनौं॥ अरिनपरांनौं॥ बहुबलकीनौं॥ करि
बललीनौं॥ २७॥ दोहा॥ रहिएपैठमजुसमें
ताहिनलखिहेकोई॥ तुवतनकीरदामहा

विज्ञे०
॥४१॥

याहीतैसबहोय॥२६॥ आयो ग्रेहमज
सले॥ बीते कैतिक काल॥ मथुरापुरकों
उठिचल्यो जीतन श्री गोपाल॥२७॥ जबच
लिकष्टू माराग गयो लये मज्जसासीस॥ वि
प्ररूप मोकों मिले॥ तिन भवन केईस॥२८
॥गीतिका॥ जराजुत सब देह निर्वल॥ लकु
ट कर मैं देखियो॥ चल्यो आवत कष्ट सों॥
विचिवाट कै सीलेखियो॥ दया उपजी मो
हि देषत कही इह विधि हेरि कै॥ कहौ वि
प्रचले कहां बां नी सुनाई टेरि कै॥२९॥ रद
न दाबी अंगली द्विज कही सो टिग आय
कै॥ सुनत आवै कृष्ण इहां कहि कों कंचे
भगि जाय कै॥ शष्ट उचौ कौ कौरे सुरदीन
को नही कोलिये॥ ता विप्र की मुख सुनत
बानी मोहि चित चिंता भई॥३०॥ दोहा॥

॥४२॥

मेविनियोंताविप्रसोंरुष्महिकहाडराउ
कोवेलैसुरदीनत॥ सोकहिमोसोंभाउ
३१॥ **विजय**॥ विरतिभूमिमथुरापुरी
तिहअसुरनकोवास॥ रुष्ममानिकें
वेरचित्तकीनोंतिनकोनांस॥ ३२॥ होप्रो
हिततिनकोसदा॥ तिनविनकैगयोही
न॥ नहीवच्यौजजमानजग॥ अबसब
सोअधीन॥ ३३॥ **चोपई**॥ रुष्मसिंघा
रेअसुरअनेक॥ भागिवचीतरुनीतबण
क॥ गर्भवतीचलीपितुकेआई॥ औसीवि
धिविधिनांभाई॥ ३४॥ ताकैपुत्रभयोंमेंसु
न्यों॥ चलितहांजाहंचितमेगुन्यों॥ वह
सुतकैहेवकुवलवांन॥ अवसिराषिहें
मेरोमांन॥ ३५॥ हतेरुष्महिमथुरापुरले
हे॥ धांमग्रामहमकोंलैदेहैं॥ रहसुनिकें

विजे०

॥४३॥

मेरो मन मांन्यो ॥ वह मैं तिज प्रोहित कै जा
न्यो ॥ ३८ ॥ तब मैं सो द्विज निकट बुलायो
सब विधि अपनौ भेद बतायो ॥ त प्रोहि
त हो तो मज मांन ॥ रहि मो पा सराषि हो
मांन ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ फूल्यो द्विज एव च न
सुनि ॥ हर्ष वंत अकुलाई ॥ मो सौं हित ।
भाषे वचन कहि धौं कित जाई ॥ ४० ॥
त ॥ ब मे अपनौ भेद बतायो कृष्ण हि ।
हो जित निचलि आयो ॥ तब फिरि विप्र
कहे अकुलाई ॥ तो पोरिष क्यों जीत्यो
जाय ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ बलिनहि को उर
क्षम सौं तिन लोक मै कोई ॥ ता सौं तो सै जु
ध मे कै से सरि बरि होई ॥ ४२ ॥ तोहि देखि
धीरज भयो ॥ तान्यो जीवन आजु ॥ अब
जिन मथुरा जायत ॥ कै है महा अकाज

॥४३॥

४५॥ तब मैं कह्यो मज्जुस को भेद सबै सम
जाई॥ दीनो शंभु कपाल कै प्रा न रछ कथा
ई॥ ४३॥ सकल निपातों अरि चमूं कौन सकैं
रन जीति॥ हारत जांनि मज्जुस मैं पै ठिर होइ
हरीति॥ ४३॥ सो रह सह सकरी लगी ते स
ब लहु लगाय॥ मोहिल ये नही संभु विना दु
जो को उर आई॥ ४४॥ चित्रपदी॥ विप्र कहै त
ब अरे सैतर न जीतहि कै सैं॥ जानत हं छला
की नों॥ तो कहै हे शह दीनो॥ ४५॥ सो न कहि
कष्ट जाय॥ तु कहि मो सम जाई॥ मै सब वा
त बत आई॥ बात सबै द्विज पाई॥ ४६॥ दोहा॥
सी धिलई सब लई॥ छल करि द्विज वपु मंडि
चे ठो मां मज्जुस हौं॥ सकल कपट कौं श्रां डि
४७॥ चौपई॥ विकट करी उन सबै लगाई
जे मै हुती वाहिस मुमाई॥ तामैं मोहि मुंदि सो
गयो॥ बुद्धि न साई परब सम यो॥ ४८॥ थाको

विज्ञे०

॥१४३॥

बलसबधोरिषभांग्यो॥ कीनोसोकधूका
जललोग्यो॥ सवसीव करततजिमें प्रांन
फिरतहां प्रागटभयो भगवांन॥४२॥ दो
हा॥ एककुपीमें मूदियो श्रीहरि मेरो प्रां
न कौनी सोई कै रहै॥ जोराची भगवांन
५०॥ चौकसकैं तब सोकुपी॥ दर्द सुभद्रा हा
थ॥ विन हूँ मैं धोले न तूम यो विन यो जडु
तांथ॥ ५१॥ चौपई॥ पति कै ग्रह सुभद्रा॥
आई॥ तब सोकुपी साथ हिल्याई॥ न्हांई
रति वंती कै नारि॥ जानि सुगंध लषी सुउ
धारि॥ ५२॥ सगत ताके वज्र सुषपांयो॥ ताके
उदर पै ठिहूँ हूं आयो॥ दिन दिन वाटत वि
कट सरीर॥ विथा सुभद्र हि धरत न धीर॥ ५३॥
दशौ वार की रूधी स्वासा॥ ताहि गई जीवन
की आसा॥ सहस भुजा अहि दान वभयो
सह्यौ न भार मानु पै गयो॥ ५४॥ दोहा॥ दि

॥४३॥

नदिनदेहीइतिदबी॥कसकैरह्योसरीर
देसनआयेसुनिविद्या॥भगनीवै।जडुबी
र॥५५॥**श्रीहृस्म०**॥कहातोहिमनका
मनां॥कहावसेतुवचित्त॥सोमोसौंसमु
जायकहिआनोतेरैहित॥५६॥**सुभश**
उवाच॥पैरोंरुधिरप्रवाहमें॥इहभावैचि
त्तमोहि॥नित्यनित्यइहविधिकरौ॥अथ
वामरीं।तोहि॥५७॥तोटक॥भ्रमश्रीह
रिचित्तभयोतवही॥भगनीमुखवैनसुमों
जबही॥बहुसंभ्रमचित्तहिछाईरह्यो॥क
ष्टूजायनहिमुखवैनकरह्यो॥५८॥जबसूर
ष्टिण्योकष्टूरेनिगई॥तवव्याकुलताभग
नीहिभई॥हरिसोइहवैनविचारिकह्यो
कहिरककथावसिचित्तरह्यो॥५९॥श्री
हरिचक्राव्यूहकीकीनीकथाप्रकास॥छ
माभईसुनिकैकष्टू॥मित्यौकष्टुतनत्रास

हू॥

विजे०

॥ १४४ ॥

चोपई ॥ इहतिथि कथा तहां सुनिलई सु
नत सुनत आधी निगई ॥ देति न हं कानिंश
मई ॥ कछू घमाता के उर भई ॥ ६१ ॥ कथार
ही इह मोचित आई ॥ हं कादैं तव कथा क
हाई तव ही हरि भाषा पहिचांनी ॥ कही न
तव सौं फेरि कहानी ॥ ६२ ॥ कुंड जया ॥ की
नों संभ्रम चित्र में ॥ लक्ष्म क मल दल नैन उ
त्तर का हू असुर कौ नर की भाषा है न ॥ नर की
भाषा है न उदर में हंति न जान्यों ॥ सहस वा
ह कौ सत्रु आपनों तव पहिचान्यों ॥ पहिचा
न्यों तिहि वार सन्यो तव जत न नवीनों ॥ को
क विस के वषां निचित्र जेतो भ्रम कीनों ॥ ६४
॥ दो ॥ सहस वाहु को लक्ष्म तव पुतरा स्मो
व नाई ॥ कस्कि सलै अभिषेक करि ॥ मंत्र ज
प्यो प्रकुजाई ॥ ६५ ॥ ता सों सकल भुजान सी
धे भुज रही सरीर ॥ तव हौ प्राद्वौ भूमि पर

॥ ४५ ॥

भई सुभद्रहि धीर ॥ ६६ ॥ चक्रव्यूहकी कथा
सुनी सुन्यो न ग्रह को भाउ ॥ भीम पेज करि कैरही
तोरे तो चित चाउ ॥ ६७ ॥ जीति कथा सब
मे सुनी सौवर जीतो जाई ॥ रख्यो मुनें विन
भीम सौ तोरि देई सुनि राई ॥ ६८ ॥ भीम ॥
छपे ॥ भीम सेन की पैज करत कौ संक
न करई ॥ मुनि गनत जत समाधि ॥ संभु को
आसन टरई ॥ भूतल को मपताल लंक प
तिकंपत थर थर ॥ गदालेत कर को पिअं
क आतंक सकल नर ॥ कोन कपहिक वि
श्रत्र डर डरि डरि करि वर परिहरत ॥ शोभा
होत सुर असुर के सुरवन पुत्र क्रुद्ध हि भर
त ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ जीतों चक्राव्यूह न कौ
न संके अवराधि ॥ नहि नरेंद्र चिंता क
रो बचन कहै इमि भाधि ॥ ७० ॥ दोहा ॥
दिद्यदल पाशों रोरि सुभट संघारु दोरि पो

विजे०

॥१४५॥

रिपोरि गर्व सब सरनिको गारिहुं ॥ श्रान
हूमें वोरों शोण रथ तै विरथ करों ॥ कएहुं
विकरुण हैं कौं ॥ प्राजुरन मारिहु ॥ सासन
हू सासन कूं ॥ चैन दह बैन को न भूधर से
उधर कौ भूत लप घारिहों ॥ बांन ही की
वाय सों उडाय देहुं सकुनिकों ॥ क्रोध
उर जो धन के सी सही सों सारिहों ॥ ७० ॥
॥ दोहा ॥ कै सुचेत बी रादयो धर्म सुव
न नर नाह पांचो छोहनी संवल दल
हीनो कैर उसाथ ॥ ७१ ॥ सह देव अरु
न कुल संग ॥ चलि दुपदन नाथ ॥ चले।
विराट चमूलिये ॥ प्रौर धरु का साथ ॥ ७२ ॥
भूपनिको सिर नायकें ॥ चलो निसान
बजाय ॥ ग्रह प्राय जननी चरन बंदेव
ऊ सुष पाय ॥ ७३ ॥ इति श्री महाभारते
॥ अभिमन्यु उत्साह वार्णनं त्रिंशो

उत्साह

॥४५॥

ध्याय॥३३॥ सुभद्रा उवाच॥ देषत नो कह
मन गह वस्यो॥ धन्य धन्य कुक्षामोभवत
स्यो॥ अपने कुल को राख्यो पायों धन्य ध
न्य सुत मै पहिचान्यों॥१॥ दोहा॥ मुक्ता।
चो कपुराय कै॥ वेद उद्धरत विप्र॥ चलो
विरस सौ सुभट॥ सत्रुहि नीत न छिप्र २
मंगल गाय सघिन मिलि॥ बाजन विदित
बजाय॥ नौ श्रावरि मनि मुक्त करि॥ नीर
ज चीर लुटाय॥३॥ वंदिन मिलि बेलि बि
रद॥ रथ आरुहे कुमार॥ चलो सब लदा
ल साजि कै॥ कोपि कस्यो करवार॥४॥ दो
धक॥ कुंजर पुंजनि पुंजनि सोहत॥ बैरघ
जाल महामन मोहत॥ देषत यों कविता
छ विद्याजत॥ यो सुत दामिनि बारिद राज
त॥५॥ चंचल बाजि किधौषा घंजन॥ यों
न करंगन की गति घंजन॥ यो सलभागन

विज्ञे०
॥१४६॥

पायकराजत॥ सोभनदीर्घइंदभीवाजत
रजउडितोप्यौरविरह्योधरातमध्याई॥ क
मठकसमस्यौसेसकौ॥ लचिकलचिकसि
रजाई॥ ७॥ **दंडक॥** छातीहोतधरसेसकी
धरधरातकूरमकलमलातभूरितलातल
टूट्टिट्टिट्टुमसिलाछूटिछूटिनीरागेषू
दिषुरथारसकेसरितासकलजल॥ चक्रं
औरचक्रतचषाईससवाइगार॥ अस्थि
वानीसकंपिकंपिउठेहलहल॥ सरप्र
वतंसपंडवंसअंसअर्जुनकेसेनचलेहा
लिउठेभूतलकेथलथल॥ ८॥ **दोहा॥** चल
तकटकपडुंजौजहां॥ तेहेविराटकौधांम
दयोसोधइकसहचरी॥ जगीउत्तरावांम
२॥ **सषीउवाच॥** जीतनचक्रावृहकौ
कोपिचढौतवकंथ॥ चढौबीरसकट

कमै हरषवंत दीसंत ॥ १० ॥ अति आतुर
एवचन सुनि ॥ उछिउन्नरा बंसु ॥ निरगो
प्रीतम प्रांनयति सब साहस को ॥ ११ ॥
चौपई ॥ की नौ कवरि मोह अघिकाई न
ही करी कष्ट हृष्ट भलाई ॥ अब हो सत्य
वचन इम भाष्यो ॥ जातु कवर को हो अब
राख्यो ॥ १२ ॥ उपज्यो मोह हृष्ट इह जंमो
तव विचार उर मेइ हृष्ट जंमो ॥ परम निठुर
ता तव उपजाई ॥ मोह काटि कै रचि रुषा
ई ॥ १३ ॥ तव अभी मनु लषी त्रिय ऐसी
चंद्रवदन रतिकमला जैसी ॥ सखि मसक
ल सुभग अगवनी ॥ दीनी विधी सो भा अ
ति धनी ॥ १४ ॥ **दोहा ॥** बरन कहलौ कवि
कहे ॥ रूप वहि क्रम वाल ॥ निरषिक वर को
मन मथ्यो ॥ मन मथ्ये तेहि काल ॥ १५ ॥ **चौप**

विज्ञे०

॥१४७॥

तवउपाई श्रीरानीकस्यो॥सवतनमथ
मनसिजलस्यो॥यांनमांहसोजलध।
रिलयो॥कवरिउत्तराकैकरदयो॥१६॥भ
छतवगरिगयोतनमांही॥इहसंजोगकहुं
जाम्योनांही॥कैसंतुष्टजुबीरजलयोच
लिअभिमन्युअगहुडोगयो॥१७॥निसि
कौकीनौजाईमीलोन॥भईनिसातवअ
थयोभांन॥सुतीसेजउत्तरावांभी॥भा
गीस्वप्नअरिष्टनिहारि॥१८॥उत्तरावा
उवाच॥देख्योस्वप्नअरिष्टमै॥यातैंजीव
अकुलाई॥जांनौकुसलनकवरकी प्रां
नउप्रौसोजाय॥१९॥सवेया॥जांतलि
विवाहनकौअभिमन्यु॥भयेसपनेकपि
रिष्टवराती॥गावतजंवुकवाघसुगीत
नि॥मंडफष्ठावतगीधसगाती॥रातेई
भूषनरातेईमालसुपागवनीगहररग

॥४७॥

गराती॥ पंचसखी मिलितिल गवतया
उरतेंधरकी वझुझाती॥ २१॥ **दिहा॥** क
ह्यो विप्रसोंदांन करि॥ बेठिरहि सो भाला
बीरजलहि संतुष्ट के॥ गर्भधर्योतिहिं का
ल॥ २१॥ चलि पझुच्यो अभिमम्युदलच।
का वृह निकेत॥ सुद्धि भई कुर राजको॥ प
छ्यो नर सुधि हेत॥ २२॥ **इति श्री ०॥ अभि**
मम्युपयानवर्णनं नाम चतुर्विंशतिमो
ऽध्यायः॥ ३४॥ दोधक॥ वंदित बैनर नाथ
पठायो॥ नाम लसैं विद्वंत सुहायों॥ को
सजि कै रन को घटि आयो॥ सो ही ठि से न
कितौ संग ल्यायो॥ १॥ जायव सिठत हांड
म देख्यो॥ घोर घनौ घन सो दल लेख्यो॥ वृ
त लोगन को सजि आयो॥ भूमि जु धिष्टिर
रोषन ध्यायो॥ २॥ कै सह देव कि अर्जुन सो
हे॥ सर कहो दल में अब कोहे॥ जातु कहा

॥ श्री ॥

विजै०

॥ १४८ ॥

किततैचलिआयो॥ भेदकष्ट अवमेन
हीपायो॥ ३ ॥ **सनाउवाच॥** अर्जुनसुत
अभिमन्युतवचब्रो निसानवजाई॥ जी
तहिचक्रावृहकों॥ कोअबसकैवचा
य॥ ४ ॥ चलिवसिठपहुचोतहां॥ पारथ
सुतकैपास॥ बैठौदेष्टो कवरतह॥ सा
हसजुतसविलास॥ ५ ॥ देअसीसठाडोभ
यो॥ आदरकीयो कुमार॥ कुसलप्रसन्न
हिवृत्तिकै॥ बैठकदर्शअगार ६ ॥ **अभि
मन्युठवाच॥** कैसौचक्रावृहनृप॥ रा
चौकहौकिहरीति॥ सोईघटिकारकमें
पेठीलेहुसबजाति॥ ७ ॥ **वसिठउवाच॥**
कोटरचेइकईसगुर॥ संघटकहोतजाई
पेठिकोंनकहनीकरै॥ बंकटुर्गमजार ८
विकटगरीमाराविकट॥ पायरसमरगं
भीर॥ ताकेअमितप्रवाहधसि॥ कौनतहि

॥ ४८ ॥

सकेंतीर॥२॥ डरजोधनवलिवंडसुत लाघन
नामकहाय॥ प्रथमकोटआभारसिरल
योभुजावरआय॥९॥ कोटदूसरेविकट
मेंविशुविरकौवास॥ तीजेंसत्यकहोवली
तीजेंकोटनिवास॥१॥ कोटचतुर्थमद्रोण
सुतरह्योवलीगलगाजी॥ सकुनिपांचवेको
टमें॥ राधोवकुदलसाजि॥२॥ छटैसुसर्मा
सातये॥ साज्योसवलसुवाहु॥ अष्टमविस्वा
सैनतहा॥ सजेंकवचसंनंह॥३॥ नवम
विषमभूरिश्रवादसयेकोसवभार॥ एकाद
शअरुकादसे॥ ताहिकौविस्तार॥१४॥ को
टतेरहैद्रोणगुर॥ सकलसैनकीलाज॥ चतु
र्दसगंगेवतहै॥ राजतबडोसमाज॥१५॥ हैक
लिंगगटपंद्रहै॥ जीनवहुजितेजुध॥ दसा
सनगटघोउशै॥ सोनासहितसक्रुध॥१६॥
॥चौपई॥ सप्तदशैक्रतवर्मादेव्यो॥ ताकौम

विज्ञे०
॥ १४९ ॥

हागर्वमैलेष्यो॥ महादसेलसैमहाबाहु न
वज्रतलेनालय उत्साह ॥ १७ ॥ **दीहा** ॥ कोट
बीसएकरणटप ॥ ताकेवलहिमभंत ॥ एक
विंशग्रहअयंइरण्य ॥ साज्योदुसहदुरंत ॥ १८
दुरजोधनसबअनुजजुत ॥ साजिसेनच
तुरंग ॥ न्यारौलसैमहीपजहां ॥ सुभटविक
टसबसंग ॥ १९ ॥ इहविधिचक्राग्रहकीसु
निअभिमन्युकुमार ॥ करौविदाचलिजा
यउहदुरजोधनकैवार ॥ २० ॥ **अभिमन्यु**
उवाच ॥ सजैनृपतिमहारथीनसकलस
जैत्रनत्रांनइहसंदेसौदेहुतुम ॥ करवरगहै
क्रपान ॥ २१ ॥ पहचौदुतमहीपयें ॥ कहीस
कलविधिजाई ॥ नृपतिजुधिष्टिरकीचमूं
तमुपरपहुंचीआई ॥ २२ ॥ साज्योचक्राग्रह
ये ॥ पारथसुतवलिवंड ॥ नांमवेधलघुजां ॥
नियेपौरिषपरमप्रचंड ॥ २३ ॥ ताकोसाहस

मेलष्यौ कहतनुवनईवताम ॥ कहतुलैहु
होजीतिकैंचक्रहैहीजात ॥ २४ ॥ कसेउताव
लकटककेसाजोरानाराय ॥ सावधानसब।
होयभटगर्जिनिसानवजाय ॥ २५ ॥ तोटक ॥
अतिहारनरसतबैपठयो ॥ अवनोसनसोध
सुदैनगयो ॥ सुनितामुषवैनसबैसजिकैं त
नत्रानकसेबहुधागजिकैं ॥ २६ ॥ बहुओर
निथोरनिसानवजै ॥ वज्रकुंजरवाजिसमू
हसजै ॥ रथवंतमहारथिसाजितहां ॥ लषि
येनहियौनप्रवेसजहां ॥ २७ ॥ अभिमनुतहां
जबसाजिचल्यो ॥ वज्रविरनकौहियदेपिरु
ल्यो ॥ पहिलेग्रहमध्यप्रवेसकीयो ॥ तबला
घनकीसोईदृष्टिपस्यो ॥ २८ ॥ लषिवालक
सोनकरैनको ॥ इहसोकभयोअतिहिम
नको ॥ नगहैधनुवांनसुसीधुनै ॥ पहलीप स
हलीहियमांहिगुनै ॥ २९ ॥ लाघन ॥ दोहा ॥
अतिअपराधीमोपिता ॥ पंडसुतनानहियो

विजै०

॥१५०॥

रि॥ उननधरी जिय मां हइन औ गुन किये
करोरे॥ ३२॥ ननवरुन मंदिर कस्यो ताम
हि दिये जराय॥ भाजि उबरे दावा गिने श्री
हरि की सी सहाय॥ ३०॥ पासे कपट बनाय
कै॥ थल कै लये हराई॥ राज पाट सब छिन
कै॥ दीने विपन पठाय॥ ३१॥ धै चतल मानां
करी॥ दुपद सुता को चीर॥ करी सहाय उध
स्यो नही कितहु तन कसरी॥ ३२॥ ऐसें के
रि विचारै॥ समरन आप आपाई॥ जान द
यो सुत पथ्य को॥ नहिरा छ्यो विरमाई॥ ३३॥
गयो पेछि ग्रह दुसरै॥ पथ्य पुत्र बल वीर नि
रघत धनु गुन जुत कस्यो॥ विदुर उद्यो रन धीर
३४॥ निरघत ही अभिमन्यु के॥ विदुर डला यो
सीस॥ रक्षा बालक की करौ॥ कै कपाले जग
दीस॥ ३५॥ आपन कां ध्यो जुद्ध नही॥ धनुष
दियो भुवशरि॥ पापी बैठै ग्रेह कत॥ पंड पुत्र
तुम चारि ३६॥ पोरि घत जिल जगत जी॥ त

जीसकलकुलकांनि॥ बालकरनहिपठा
यकै॥ प्रापरहेमुखमनि॥ ३९॥ दोर
तनदीरघभुजा॥ दोरघपौरिषपाई॥ कात
रकैबैठेसदन॥ वहुवलवंतकहाई॥ ३७॥ वि
दुरसाथवरज्योसबै॥ कोउजुरैनजुद्ध॥ च
ल्योतीसरीपौरिकोंपथ्यपुत्रकैसुद्ध॥ पे
ठिगयोगठतीसरे॥ पथ्यपुत्रतवधाई॥ स
हितसल्यभटसकलमिलि॥ लीनेधनुषच
ढाई॥ ४०॥ सनमुखसमरसरोषकै॥ उरहनी
सक्तिकैक्रुद्ध॥ जुरेवीरविविजुद्ध॥ तवहि
पथ्यसुतसल्यउर॥ हनीसक्तिकैक्रुद्ध॥ ४१॥
विषमचोटनहिसहिसकौ॥ भज्योबेगीदे।
पीठ॥ पारथसुतकीनीतबै॥ चौथेग्रहतन
दीठि॥ ४२॥ चौपई॥ तहांशेणकौसुतवलि
वंड॥ जाकौपौरिषलसैअपंड॥ तहाअभि
मन्युबेगिदेंगयो॥ तासौमहाजुद्धतहांभयो

विज्ञे०

॥१५॥

४३ ॥ अग्निवांनउतलीनेतीन ॥ दुरिप
ध्यापुत्रनेछिन ॥ वांनबीससोंगरसुतह
द्यो ॥ तकैं परमक्रोधउरछयौ ॥ ४४ ॥ तब
अभिमन्पुहयौ सतवांन ॥ उनसरकीये
सहससंधान ॥ दोउसमरकरतवलिवंड
दोउवरषतवांन अषंड ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ ए
कैविद्याइहूनकी ॥ संग्रमकरतसमांन वै
सेवैई औरकोपठतरदीजे आंन ॥ ४६ ॥ वर
हीपारथसुतगयौ ॥ कीटपांचरेंकोपि स
कुनिरह्यो तहांक्रोधकरि ॥ अंगदज्यौपाग
रोपि ॥ ४७ ॥ सकुविउ ॥ वांधौजीवतबान
कैं ॥ भागिनपावैजानि ॥ मारिले कुतिन।
कौअवै ॥ जोकोऊसजैंकपात ॥ ४८ ॥ छेक्यों
चक्रदिसितैंकवर ॥ वांनअनेकचलाई ॥ दो
रकर्मकानेमहा ॥ रह्योव्योमसरछाई ॥ ४९ ॥
रनकरालअभिमन्पुको ॥ सद्यो नषलपैजा ॥ ५० ॥

ई॥ जितहि दवा गनिते उडे त्रणस्योदलमह
राई॥ ५०॥ भजे लजे नही सकुनि उर॥ सबदल
गयो पराई॥ बहोतबीर अभिमन्यसौ॥ उबरे
हाहाघाई॥ ५१॥ छठे सातये आठये नवये को
टमगाई॥ दशएकादशद्वादशोपकुचो वी
रही जाई॥ ५२॥ सबही कौसरसे लहसौ हत
वरगर्वनवाई॥ गयो ते रहे कोटधसि शोण
उद्यो अकुलाई॥ ५३॥ दोए उवाच॥ दोधक॥
बालक तरण मै कित आयो॥ हौं न मुन्यों
महतै कत धायो॥ तो सम संग्रम हौं कत मां
ड्यों॥ बालक जानि हिये अवधांड्यों॥ ५४॥
जानत हूं अवक्यों भगिजै है॥ क्यों करि कै इ
षती छन सै है॥ काल बली वर तो कहल्यो
बालक भूमि इहा चलि आयो॥ ५५॥ पारथ
भीम जु धिष्टिर आवै॥ सो कछू नैंक प्रवेशन
हि पावै॥ तू कित पैठ सकै ग्रह माही॥ तो अ

विज्ञे०
॥१५२॥

बगाहन कौं इह नांही ॥५६॥ **दोहा** ॥ सुनत
कवर इह परजसौ ॥ फुकिकै वो लो बैन ॥ क
रधन गहि गुर विप्रत्त ॥ छिन श्क जुध जुरै न
५७ ॥ **सवैया** ॥ बालिक मोहि गिनो जिन प्रो
ए सुकौं नही बांन सरासन साजत ॥ जांन दु
जुग शिवं सकीरी तिनही ॥ लखिकै कौं ऊंज
इहि भाजत ॥ मोस गजो लगी ॥ प्राप जुरै नही
तो लगी हैं इहि मंडल गाजत ॥ तो लग आ
पन चितन ॥ प्राणत ॥ जो लगी बांन न सीस
विराजत ॥ ५८ ॥ **दोहा** ॥ कौं न हमारें बंस मै
भाग्यौ देखि जुगार ॥ तातै प्रो ए विचारिकै
करटे को करि वार ॥ ५९ ॥ कृपा करो जो आ
पउर प्रथम हि करौ प्रहार ॥ रहै न थो थो ॥
चित्त मै धरिये हाथ हथार ॥ ६० ॥ **गीतिका** ॥
बांन प्रो ए तजै न हि श्क वचन को रिष कना
धियो ॥ जानि बालिक भेष करुना द्रुद मैव

झराषियो॥ कोपिके अभिमन्यु धंटे कालसे
सरलेषिकें॥ सहजहितीन छिनडारे उरधा
आवत देखिकें॥ ६१॥ दोहा॥ पुरपवांनअ
भिमन्युलै ध्वजापताका काटि॥ उरभूता
लसरनसों सवदललीनौ पाटि॥ ६२॥ सवैया॥
जेवहु काली कृते जित बार सुते ऊंजुरे नही जु
छप्रनैसैं॥ बांन बेधिसब केतन यो जिमिरो
प्रत व्याल विलै महयैसैं॥ सरसन ध्वभराअ
घअधक महु गिराय द्ये सब अैसे॥ ज्यों
उनमत्तमतंग सरोवर पैठि विदारत बारिज
जैसें ६३॥ दोहा॥ हयो शोण द्वैल छिसरक
लौन संग्रम जाई॥ सलभागन ज्यों व्योमध
र रहे बांन तहै छाई॥ ६४॥ सवैया॥ को
ठिको टिहु तेवहु जोट सुकाहू न दै चटिका
विभूमायौ॥ पौन के गौन तैं वाटि उद्योदल
नीरद संघट सो विचरायौ॥ भूतल व्योमद

विज्ञे०

॥१५३॥

गतिदिशा ॥ स ॥ रथके सरपिंजरछा
यो ॥ कै ॥ र ॥ तससोकतअंकनिकोर
वज्ञानतअर्जुनआयो ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ मंड
लीककीनोधनुषपारथसुतवलिवंडवे
घोगुरद्वैसरनिसौं ॥ जीतौसमरअघंड
६६ ॥ समरसह्योनहिद्रोणगुरसह्योमहा
हियहारि ॥ येद्यौअगलिकोटमैपारथसु
तभटभारि ॥ ६७ ॥ औरसकलथलजीति
कैपहुंछौंकर्णनिकेत ॥ तबहीउठिठ
उभयो ॥ सोईरनकैहेत ॥ ६८ ॥ कर्ण ॥ ३०
जानतहैंसिसुमीचबुलायो ॥ टीठभयो
चलिमोदिगआयो ॥ ब्रह्मकुंतोदिजने
एपरानों ॥ होंतिनकासमतोकहुंजानों
६९ ॥ जीवतक्योंनभजैभजिमोपै ॥ होई
कहाअबमोदिगतोपै ॥ पारथकोसुत
योंतबभाषै ॥ कर्णबुलावजुतोकरावै ॥ ७० ॥

भूपजुधिष्ठिरकी जयको कुरुनंदन बाँधो दिहो
देवत तेरे ध

सवैया॥ वीर-अवीर महि भर भीर सुतीर हि
तीर परे सब हैरें॥ आनु सवै गुं वगर्व हनो अ
व पायो है मैं करि आपनै नैरें॥ जीवत जायन
सन्मुख प्राय कैं॥ तो सह मूढ कहों इहे टैरें॥ १
॥ दोहा ॥ आपधनुर्धर धीरनुमर हे कहां ईक
हाई॥ तो बल दाई जांनि हों जु छ जीति जो जाई
१२॥ दुर जो धन बांधौ जियत तेरे देवत आजु
नृपतामहि मंडल करै जुधिष्ठिर माहाराज १
३॥ **सुंदरी छंद॥** कर्ण महीपति रोस कस्योत
ब॥ उरधमें सर छाइ रहे जब॥ ते अभिमनु
बली बल तोरत॥ सनमुख तैं अंगनै कन मोर
त॥ १४॥ आहि धनुर्धर वीर महावर॥ योम ही
छावत है सरही सर॥ अद्भुत मुदन ही कहि आ
वहि॥ कोउ पमा कहि ताहि बत आवहि॥ १५॥
दोहा॥ लख्यो कर्ण अभिमनु कौ॥ जवहि ज
यं दय जु छ॥ बल सौरे के पंडु सुत निरछो बैठि
सकुव॥ १६॥ **चौपई॥** भूपजुधिष्ठिर भीमप

विजे०
॥१५४॥

चाह्यो॥ तापदिन यत्नसो अरिमाह्यो॥ पं
हुमरी पतिके सुतरोके॥ बैठि रहे ससवाय
ससोके॥ ७७॥ दोहा॥ भयो सहार्द्र सवरों
के पंडव अरि॥ रह्यो जयं प्रथरो पिपग अंग
दकी उनहारि॥ ७८॥ चौ॥ चलि अभिमन्यु
ग्रेह में गयो॥ पंडवर रहे अकेल भयो॥ भयो क
र्ण सौं जुध कराल॥ श्रयो अका सधरा सरजा
ल॥ ७९॥ जब अभिमन्यु ब्रौ वह क्रुद्ध रवि
नंदन सहित कौं न जुध॥ विचरि भयौ नही
रोष्यो पाव॥ उर पारथ सुत भौ अति चार्तु ८०
सुंदरी॥ बानन साथ उड़ाय दये भट॥ पौं न च
लें जिमिनी रद संघट॥ कौरव यों लषिकें उर
आनत॥ आय गयौ रन पारथ जानत॥ ८१
दोहा॥ पाछे देखे पथ्य सुत साथ न पंडव।
चारि॥ विलष वदन विषमो कियौ॥ रह्यो वि
चारि विचारि॥ अभीमन्यु उवाच॥ गीतिका

आजुजोरणभीमहोतो॥ जुद्धमेरोदेखतो॥ कैप
राजितकर्णभागे॥ सकलकोतिप्रलेखतो
लघैपौरिषकौनमेरो॥ कियोइहथलआय
कै॥ जानिकैउतपातकौरवकुवरछेकौ
जायकै॥ ८३॥ दीपउपरज्योपतंगेज्योपरेभट
धायकै॥ जुरेनभूरीश्रवादहबैनदूसासन
बली॥ जुरेकौरवजुतकलिंगहिसोभिजेन
अस्थली॥ ८४॥ दोहा॥ चक्रदिसितैअभिम
मुतबछेकिलियोवलिबंड॥ घेसोसुरपति
गिरिनज्योकरिकरिकोपअंधंड॥ वरुनोको
पअभिममुउर॥ तबमुकरायेबांन॥ कटेप
ताकाचौरध्वज॥ कटिगएकरनक्रयान॥ ८५॥
॥ भुजंगमप्रयात॥ चलिभागिचक्रदिशारा
ईरांने॥ निधंगीचलैचर्मचर्मैपरांने॥ रथीसा
रथीअश्वहस्तीभोंहै॥ नहीमुद्धमैंबीरको
ऊपडेहै॥ ८६॥ पताकाध्वजकाटिद्वैषंडकी

विजै०

॥ १५५ ॥

नैं ॥ तदै अस्त्रकाहु नही हाथलीनैं तहां
कोतिकें कारीको पुत्र आयौ ॥ मनौ दंडधारी
महारोष आयौ ॥ ८८ ॥ तबै पुत्र के पथ के पु
त्र सौं जु दगन्यौ ॥ नही चित्त मैं नैं कहु त्रास
आन्यौ ॥ कटे बां नही बां नसौ अंगता के क
रै विरदो उड्यो जु दथा के ॥ ८९ ॥ दोहा ॥ रवि
नंदन कौ पुत्र तहै बीर नमनि त्रय के त ॥ पा
थ्य पुत्र कौ जोरही जानन भीतरि देत ॥ ९० ॥
अर्धचंद्र अभिमन्यु लै हन्यौ दिये बर बीर
मोहित के भूतलि गि स्यो ॥ अति थर हस्यो
सरीर ॥ ९१ ॥ चौपई ॥ डर जो धन सुत लथम
न धायौ ॥ पारथ सुत सौरन कौ आयौ ॥ दोऊ
भिरत न मानैं हारि ॥ सकैन को र्जकाहु मारि
९२ ॥ दिसि दिसि तैं जु रिकोरव आयै ॥ चहु
दिसि नैं सुख सुकरायै ॥ मुदगर काहु सक्ति
समहारि वर करि पारथ सुत तन डारि ॥ ९३ ॥

रंम

मुरच्छिगिस्थोधरनिश्रुक्ताई। दुरसोधन
 सुततवउठिधाय॥ दोहधियादासुतछिम
 नह्यो॥ विनाजीवपारथसुतभयो॥ २४॥ धा
 र्मजुधनहिहियेविरचास्यो॥ पस्यो कवरति
 हिदुष्टसंघास्यो॥ सुनतजुधिद्विरवक्रुडुष
 पायो॥ अतिआतंककटकमेंछायो॥ २५
 ॥ दोहा॥ कृष्णपक्षएकादशीमारागमास
 बषांनि॥ प्रांनतजेतवपष्ट्यसुतकठकर
 स्योभयमांनि॥ २६॥ इतिश्री॥ अभिम
 मुसंमोहनोनामपैतीसमाध्यायः॥ ३५॥
 दोहा॥ अर्जुनआयोजीतिरन॥ पश्चिमदि।
 सिअवगाहि॥ निरघिससोब्यो कटकसब
 अतिभयउपजीताहि॥ १॥ मुजंगमप्रयात॥
 ससोके विलोके सबैरायरानें॥ महादुष्य
 संजुक्तजोको वषांनैं॥ नगावैगुनीनाकहूं
 बंदिगाजें॥ बुधीसौनहीवेदविद्यानसाजें २॥

विजे०

॥१५६॥

मसालेंनदीसैनहीदीपदेखे॥सबैसर-आतंक
सोंदितलेखे॥तबेपण्यजीयमेमहात्रासया
यौ॥तहांद्विनप्रीकृष्णजूकोसुनायो३॥अ
र्जुनउवाच॥दोहा॥विलष्योदेष्टो कटकस
ब॥अरिविलष्योसबसाथ॥जानतहौंजुम्यो
इहाधर्मपुत्रनरनाथ॥४॥कैरनजुम्योभीम
अब॥सबविधिभयोअकाज॥पुरषारथ॥
सबवरगयोगयोहाथतैराज॥५॥नृपतिजु
धिष्टिरपैगये॥देष्टोसबपरवार॥पगबंदेक
रजोरिकैं॥अरुदृम्योवोहार६॥अर्जुन
उ॥देष्टतसबहीकुसलसौ॥कुसलसक
लअवनीस॥कौनहेतविलषेसबैसोमो
सोंकहिईस॥७॥लाजमहाउरनृपतिकें
कह्यौकधूनहिजाई॥हरयेनृपबोयो
तबैविलषविदनअबुलाई॥८॥आजो
वाच॥कहोकहाकहतनबनै॥भईप्र

नेसीबात ॥ जुमियसो अभिमन्युन दुष
नजरतसबगात ॥ १५ ॥ कपटजुधगुह्येणरवि
चक्रावूहवनाई ॥ ताहितहमकौपय्यसु
निन्यौतौदियोपठाई ॥ १६ ॥ सोरनहमजान्यौ
नही ॥ रहेचक्रतनरनाथ ॥ साहसकैं अभि
मन्युतब ॥ बीरालीनोहाथ ॥ १७ ॥ पैठेवंकट
कोटमैं ॥ भीमआदिदेसाथ ॥ दोणकर्णकौदे
षिकैं ॥ धीरजरह्योनहाथ ॥ १८ ॥ नकुलसह
देवभीमकौ ॥ रह्योजयंद्रथरोकि ॥ भयौसहा
ईईसवररह्यौविलेकिविलेकि ॥ १९ ॥ कव
रकर्णसौजुधकरिफेरिगीस्योमुराई ॥ लखि
मनकौपिगदाजईपस्योसुमास्योआई ॥ २० ॥
हाहाकरिसुनिकैंगिह्योतवहीपारथबी
रबीतैंएकमहूर्त ॥ सुधिमैभयौसरीर ॥ २१ ॥
हुनई ॥ सहेवांनकौद्रोणके ॥ कौकरिअ
गयौजुध ॥ मुषबाह्योसुतकौनकौ ॥ कर्णभ

विजे०

॥१५५॥

योतवक्रू॥१५॥रोकिरह्योमगजयंश्यभी
मनपायोजांनि॥निषट्श्रकेलौपुत्रतवतिहि
थलछंडेप्रांन॥१७॥**चौपई॥**भीमसेनजोपा
वैजांनि॥क्योजुनपावैसुनिदांन॥कस्योजय
श्यकोइहभयो॥तातैमैइअबइहपनल्यो
॥१८॥प्राजुवैरसुतकोहैंसारो॥अथवतद्योस
जयंश्यमारो॥जोपोरिषहैंइतो नसाजो॥तो
मांतापितुपंडहिलाजो॥१९॥**सवेया॥**माता
पिताहिलस्यार्कमहाअरुतीरथवतसवेध
महारो॥दोषविनांतरुनाहितिजेतिनकिग
तिपाइनिरेपगधारो॥विप्रनकोअपमांनकि
यो॥पतिसोत्रियविचिविद्योहहिपारो॥राते
कपातकमोहिलगैपुनिजोनहिआजुजयं
श्यमारो॥हेमहरैद्विजदोषकरै॥अतिगर्भ
भरैंगरमांननसावै॥मित्रकोदोहलहैपरवि
त्तसुचित्तकुकर्मनिकेमगलावै॥झूठीयेसा

रा

पित्तौ आबहि भाषिनि॥ काजसदा अपस्वा
रथ भावे॥ जो न वधौ वर आज जयं द्य॥ ए
ते कयाति कमे॥ सिर आवे॥ २१॥ दोहा॥ क
रिये जह ठि पय्य इह व द्रुम करि रन धीर॥ ज
ब जां न्यो विसमौ करत॥ चरितर ज्यो जहु बीर
२२॥ माया बपु अभिमन्यु तव॥ अर्जुन कौंद
र साय॥ सपनौ सा चौ जां निचित॥ संभ्रम रह्यो
भुलाय॥ २३॥ शिव पुर देख्यो पुत्र तव॥ सपनौ
खलत सारि॥ चितयो सा इत मैं नही॥ रह्यो प
य्य मन मारि॥ २४॥ रुदन कस्यो सुत इंदु कै आ
सुचले अपार॥ परे पुत्र की पीठ पर॥ चित्तै कस्यो
तिहि वार॥ २५॥ अभिमन्यु उवाच॥ सोरठा॥
कौन पिता को माय॥ न मुरख रोवै कहा॥ सब ज
ग आवै जाय॥ कर्म पासि वंधन वध्यो॥ २६॥ कौ
मांता कौं पुत कौन कहौ का कौ पिता॥ बर धत्ते
जग धत्त कौ तिक सो दिन दोय को॥ २७॥ दोहा॥

विजे०

॥ १५८ ॥

भग्यो सो कत बध पृथ को ॥ सुनत पुत्र के वे
न ॥ इतने निरुप चरित्र के ॥ उघरि गये फिरि
नैन ॥ २७ ॥ **न राज ॥ छंद ॥** क ह्यौ चरित्र ह
ह्य सौं सुपथ्य ॥ प्राप देखियो ॥ र ह्यौ भुलाय
चित्त मै कछू विषाद ना कियो ॥ उद्यौ सरव
मैं गाजि कै वद्यौ सरोष चाय सौं ॥ क स्यो नि
षंग को पिकै कराल काल भाई सौ ॥ २८ ॥ **ते**
क ॥ कुराज सुनी इह बात तही प्रगट्यौ
गुर सौं सब भेद जही ॥ कछू आपन आजु
विचार करौ ॥ इह मो विनती हिय मो हि धरौ
३० ॥ दिन एक जयं द्य राषि अबै ॥ मम पूज
हितो मन काज सबै ॥ व्रत आजु धनं जय को
टि रिहै ॥ नर है जग जीवत सो मरिहै ॥ ३१ ॥ **कु**
राज क ह्यौ इह मां नि अबै ॥ सुत पंडु अ
नाथ विचारि सबै ॥ तब ही नृप सौ गुरु दो
ए कहै ॥ बरया कहु राष हु कौं न लहै ॥ ३२

देहा॥ द्रोणाचारजतबरचौ संकटवृहव
नाई॥ भेदभावजाकौकछू॥ कहूंनजांमो जा
ई॥ ३३॥ आगैसूचीअग्रसम॥ रचौविकटअ
तिवृह॥ आसपासहाथीरथी॥ राषेसूरसस
मृह॥ ३४॥ जमहूकोनप्रवेशजहां॥ दुर्गमडु
सहसवारि॥ नरकिंनरनहिलहिसकैं रहे
सुरेसौहारि॥ ३५॥ भाग्योचाहतजयदृश्यपौन
नहिपावतजांनि॥ राष्योसंकटवृहमें तजौ
आथवतभांन॥ ३६॥ जोपई॥ राष्योवृहमां
हसोलाइ॥ जमहुपेसोलह्योनजाई॥ आसा
पासगजरथकीपांति॥ दुर्गमडुसहरचौवडु
भांति॥ ३७॥ रश्मिकद्रोणचमूपतिवीर॥ अतु
लपराक्रमसाहसधीर॥ गज्योपथ्यधनुष
लेवांन॥ सारथकीनौतवभगवांन॥ ३८॥ दो
हा॥ वाजेमारुजुधके॥ अतिगतिवतलनि
सांन॥ मेरिसंघवहुधुनिभई॥ करवरागहेक

विज्ञे०

॥१५॥

पांन ॥३२॥ मथन नुह गुरुश्रेण सौं वाजीअ
सिद्ध ॥ मार ॥ न हि प्रवेश अर्जुन लहै करत
अमित संघा ॥४०॥ मासो परैन पथ्य पैं शे
ए पुत्र वलिवंड ॥ सरस मूहन भक्षा इत है सं
ग्रम कीयो अघंड ॥४१॥ मीतिका ॥ पथ्य के
रथ के तुरंग निश्चित न तिल तिल कैं छण ॥ दे
सकै नहि अग्र को पग परम विकल कै गये
बाहि मुषा श्री कृष्ण बोले बीर इह सुनिली
जिये ॥ अंबु पीवै वाजि जे सैं ॥ सो कष्ट विधि
कि जिये ॥४२॥ बांन घाई अकास अर्जुन
येह सौत ब करलीयो ॥ मारि सरसों गंग का
टी नीर अश्व निकों दयो ॥४३॥ फेरि को श्री कृ
ष्ण नूर थपे चढे अकुलाई कै ॥४३॥ दोहा ॥
बर करि कैं द्विज प्रीण कौं सरहति चित्त भ
माई ॥ गयो पथ्य दे दाहिना ॥ दल में पडुं चो
जाई ॥४४॥ भयो समर नृप करण सौं तिनहं

४ पंडु को सुन जे न सो न बही जुरे रन जाय के

रा

रण अघवाई॥ पेलिगयो बलि आगमनौ ज
यकौ संघव जाई॥ ४५॥ जो जमती न गयो व
ली बरही कटक मजार॥ तहंजुरे रण सकुनि
सों॥ संग्रम भयो अपार॥ ४६॥ भयो कुलाह
ल को कहै॥ सुन्यो कष्ट नही जाई॥ सुन्यो सं
घ नही पथ्य कौ धर्म पुत्र विलषाय॥ ४७॥
॥ चौपई॥ पांच जन्य सष्ट सुनिराई॥ मन ही
मन विलष्यो अकुलाई॥ सात्यक जादौ प
ठ्यो जहां॥ संग्रम करत पथ्य हो जहां॥ ४८॥
रथ चढि धनुष वांन जिन लयो॥ प्रथम श्रेण
गुर आदौ भयो॥ कह्यो वादि जादौ रन आ
यो॥ मैही तुव गुर पथ्य पढायो॥ ४९॥ घनि
काचारिक संग्रम भयो॥ ॥ ज॥ भूतल व्यो
म सरनि सों छयो॥ दि सि वि ^{क्र} दिशानहि
सुगै नैन॥ सात्यक कहै विप्र सो वै न॥ ५०॥
॥ सात्विक उवाच॥ दोहा॥ जाह विप्र प्र

विज्ञे०

॥१६॥

बभागिकैं॥ समरकरतवे काज॥ जो न भजा
उत रहैं॥ तो गुरपथ्य हिलाज॥ ५५॥ विष
मवं॥ न उर लगत ही शोण गि स्यो अकुलाई
जहां हुतो भूरिश्रवा॥ ता डि गय कुच्यो नाई
पर को प्यौ लखि भूरिश्रवा॥ करली नो दस
बांन॥ सात्यक कैं तिन उर हये॥ सुरपति व
ज्र समांन॥ ५३॥ वहुत जु दतिन सौ भयो को
कविकहे सुनाई॥ तव सात्यक मोहित
भयो॥ धरनि गि स्यो अकुलाई॥ ५४॥ गी॥
तिका॥ धाई कैं भूरिश्रवा कर के सजा दें
के गहे॥ जो धसों रुक मोरि कैं बहु वचन
इह विधि सों कहे॥ प्राजु ही सठे तो हि मा
रें तोहि॥ ५५॥ कौन वचावहि॥ आशैं
वर तो हिराजें॥ घों ताहि कों न बुलाव
ही॥ ५५॥ दोहा॥ ताके वध हित परा लै
भुजा उठाई वीर॥ निरखि पथ्य वहु को

धकै बांन हन्यो रनधीर ॥ ५६ ॥ दोधक ॥ दधि
नवाऊ सुषरग उडानी ॥ इटि परी सवरे दल जां
नी ॥ घूटि गयो तब जादव जैसैं ॥ केहरितै मृ
ग घूटत जैसैं ॥ ५७ ॥ जांदव को पित्रपान सहा
स्यो ॥ कौरवनें वरही अरिमास्यो ॥ काटितवै
सिरभूतलडास्यो ॥ ज्यो द्विज जगपत मै पशु पा
स्यो ॥ ५८ ॥ नागस्वरूप नीछंद ॥ नधीर सैं न
में रही ॥ न जाई जो कछूक ही ॥ ससोक वंत
कै गये नरे सडुष्य सों छये ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ पंऊ
ज्यो अर्जुन पासत ब ॥ सात्यक जादौ जाय ह
न्यो वली भूरि श्रवा करनंदन पछिताई ॥ ६०
॥ सोरठा ॥ कह्यो सुधिरि राई ॥ भीमसेन सों
बोलिकै ॥ सुदित्यावत हां जाई ॥ तहो पश्य
संग्रम रच्यो ॥ ६१ ॥ तोवक ॥ कर बांन सगासन
जीमल्यो ॥ तव पारथकी सुधिलैन गयो ॥ त
हमार गमै द्विज शोण लख्यो ॥ तिनि देखत हि

विजे

॥१६१

इमबैनकह्यो॥६२॥ फिरि जाहु घर नहि॥
वाटलै है॥ मम वांन नही छीन एक सहै॥
मुनिकै डकु विरनि जु दकीयो॥ धर भूतल वा
न निशाय लयो॥६३॥ तब ही रन भीमहि को
धमयो॥ गर कौरथ बीर उडाय दयो॥ पट को
धरनी तल मै जवही॥ नर ह्यो भगि विप्रग
सीतवही॥६४॥ दोहा॥ रथ के वाजी भीमत
बधिनही में संधारि॥ वाघो क्रोध सोडस।
कुबर तवही उरै मारि॥६५॥ कोपे डधर डध
बल सुवल सबाह प्रचंड॥ सोम सुलंग।
असे घरन॥ जिन जिते वलिवंड॥६६॥ भीम
सेन रन को पिछै॥ इकई कसर सव मारि।
ओर रथीरण धीरण॥ उरै किते संधारि
६७ चलो सररण ओण को॥ कोरन कहै
बधानि॥ भागि चले वज्र सरगन॥ जुरे नधि
न भरि आनि॥६८॥ दंडक छंद॥ ओनि।

तसलील मां हकीनें कैं करे से सी सस्यो म
स्यो म के सीते सिवार असें लेषिये ॥ ब्याल
हे विसाल सुंड दंडन के जाल जहां ग्राह से
करि न के कलेवर विसेषिये ॥ कछ पतिरा
त चर्म चक्र वाक चक्र रथ चामर पताका
गन मीन अवर लेषिये ॥ प्रनक्षत क्रोध कैं स
मर सिंधु सा चोर चो ॥ फूलन मराल वगमा
ल गिद्ध देषिये ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ भूत लडारि
महारथी ॥ आगे पड़ूं चो जाई ॥ निरपिस
रासन दांन लें ॥ करण उद्यो अकुलाई ॥ ७०
करण उवाच ॥ जीते कै ते समर में ॥ भीम
कहा अब जाई ॥ जीवन दुर्लभ जं निवसप
हो हमारे प्राई ॥ ७१ ॥ भीम करण कैं उरह
ये ॥ ससवांन करि कूध ॥ धनुष काटि रविप
त्रतव द्रुदैह मौर सुद्ध ॥ ७२ ॥ चोपड ॥
फेरि क्रोध रविनंदन की नो ॥ कवच भीम

विजे०

॥१६२॥

कोतवकादियो॥ दियोभीमउघारैअंग
कीनो जायतहरिमरंग॥७३॥ रथआरु
दधवनसुतभयो॥ रविसुतकैउरमुष्टिका
दयो॥ भूतलगिरिउग्रौअकुलाईमेल्यो
धनुषभीमसिरआय॥७४॥ बारवाररि
ससौंरुकमोख्यो॥ अँचौंकश्योवारक
रोरि॥ भीमसेनकोपोरिषग्यो॥ करनस
कतअतिविकलभयो॥७५॥ दोहा॥ क
रिसुधिकौतावचनकीदियोभीममुक
ई विलषीवदनचलिपथ्यपै॥ तबहो
पहौच्योजाई॥७६॥ देख्योपोरिषपथ्यको
तवकरनंदनगई॥ सोरहसहसमतंगत
हैंदीनेअग्रपठाई॥७७॥ भुजंगप्रयात
चलेमत्समातंगजेअग्रआरा॥ मनौभूथ
लीमैमहामेघधरये॥ तहांपंडुकेपुत्रचिं
ताभ्रमाये॥ ससोकेहियेमेमहात्रासलार॥७८॥

हिये सो च सो चै गयो ने म मे रौ ॥ रह्यो आस
रो है व्यासिंधु ते रौ ॥ ५२ ॥ य हो दी न ही के
स हाई ॥ परे भी र भारी सबै सो न माई ॥ ५३ ॥ दो
हा ॥ क ह्यो भी म सों पथ्यत व ॥ अव वलिवंत
स म्हारि ॥ का दर लों प्रति सिथल तन कहा
र ह्यो हिय हारि ॥ ५४ ॥ यो सुनि गा ज्यों सिंध ज्यों
सू कि ग ए स व अंग ॥ आ कं पे मा तंग ॥ वि चरि
च ले म ग जू थ लो ॥ सू कि ग ए स व अंग ॥ ५५ ॥
उद्यो भी म वलिवंत त व ॥ क ह्यो न पोरि ष जाई
ए क बार द स सह स ग ज ॥ उर ध दिये च लाय
५६ ॥ स वै या ॥ ए क महार थ वं तर थी ए क ए
क ह ते व र बी र नि षंगी ॥ ते ऊ जुरे न ही आव ध
लें जे ह ते ब र वि क्र म स त्र के संगी ॥ म त्त म त्त
ग त जे न भ कौं वि र चो र न भी म स दार न रंगी
पों न के च क्र में जाई परे ॥ स व कै रहे अंक त्र
संक के संगी ॥ ५७ ॥ दो हा ॥ जे तिक ग ज उर
ध त जे ॥ फि र भु व गि रे न आई ॥ सह स पांच

विजे०
॥१६३॥

गजहूँ सरे उरध दये चलाई ॥ ८४ ॥ लेकयो
रिपरते गिरे कधूकें दरनिमांज ॥ सहसकम
त्रगदाहि नैं जां नी नीयरी सांज ॥ ८५ ॥ दुजो
धनके अनुज सब ती सहते वलवीर ॥ पेरत
रथ जल जंत से ॥ श्रो नित सलित गंभीर ॥ ८६ ॥
हय हस्ती रथ भंजिकें दानो दल विचराई
निकट जयं द्रष्ट प पथ्यत व ॥ पहो चो वरही
जाय ॥ ८७ ॥ सू छि म निरख्यो द्यो सति न बा
र बार अकु लाय ॥ उत हि जय द्य नि सि च
है ॥ निरखि निरखि र कि जाई ॥ ८८ ॥ दो धक ॥
हे जन कौं मन सो हत अ्ये सौं ॥ है तरु नी चकई
मन जै सौ ॥ रे नि च है वै द्यो सहि च है यो ति
न के मन में मन सा है ॥ ८९ ॥ ता कत भान जय
द्रष्ट देख्यो ॥ पथ्यत वै निज काज विसे ख्यो अं
जुति वां न धनु र्ही ली नो ॥ त छि न हि अरि कै
सिरा दी नौं ॥ ९० ॥ दो हा ॥ उग्रौ वां न कै संग
सिर को क वि कहै व नाई ॥ प सो ता सु पितु अं

॥ ९१ ॥

जुली॥ निरषिगिह्यो अकुलाई॥ ११॥ चौपई
जहीसीस अंजुलिगयो॥ निरषतसोतकव
सिभयो॥ कौरवदलमें अतिभयभारी॥ परेओ
ध मुषनर अरुनारी॥ १२॥ हाहाकरनंदन
अनुसरें॥ कोऊकहूं धीरनहीधरें॥ पुरीपे
जयस्थकीभई॥ हरिअर्जुनसंघधुनिई
२५॥ इति श्रीमहाभारते०॥ जयस्थवध्व
र्णनं अर्जुनविजयनाम छतीसमोऽध्यायः॥
३६॥ दोहा॥ जूग्यो जांनिजयस्थे॥ डुरजोध
नकै कूच॥ तुरत हीरथ उपस्वढो॥ चलो
जुधकों सुध॥ १॥ सुंदरी॥ सरछिप्यो तमरेनि
भईतब॥ गाजिमहारथवंत उठे सब देख
रुक्कहि क्रोधवढो अति॥ व्योमगयो वहुसर
नकों हति॥ २॥ रेनि भई नत हांक धूसरुत
आपनो नांमलैलै भटजुगत॥ जुधक भयो क
विकौ नवमानहि॥ द्वैदलमें कोई हारन मानहि

विजै०

॥१६४॥

३॥**दोहा**॥ तजतधरूकार्कधतैं॥ गिरवरसि
परअपर॥ सरतरकरसासक्तिसौंकरतअ
मितसंधार॥ ४॥**चौपई**॥ भयोअधेरोनाकधू
स्रै॥ थलथलकोरवकौदलझूमै॥ नारदमु
निमसालदरसावै॥ दलसंधारतमहामनुभा
वै॥ ५॥ अर्धरैनिलौवीतिमार॥ दैछोहनीदल
कियोसंधार॥ दलकोनासजांनिकुरराई क
ह्योकरणसोतबअकलार्इ॥ ६॥**राजादुरये**
धनवाक्य॥**दोहा**॥ कैअरिष्टवैव्योमतैंव
रषतगिरितरुजाल॥ प्रलयकरतसवदलह
ज्यो कीनोकरमकराल॥ ७॥ अंनिसक्तिह
पथ्याहिततासोयाहिसंधारि॥ इतरनका
धारैमैंइहदलबीरउवारि॥ ८॥ सक्तिप्रहार
कियोकरणजांनिकटककोनांस॥ गिह्यो
उर्धतैंबीरधरभयोसकलदलत्रास॥ ९॥ व

॥६॥

जपातसौधरपस्यो॥ गिरिसेसुमदगिराय॥ ह
न्योसुंदिकथोहनी॥ दलसवचलोपरार्द्र॥ १०
जूमिधरुकाधरपस्यो॥ पंडपुत्रहृष्याय॥ स्तु
नकस्योतहहसिउठे॥ श्रीहरिवन्दुसुषपाई॥ ११
समाधानकरियोकही॥ पथ्यजियोहैआनु
गईसहथीकरनकी॥ अबसीज्योसवकाल
१२॥ भयोद्योसतवज्रोदसी॥ जवबीत्योइकजो
म॥ उद्योद्रोणतहांगाजिके॥ कियोअमितसं
ग्राम॥ १३॥ चौपई॥ पंडवसैनक्योअकुलाई
काहूपासनरोक्योआई॥ नृपतिविराटतिसस
रहयो॥ इनकस्त्रिकोधसरासनलयो॥ १४॥ तिन
बांनगुरकौंतिनमारे॥ कादिपताकाअरुध्व
जुअरे॥ रावजोमअसोतिनहयो॥ लागतद्विज
व्याकुलिकेगयो॥ १५॥ दोहा॥ वहौरिसमहास्यो
द्रोणंगर॥ साधकहयोतलबट॥ वासलयोहरि

विज्ञे
॥१६५॥

लोकतव ॥ जगभूषणविश्व ॥ १६ ॥ जबहीधुकि
धरनीपयो करवराहै ॥ कृपांन ॥ रोकोधुपदन
रसगुर रहै न आगै जांन ॥ १७ ॥ सहदेवधायौ न
कुलपथ्य जुधिष्टिरआप ॥ जगमंडलनवषंड
मे जाको अमितप्रताप ॥ १८ ॥ तोटक ॥ चहुं
और नितै गुरघेरिलयो ॥ तब देवतही सुसरो
सभयो ॥ सवके उरमे बज्रवांन हेने ॥ मुरझाई
रेक विकौं नगिनै ॥ १९ ॥ अर्जुन उ० ॥ जगवंद
नदै सिधमोहि अवे ॥ रनजीत ज्योवर आज
सवै ॥ तुमही विपदा सबठावहरी ॥ मनकी ब
झरन पेज करी ॥ २० ॥ सवैया ॥ त्रिभुवनईस
जगदिस सौं कर निजोरि नाई नाई सी सपथ्य
वंदना महा करी ॥ काटिकाटिकोटक
नष्ट किये दुख सवै ॥ संकट स संकट निआ
पदा सवै हरि ॥ भारी भारी भीर भांती अहं

यजानि॥ तहांतहांशिवश्रीयेज कहं नष्टरि
एकआसएकेविस्वास॥ एकवलसदाएकेसै
भरोसोष्ट्ररावरोघरीघरी॥ २१॥ श्रीकृष्ण
नाम॥ तजैकृपांनवांनद्रोणपुत्रजोमास्यो
मुनें॥ कोटिधौकरालसोकदुष्यहोहिसोण
नें॥ सरोसभीमसेनिआजुहायजोगदाधरे
तुरंतद्रोणपुत्रनांमकोमंतगसंधरै॥ २२॥ दो
हा॥ नामअश्वथामादुरद॥ हनैभीमकरिको
ह॥ द्रोणहोईविभलसुनत॥ बढैहियेवरुष्टो
ह॥ २३॥ वैनजुधिष्ठिरनृपकहै॥ तबहिवि
प्रपसाई॥ तजैसकलआयुधसुनत॥ अति
विह्वलकैजाई॥ २४॥ दुपदपुत्रधृष्टदिवनत
बहीकोटैसीस॥ इहउपावकरिजीतिहोबो
खेत्रिभुवनईस॥ २५॥ दुरदअश्वथामाहज्योभी
मसेनतिहिवार॥ हज्योद्रोण॥ तबपुत्रमेअव

विजे०
॥१६६॥

कतगहेहथ्यार॥२६॥ दोएनहीरनकोतजे
बेनसुनेनयताई॥ तोमानोमनवचनजो क
हेजुधिधिराई॥२७॥ तबैयचास्योधर्मसुतक
हिगरतजेकपांन॥ बंधुनिहितवोलेतबै भूप
तिबुद्धिनिधांन॥२८॥ समरअश्वथामाहन्यो
भीमसेनसुनिविप्र॥ नरनाहीकुंजरहत्यो क
हीनृपतिइहछिप्र॥२९॥ तोटक॥ इहवैनसु
न्योंगुरुदोएजही॥ बडुव्याकुलकैगिसौभ्र
मितही॥ समजावतकोरवसोनसुनें बडुव्या
कुलकैद्विजसीसधनें॥३०॥ सोरठा॥ जबगु
रतजेहथ्यारधृष्टदिवनविलोकिकैं॥ सिस्का
ट्योतिहिवार॥ धर्मपुत्रकीजयकरी॥३१॥ दोध
क॥ डुरजोधनकैदिलडुचितार्इ॥ मोपहिश्त्र
काहीनहीजाई॥ बुद्धियकीसुधिकीगतिथ
कि॥ आसथकीमनमेंचपताकी॥३२॥ दोहा

धर्मसुत्रजयरनभई॥ गहिरेबजे निसान क
ह्यो चमूं पतिकर्णतव देडुरजोधनमान अ
इति श्री महा ॥ दोण गुरवधोनां भ ॥
इति दोण पद्य ॥ अथ असमकारण पद्य
दोहा ॥ दलपतिकी नोंकर ॥ न डुरजोधन अ
नें सयन ॥ जगजन सब डुषहरन घट दसन
को कल्पतरु ॥ १ ॥ चढो करन रनधीर रनक
रलीने धनुबांन ॥ सुरनरगन मैता सुकी पट
तरनां ही आंन ॥ २ ॥ सत्य कियो रथ सारथी
पारथजी तनकाज ॥ कतवर्माल छिनचले
है सगसुकनिसमाज ॥ ३ ॥ हसासनरथ कभरा
करन संग सुषपाई ॥ अथ अथ सेनाचली बाग
रजि निसांन वजाई ॥ ४ ॥ अर्जुन अर्जुन कहत
भट आर रनगल गाजि ॥ बांधिले डुवर आ
डुही जानन पावे भाजि ॥ ५ ॥ कसै कवच संन

॥ श्री ॥
वि०
॥ १६७ ॥

हतनमः श्री वां नमरासनहाथ ॥ वीररूपा
सन-ग्रादिदे ॥ सबधाराइकसाथ ॥ ६ ॥ भीम
देखिहूसासनै ॥ परमक्रोधसोधाई ॥ धरिकै
पटकोंधरनिधै ॥ दैग्रीवां परषाई ॥ ७ ॥ भीम
सेनउवाच ॥ सवैया ॥ हैकोउदलमैसम
रूप ॥ हसासनकोवरआयधूडवै ॥ रेकु
रूप ॥ रनंदनरेखिनंदन ॥ सोकरिजो
॥ ८ ॥ तुमपैबनिआवै ॥ रनिंधनैरनरा
॥ ९ ॥ वतदेष्टतसुधकरोसबजोमन
आवैत ॥ कालहुतैउवरैभजीजीवत ॥
जीवतसोभजिमोपैनजावै ॥ १० ॥ दोहा ॥
हैदलमैसमरथजोयाकुलेहुधूडाय ॥ पा
थैकरिहोवलगना ॥ देष्टतरानैराई ॥ ११ ॥
संखधुनिहरितवकारी ॥ ततछिनहि
अकुलाई ॥ वचनभीमकोपथनही ॥ सुनै

जुधिश्चिरगई॥१०॥ कोरवदलकशुनाकस्यो
लीनीभुजाउघारि॥ केहरिज्योमृगकौउदरस्यो
उरडास्योफारि॥११॥ सवेया॥ ज्योरघुनाथह
ज्योरनरावन॥ जंभुकिधौसुरराजप्रहास्योरा
धवबीरबध्योलवनासुतर॥ तीछनवानसस
लसंधास्यो॥ केतिपुरारिहज्योवरराक्षस॥ रा
कहिवांनउरुस्थलफाड्यो॥ अैसेहिभीमह
सासनमारिसवैमनकौतिनरोसनिकास्यो
१२॥ कोपिकैंभीमवलीवरसौंसुहसासनद्वै
दलबीचसंधास्यो॥ केहरिज्योमृगदौरिदल्यो
सुरराजकिधौंभुवपर्वतपास्यो॥ ज्यौंहनुमंत
वलीबसौंमहिरावनकौंभुजमूलउघास्यो
ज्योनरस्यंधसक्रुधभरोहिरनाकुसकोनषा
सौउरफास्यो॥१३॥ दोस॥ मनभांयोकरिफा
रितररुधिरंजुलीच्यारि॥ अचैभीमप्रफुलि

विजे ०
॥१६८

तभयो॥मनकौरोसनिकारि॥१४॥ओररुचि
रभरिअंडुलोलेकरिपहुंचौधांम॥जाईन्हाई
शोपदीसबपूरेमनकाम॥१५॥**सोरठा॥**जस।
हेजीवनमूरि॥इहिपुरअरुउहिपुरसुषी॥तेस
बकेहैधूरि॥दजदोषीअरुअपजसी॥१६॥
आलवसैजिहिग्रेह॥परदारारतिजेपुरुषनि
श्रैजानौंरह॥मृत्युमांजसंसौनही॥१७॥छेप
रतरुनीचीर॥सबजगमेंअपजसलयौ॥मस्तो
हसासनबीर॥देघतसकलमहारथी॥१८॥**चौ**
पई॥दुपदसुताहिरुधिरअन्हवाई॥रनमंड
लसोपहोचौआई॥नकुलसकुनिसोंरनभौ
घनौ॥जुरेअसुरअरुसुरपतिमनौ॥१९॥बान
निमारिसकुनिविचरायो॥उरफास्योवरभू
मिगिरायो॥जसतसकुनिकुलाहलभयोहा
हासवदसकलदलरयो॥२०॥**दोहा॥**भयो

भद्रपदनरकरनसौ॥ अतिगति करि संग्रा
म॥ जूमे भट द्वै सैन के॥ बरनिस के कोनाम
: २१॥ करनद्रुपदनरनाहकैं॥ उरमारेदसवां
न॥ कौनक है तिनियरनिधुकि॥ ततछिनया
उग्रांन॥ २२॥ सवैया॥ धीरसजै बीरसवैया॥
कुलसरीरकै है॥ संग्रमगभीरबीरकरनसौ
महारथी॥ स्तरकहलाने॥ दहलाने दलदी
रधजे॥ हाथीहहलाने संकजाय कौनपैक
थी॥ जत्रतत्रसत्रदीहदुरघटविकटभट॥ का
टिकाटिकीने कालदंडलोककेपथी॥ कहूं
उरे अश्वकहुपायकपताकारथध्वजकड्ड
उरेरथकहूं मोहगिरेसारथी॥ २३॥ दोहा॥ क
रनपराक्रमकैवड्योनहीसुरोकैजाई॥ क
टकत्रासउरजांनिकैं॥ रूपोपथ्यरनभाय
॥ इति श्रीमहा०॥ हर्षासनमकुनिगतादु
पदवधनोनाम ३८॥ ॥ तोटक॥ रविनेदनप

विजे०

॥१६२॥

एथजुरेनमें॥ वहु क्रोधहुं जनके मनमें
अतिसंयम॥ कवि कौन कहै॥ सरजालन
कोतहापौनबहै॥ १॥ धरुर्धवांननथाई
लयो॥ थपिसरतहांतमथाईगयो॥ अतिअ
हुतविक्रमकौनकहै॥ सुरबेलषिताकह
भूलिरहै॥ २॥ दोहा॥ वांनचलैहुंवीर
केजोजनएकप्रमान॥ वैसेवेईजुधकोप
टतरनाहीआंन॥ ३॥ अस्यसस्यसोपरस
परराचतदोर्धवीर॥ जुरिजुरिकोऊंमुरतिन
हि॥ दोऊनरतधीर॥ ४॥ आयोबासरतीस
रो॥ कौहुंनउसरैन॥ सुरअमुरनियोकर्म
कहं॥ सुन्योनदेख्योनैन॥ ५॥ कवखाओक
बसरलयो॥ सोनपरैकछुजांनि॥ मंडलीक
कीनोथमुष॥ थकैनकौहुंपांनि॥ ६॥ रथो
करनकेननमें॥ वानकैगयोव्याल॥ थस्यो

धनुषबलिबंडसो॥ आदिदयो उताल॥ ७॥
दोधक॥ प्रावतसोकहि श्रीहरिदेखो॥ प्रा
रथकालहिये महिलेखो॥ दावकियौ तब
हीरथनीचै॥ ससिवच्योलहिसूछिमबी
चै॥ ८॥ काटिकिरिठहिलैगयो सोई॥ सैनस
मूहत्रसे सबकोई॥ फेरिसो व्यालसरोषत
धायो॥ कर्ननिकेततबैचलिआयो॥ ९॥ स
यावाच॥ दोहा॥ निजअरिमेरो पप्यसुनि
कर्णसुबुधिनिधान॥ हनौं सनुजो मोहि।
तो करिकैं छंडै बांन॥ १०॥ करणउ॥ होस
मरथ्यपथ्यहिहतो॥ चाहौ नही सहाय
कह्यौ न मान्यो सरपको॥ वह करिथ कौउ
पई॥ ११॥ चोपई॥ कटत मुकट पारथसी
रीसभयो॥ घुरपवां नरथ जो जितकस्यो॥ बल
करि रविनंदन सिरहयो॥ दोषाकाटि पारसो

विज्ञे०
॥१७०॥

भयौ ॥१२॥ दोउ गोषवंतवलबीर करतजु
इनहीश्रमतसरीर ॥ तजतनरनसिरघूटेके
स ॥ दोउघोरअसुरकैनेस ॥१३॥ गीतिका
सत्यसौनृपकरनभाष्यौ ॥ कौंनरथवरबा
हई ॥ सुनतसारथिरोसकीनौ ॥ भूमितबवे
रनिभई ॥ गिलेरथकेचक्रतिनरथथकड़े
चलिनासक्यौ ॥ बारबारअसेषउद्यमकि
योसोवरकैथक्यो ॥१४॥ शीघ्रपूरवजन्मा
दीनौविप्रवहुहुपपायकै ॥ गिलेरथकेचक्र
धरतीरह्योसंभ्रमझाईकै ॥ कवचकुंडल
इंद्रलीने ॥ बांनकुंतीलैगई ॥ भईबैरनिमेद
नीचितकर्णकौचिंताभई ॥१५॥ कर्णवाक्यं
धत्रीधर्मविचारिउर ॥ शिन्धयेकसमरनि
वारि ॥ सुनौपण्यजौलौरथेभुवतैलेहुनि
कारि ॥१६॥ सवेया ॥ श्रीकृष्णवाक्यं पूना

कौस्तुभहायदयो॥ जलभोजनमांहह
लाहलडास्यो॥ हरीसुभीजबभूपविशट
की॥ जायतहांबहुसाकरोयास्यो॥ करीन
कष्टमरजादकीवातजबैसुतधर्मकौःदेस
निकास्योद्रोपदीकौषलचीराह्यो॥ तवपा
पकिधौतुमधर्मविचास्यो॥ १८॥ दोहा॥ करै
निहोरोक्योजियो॥ तातैकीजेंजुद्ध॥ जोयाव
कमैग्रतपस्यो॥ भयोकरणयोजुद्ध॥ २०॥ को
पिसरासनकरलयो॥ चलेकरनकेवांन॥ ह
नतपथ्यमोह्योमहाभूतलयस्योनिदांन।
२१॥ बरकरिकाट्योंकंधदैभूवतैरथसुविला
स॥ बहोरिवृष्टिसरकीकरी॥ शयेसवआ।
कास॥ २२॥ दोहा॥ चेततहीठठियारथ
धायो॥ करनलष्योनियोजबआयोसार।
थिसोंविनियोजबअैसें॥ हांकिरथैरनजी

विज्ञे०

॥१७१॥

तहं जैसै ॥२१॥ फेरि धरारथ चक्र गत्यो है सो
बरे लित हो न बल्यो है ॥ बरही बार महाजक
तो स्यो भूमि हली अहि को सिर मो स्यो ॥२२॥ पारथ
क्रोध कस्यो वक्र धाहि ॥ बां न हयो रिपु कों उर मां
ही ॥ मूग पस्यो रवि नंदन अैसे ॥ वज्र हन्यो सुर
वै गिरि जै सो ॥२३॥ चामर छंदः ॥ हाय हाय जत्र
तत्र कै रही जहां तहां ॥ देव लोक भूमि लोक क
ए सौरथी कहां ॥ सैन ता विना भयो अप्रसेष भांति
दीन सौं ॥ अंध पुत्र भौ महा विसेष दुष्पलीन सौ
॥२४॥ दोहा ॥ भगि चले सब सूरगनि ॥ करन पस्यो
रन देखि ॥ इर जो धन तब आपणी मृत्यु गीणी सु
विसेषि ॥२५॥ अहंकार जु तत वकस्यो ॥ दल पा
ति सत्य जु गार ॥ पाई रजाई सु बेगि ही ॥ कोपिक
स्यो करि बार ॥२६॥ लोपि गयो दिन करत हां क
रन पस्यो रन देखि ॥ रुदन करत गंधर्व सर्व सुर सौ

केसुविसेषि॥२७॥ नैनहीनअंबुजवदन॥ ज्यो
त्रियविनसंधार॥ तयोहीकौरवदीनदल॥ को
कहियंभनहारि॥२८॥ सवैया॥ चंदविनारज
नीरजनीपतिरैनिविनाइतिमंदमअनैसो
निरविनासरनैनविनानरधांमधनीविनदे
षियेजेसोनीरविनामुकताहलसै॥ अरुदी
पविनारजनीतमअैसो॥ ज्योहीसिंगारविना
जुवतीनृपकरनविनादललागततेसो २९
॥ दोहा॥ पस्योदेखिरनकरनकौ॥ विप्ररूपह
रिआय॥ दीरघदुरवलदीनके कह्योनिकट
योजाय॥३०॥ दोधक॥ दारिदहोवहुभांति
सतायो॥ जाचनतोहिइहाचलिआयोकर
एसुमौंजगमेवउभागी॥ ताकहिचित्तभयो
अनुरागी॥३१॥ करएवाच॥ विप्रनहितकं
चनगयो॥ सुनियौंविप्रसुजांननिजत्रियारत

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥

विज्ञे०
॥ १७२ ॥

जोवनगयो॥ स्वामिका जगत्प्राप्तं ॥ ३३ ॥ प्रादि
अंतजाकोनही॥ सबजगव्यापक॥ आई॥ भईस
कलमनकामनांतिनकोदरसनपाई॥ ३४ ॥
क॥ कृपायुक्तो तदा कृष्णयत्र कर्णोरणेहि
ता जीवकारणसहस्रेद्यनरूपेन नभक्ताभा
श्रैवतु आगताः॥ विप्रो हंकरण राजेंद्र॥ दारि
द्र्यवद्गु व्यापितं॥ ३५ ॥ करण उवाच॥ पाषाण
गहने विप्रा॥ दंतमंजयते मम॥ सवाभार सुव
र्नश्च जथा त्वं न उच्यति॥ ३६ ॥ श्री कृष्ण वा
क्यं॥ साधुसाधु महावाहो॥ सर्वसास्त्रविसा
रद॥ दातस्त्वं च कर्णश्च बरयंते प्रयत्नत॥ ३७
करण उवाच॥ विप्रार्थे च धना क्षीणं स्वदा
रागतयोवनं॥ स्वामिकार्ये हतो प्राण॥ अं
तकालजनादैन॥ ३८ ॥ दोहा॥ करनपस्यो
दिनतीसरे॥ जबबोते द्वेजांम॥ समभ्रमि

उद्दिमभयो सिल्प कियो संग्राम ५१॥५
ति श्रीमहाभारते ७ सणे विजय मुक्ताव
ली कविष्त्रविरचितायां करण वीरस।
मोहनोनांम गुनतालीस मोध्यायः ३९
करण परव समाप्त॥ अथ सत्य परव दोहा॥
सत्य सूरथ आरुहे॥ करली नोधनुवांन
जीत्यो चाहत पंडसुत साजत समरविधान १
प्रोण करण भीष्म महते॥ रनजित बार अनंत
जीत्यो चाहत सत्यरण॥ आसाव द्रुवलवंत
२॥ तोटक॥ अर्जुन कौरथवांन नष्टायो
सेनधनो वरके विचरायो॥ धूरि उडि उठि अं
वरलोप्यो॥ सत्य जहां जम कोपन कोप्यो ३
द्वैदल मै नही स्रुत कोउ॥ सनमुख जुद्ध जुरै
भट दोउ॥ सरधनै करि पोरिष जूत॥ काहु
नही कोउ वात न दूत॥ ४॥ दोहा॥ सुरासि

विज्ञे ०

॥ १७३ ॥

धुकोपुत्रतब ॥ दुरासिंधुतिहिनांम ॥ सहित
आपनेसेनसौं ॥ जूजीपस्यो संग्राम ॥ ५ ॥ दुरासिं
धुजुग्योलष्यो ॥ नकुलपरजस्यो वीर ॥ हन्यो सु
सर्माक्रोधकरि ॥ जूमिपस्यो रनधीर ॥ ६ ॥ दो
पई ॥ जुधिछिरनृपकोप्यो आप ॥ जाको जग
मैवडोप्रताप ॥ असुरहिरंब आप कह्यो ॥ वि
ना जीवभूतलपरिगायो ॥ ७ ॥ एकघरी दिन ल
गिरनकस्यो ॥ भूपजुधिछिरसो संघस्यो ॥ दोस्यो
पौनशूतवलिवंड ॥ कीनों ॥ तीन संग्राम अपंड
॥ ८ ॥ ^{कहुहुने मजोगे जिमिरे कहिकुने चरने कर} ~~अप्ये~~ ॥ सुरहने रनधीर हने रथवंत वीर
वर ॥ कहैरथो कहूँ अश्वगिरे ॥ कहूँ छत्रचव
रधर ॥ कहूँ गिरधुजदंड कहूँ थरहरपायक न
र ॥ बीसकवरकौरवतहां ॥ भीमसेन जुटि संघा
र ॥ काठिदियौ वनकदली ज्यो सुथलथलभा
ददी सतपरे ॥ ९ ॥ दोहा ॥ सबकौरवनी न्यान

वे॥ हनेभीमवलिबंध॥ इरजोधनएकरह्यो
नौसंग्रामअषंड॥ १०॥ सहदेवऔरसत्यसौं
संग्रामभयोअपार॥ कौरवनेविविपरसपर क
रतअमितसंधार॥ ११॥ चौपई॥ सहदेवकर।
असिवरलयो॥ सत्यसारथितवतिनहयो
तोरेरथआरुहेतुरंग॥ कीनौघावसत्यके।
अंग॥ १२॥ मास्योसीसडुटिधरपस्यो दुयोधा।
नरथथरथरहस्यो॥ भगिसेसहआयुधडारि
चलेकितेभटहियाराहारि॥ १३॥ दोहा॥ कुरान
दनतिहिथलरह्यो॥ निपटअकेलोआप॥ ह
तीचमुंचतुरंगसंग॥ जाकोअमितप्रताप॥ १४
॥ छये॥ छपनजोजनअत्रअंहाजाकीथरंम
डहि॥ दुर्गमडुसहडुरंतअदंडनिवलकरिदंडहि
बंधुकुटंबअसेषसकलकिंकरचहुवोरहि
सबजागअमितप्रतापतापत्रसत्रनिष्ठितिषो

विज्ञे०

॥ १७४ ॥

हि॥ वक्रधनचौराजवाजिरथदलवारदीर्घ
रुपिष्यो॥ सोईभूमिभूषकुराजरननिपट
अकेलौदेखियो॥ १५ ॥ सोरठा॥ होनिहोईसो
होयनहीमिटाईनामिटे॥ तातेजगसबकोई
संसोचितनआनियो॥ १६ ॥ जोराचैकरतार
सोईसोईकैरहै॥ इहैबातसबसारमुखिजो
संसोकरे १७ ॥ इति श्रीमहाभारतेपुण्येवि
जयसुकतावली कविधनविरचितासुसमा
सत्यवधोनामचा तीसमोअध्याय॥ ४० ॥ चौपई ॥
राजपटिअकेलौभयो॥ मंत्रजपनजलभीतरि
गयो॥ जपनआरिघटिकाजोपावै॥ तौअपनो
सबसैनजीवावै॥ १ ॥ इहसुधिपाएपंडवधार
जलमैभूषकुतोतहांआये॥ कहैकहांडुरिक
रपतिगयो॥ सोनहीहमहिसामकुंभयो॥ २ ॥ भी
मसेनउवाच॥ तोलगीकेतिकभूषतिआए

नामनही कछू जातगनाए ॥ याथल जुफ
परे सब तेई ॥ छत्रिय जेवल वंत हुतेई ॥ ३ ॥
तो उरहे इतनो उरयेछो ॥ तो डुरि कै जल भीत
रिबेछो ॥ छत्रिय धर्म विचारि हिये में ॥ सोच
कहा अब प्राप किये में ॥ ४ ॥ जो भजि बीर
पतालहि जाय ॥ तो नवचै अब मोहि भाई
भूमि पताल संघार हुतेई ॥ सप्तमही पति पंड
की मोहि ॥ ५ ॥ दोहा ॥ हनै बीर न त्पान वै
तू उबस्यो है भागि ॥ जो लगी तोहि हनौ नही
नवे न तामस आगि ॥ ६ ॥ दोहा ॥ पंड सुत
न में तोहि जु भावे ॥ सोई तो सोरन कौं आवै जो
ई मायुध तू करि धरि है ॥ ताही सौं तो सौं सोल
रि है ॥ ७ ॥ अब जो छत्रिय धर्म निगहि है ॥ सब
जग में उपहास सहहि है ॥ सुनत बैन भूपति पा
रिज सौ ॥ ज्यों घत मां ऊरु तासनय सौ ॥ रोष वं

विज्ञे०

॥ १७५ ॥

तकेहरिसोकटौ॥ सेसदेविभीमहीउख
बौ॥ उजपातसममुष्टिकामाखो॥ कोतिकदे
षतबंधवच्यारौ॥ ८॥ नेमस्वरूपनी॥ सरो
षकैडुयोजुरे॥ नभांतिभांतितेसुरे॥ असेषजु
दसजही॥ नरोसखाडिभाजही॥ १०॥ दोहा
गिह्योबारदसभीमधुकि॥ मोहिमोहिवलिवं
ड॥ सप्तवारभूपतिगिह्यो॥ करिसंग्रामअषं
ड॥ ११॥ कोऊबीरकरैनहीभूपतिगिरेप्रहा
र॥ भिरतअमितगतिकोकहे॥ तारनकोवि
स्तार॥ १३॥ राजादुरयोधनवाच॥ सुंदरी॥
टीठभयौकिततूरनठानत॥ मोहिनतूअप
नेउरजांनत॥ बालकमारिकितोवलवोल
त॥ कैइहविक्रमफूलतडोलत॥ जीवतकौ
उबरैअबमोपहि॥ जुद्धकरोवनिआवहि
तोपहि॥ बंधवतेरेतोहिसराहत॥ भांतिनभां

तिनतोमुषचाहत॥१४॥ अरिगदाभगिजा
यनकौंअव॥ जीवतश्चाहुतोहिहंत
व॥ हमहिहारिकोउत।हीमांनतभांति।
अनेकमजुधवठांनत॥४१५॥ दोहा॥ हि
यहास्योतवपवनसुत॥ विलषेबंधवचारि
फेरिसम्हास्योदेहुतिन॥ जबकुकिह्यौ
मुरारि॥१६॥ भीमसेन०॥ दोहा॥ सकलदे
वनरदेवके॥ जोपाशेदुरिजाय॥ तऊनश्चा
उतोहिहों॥ कोरिककरैउपाई॥१७॥ सैनद
ईश्रीकृष्णतब॥ भीमहिचितवतजांनि॥ त
बरिसाईकैउठिचले ठाकिजंघसोंपानि॥१
८॥ चामरछंद॥ सैनजांनिभीमसेनजंघा
मेगदाहनी॥ मोहीमोहीभूमिमैगिस्योसु
भूमिकोधनी॥ बेगदेमहीपधर्मपुत्रपासआ
ईयो॥ देषिदेषिसोथलीअसेषडुष्यछाईयो॥२८॥

विजे०

॥१७६॥

॥राजो वाचा॥ छप्प॥ जाभुजभीषमद्रोण
करणभागतंतसुसरमा॥ हसासनदैप्रादिवं
धसबअहुतकर्मी॥ देसदेसकेभूपद्यो।स
नीसीसंकामानत॥ दुरजोधनपागपरसिआ
पनौजीवजीवावत॥ निसिद्योसश्चनश्याया।
चलैतेजअमितदेसिपेधियो॥ रनभूमिभूमि
भूपतिगिह्यो॥ सोकोऊसाथनदिधियो॥ २०
॥दोहा॥ सेतश्चत्रकविश्चत्रकहितमोउ
धिधिरसीस॥ बहुतविसूरेरुक्षकोमुषचा
ह्योअवनीस॥ २१॥ राजायुधिधिरउवाच॥
चौपई॥ हुनौसबलदलसो कितगयो॥ भूप
तिविनवैबहुदुष्यछ्यो॥ रथीअतिरथी
सरअपार॥ कितगयोसाहनसबपरिवा
र॥ २२॥ जिनजिनकरिमेरोदललष्यो॥ धि
तिपरिसत्रुनकोऊदिष्यो॥ जाडरथरथर

जगत्तरहस्यो॥ सोईभूष-अकेलौपस्यो॥ ३३
जाकोंछितिसंबजोरेंहाय॥ सोभुवपस्यो
नकोउसाय॥ इहविधिधर्मपुत्रदुषध्याए
नीमआदिसंबबंधवआए॥ ३४॥ **नीमसे**
नउबाच॥ दोहा॥ कतदुषकीजैभूषअव
धनीयधर्मविचारि॥ पाईपाईतुवआय
सैं॥ इस्योकटकसंधारि॥ ३५॥ हमचुकेसे
वानही॥ आयुसमान्यौंसीस॥ गुनजोगुन
योबनिगयो॥ तुवआगाअवनीस ३६ चि
तकस्योफिरचलनके॥ जुधिष्टिभुवराई
पहुंचेतहांवलिभइतब॥ भूपतिकेंढिगआ
य॥ ३७॥ **गीतिका॥** देखिकेडुरजोधनपस्यो
भुवअंघघावविलोकियो॥ जानिजुद्धअधर्म
कोबहुचित्तमांहसंसौकियो॥ हैगदाकेजु
द्धकोइहधर्मचित्तविचारतो॥ अर्धतनकदि

विज्ञे०

॥१७१॥

कैतरैसोई स्वप्नहु नही मारतौ ॥२७॥ योम
भूमिपतालभीमहि ॥ हौं नही प्रवशं डिहों
प्राजुहीवर प्रापनैं हीठि ॥ सर्वगर्वनिषं डि
हों ॥ वउवा नलसौं उद्योकरि क्रोधवहु ड
षपाईकै ॥ अतिरोषवंत विला कि श्रीहरि
यो कह्यो टिग प्रायकै ॥२८॥ श्री क म उ
वाच ॥ दोपदीजबसभा आनी ॥ कर्मकर्क
स नृपकियो ॥ जंघतोरों मारिकैं इहनेमभी
मतहांलयो ॥ ताहि तहसासनसंधास्यो प्रा
पनौपनपारियो ॥ हतिसत्रुवरहीजीवको
ईनसर्वरोसनिकारियो ॥३०॥ दोहा ॥ समझ
योयेवचनकहि ॥ सुनिबलिभइसुवात ॥ कु
रनंदन प्रपराधकी ॥ सुधिकरि करि पष्ठी
तात ॥३१॥ करीविदा वलिभइकी ॥ उरको
रोसनिकारि ॥ वंधोपांचौसंगले निजथल

चले मुरारि ॥ एक छोहनी दलव च्यौ ध
र्म सुवन के साथ ॥ रथ चढि आरु बंध जु
त ॥ चले ते बे नर नाथ ॥ ३३ ॥ रैनि भरो धर
धुमन निसि सलो सुषवीर ॥ दुपद सुता
के पंच सुत सुते श्रमे तसरी ॥ ३४ ॥ इति
श्री महाभारते पुराणे विजय मुक्ता च
ली कवि शत्रु विरचिता यांगदा जुद्ध रा
जादुर जो धन समोहन राजा युधिष्ठिर वि
जय वर्णन नामई कताली समो ध्याय ॥ ४१ ॥
बोहा ॥ सब स्रतौ जान्यो कटक ॥ नंद घोष
रथ पाई ॥ हरि गए लै कृष्ण तब ॥ पंड पुत्र
सुष पाई ॥ १ ॥ उत्तरे रथ तै अनुज जुत जब
ही भुव भरतार ॥ धसत कृष्ण रथ तै तबे उ
ठी अगनी की शर ॥ २ ॥ नंद घोष जरि भस्म
भो ॥ कह्यो न कोति कजाई ॥ इह लषिके ॥

विजे०

॥१७८॥

पांचौ अनुज ॥ प्रतिहीयरहे भुलाई ॥ ३ ॥
॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ दोहा ॥ भीषम गुरु अ
रु कर्ण के ॥ सरन दियोरथ जारि ॥ या को अ
बपर भाव सुनि ॥ प्रगट्यो भेद मुरारि ॥ ४ ॥ चौ ॥
जब लगी रथ उपर हो र ह्यो ॥ तौ लगी सो बां
न निनहि द ह्यो ॥ जब हो धसि भुव उपर आ
यो ॥ नंद घोषति नि सरनि जरायो ॥ ५ ॥ हरि
चरित्रति न अ सौ देख्यो ॥ वर न्यो जार्दन अ
दुत लेख्यो ॥ इरयो धन तहां र न मै पस्यो ॥ दो
ए पुत्रति हि थल पग धस्यो ॥ ६ ॥ अश्वत्था

॥१७८॥

मोखाच ॥ दोधक ॥ प्राइसुदैकरनंद
नमोको ॥ दुष्टहनौव दुदैसुषतोको ॥ ये
जकरीइहंभांतिभनैसो ॥ १० ॥ यथातु
धिष्टिरकोनगनैसो ॥ ११ ॥ सैन ॥ रहोसो
ई ॥ प्राजुसंघारु ॥ बंधवपांचतुस्तहिमा
रो ॥ जीवतमोहिपरेसुषसेवि ॥ आजुस
बैजमकोसुषजेवे ॥ १२ ॥ चामर ॥ पंचव
धुमारिपंचसीस ॥ आजुल्लायहो ॥ तबैम
हीपतोहिमुष ॥ आयकैदीषायहो ॥ बेगि
दैकह्योनरेसजीवमेक्रपालकै ॥ गाजी
कैचल्योवलीसुरोषचित्तमांजकै ॥ १३ ॥ कुं
उलीया ॥ बैरपिताको ॥ आजुहीलेहुदल
संघारि ॥ औरहनैबरपंडसुत ॥ धृष्टदिव
नकोमारि ॥ धृष्टदिवनकोमारिसकल
मनभायोकरिहो ॥ वृद्धतरुनिसिसुवात

विजे०

१७९

चित्तमें एक न धरि हों॥ धरि हों संकन अं
क हते सर सं सो जा को॥ सोई करि हों काज
मिलाउ वैर पिता को॥ १०॥ चलि सो पहं।
चौ दल॥ निक फेण पुत्र जु त कुध॥ पुरुष ए
क आडो मये॥ ता सौ की नी जुध॥ ११॥ कस्यो
अश्व त्यामा महा दैघटिका संग्राम॥ बहु सं
तुष्ट॥ कस्यो सुनर तव की नों विश्राम॥ १२॥
चौ पई॥ तब तिन पुरुष दया चीन करी॥ मां
गि मां गि इह विधि अनुसरी॥ जोई वर तेरे
मन भावै॥ मागत ही सो मो पै पावै॥ १३॥ अ
श्व त्यामा उवाच॥ चौ पई॥ बीर आविर
सबै अरि मारों॥ पंड सुत निजु त भट संघा
रों॥ इह मया करि कै वर दीजै॥ परम अनु
ग्रह मो कों कीजै॥ १४॥ एव मस्त करि दी
नों जादां न॥ गयो कटक मही गहे कृपान

सुतौ कवरसीधंडी देख्यो ॥ भारषभयौ सो
 रनभयलेख्यो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ प्रथमप्रहा
 स्यौ सो कवरधृष्टदिवन कौं जाई ॥ बाम
 चरन ललाह न्यौं ॥ सोवत बीरजगाई ॥ १६ ॥
 अर्धरैनिलौं सब कटक ॥ गंवगंव संघारि
 एक छोहनी जो हुतौ ॥ चल्यो सकल भुव
 डारि ॥ १७ ॥ पंचाली के सुतन के ॥ सीस का
 टिले हाथि ॥ तब पहों जोतिहि ठां उजहै
 दुरजोधन नरनांथ ॥ १८ ॥ अश्वत्थामो वा
 च ॥ धर्मपुत्र कौ अदिदै ॥ सिरलै आयौ
 काटि ॥ दुरजोधन उर सुषभयौ ॥ ताके उर
 तै डाटि ॥ २० ॥ तोटक ॥ सुषडुष्य समांत
 भयो जब ही नरनायक ॥ प्रांत जेत बही
 चली भूपजुधि छिरये हगये ॥ लषिकें दल
 ते भयभीत भए ॥ २१ ॥ राजो वाच ॥ सुत शरण

सुतौ कवरसीधंडी देख्यो ॥ भारषभयौ सो
 रनभयलेख्यो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ प्रथमप्रहा
 स्यौ सो कवरधृष्टदिवन कौं जाई ॥ बाम
 चरन ललाह न्यौं ॥ सोवत बीरजगाई ॥ १६ ॥
 अर्धरैनिलौं सब कटक ॥ गंवगंव संघारि
 एक छोहनी जो हुतौ ॥ चल्यो सकल भुव
 डारि ॥ १७ ॥ पंचाली के सुतन के ॥ सीस का
 टिले हाथि ॥ तब पहों जोतिहि ठां उजहै
 दुरजोधन नरनांथ ॥ १८ ॥ अश्वत्थामो वा
 च ॥ धर्मपुत्र कौ अदिदै ॥ सिरलै आयौ
 काटि ॥ दुरजोधन उर सुषभयौ ॥ ताके उर
 तै डाटि ॥ २० ॥ तोटक ॥ सुषडुष्य समांत
 भयो जब ही नरनायक ॥ प्रांत जेत बही
 चली भूपजुधि छिरये हगये ॥ लषिकें दल
 ते भयभीत भए ॥ २१ ॥ राजो वाच ॥ सुत शरण

विज्ञे ०
॥१८०॥

इह कर्म कियो ॥ सि सुमारि कहा ॥ अपरा
ध लयो ॥ वक्र दुष्पथ न जय चित्त धर्यो ॥ अ
पने उर मै बहु क्रोध भर्यो ॥ भजि कै सो अ
रि जाय कहा ॥ अब ही हनि हो पुनि वे गित
हां ॥ २२ ॥ मु कि कै तव ही रथ और सज्यो त
हिरो सन ही पल एक तज्यो ॥ २३ ॥ सु नि कै ग
रु पुत्र भज्यो तव ही ॥ बहु पारथरो सकर्यो
तव ही ॥ तिहि जाई लयो नहि भाजि सक्यो
अति व्याकुल कै थय राय थक्यो ॥ २४ ॥ अउ
न जो जन चारियर ॥ गर सुतली नौ जाई जा
न्यो नही उबारति नि ॥ फि र्यो स्तर समूहा
ई ॥ २५ ॥ उपज्यो अद्भुत जु धत है ॥ को कवि
स कै वषां नि ॥ सरई सरन भषाई कै थके
स्तर नही पां नि ॥ २६ ॥ काटत दो उपर सपर
बांन समूह अनेक ॥ एक्यो ममे एकध

र॥ करनिकरतहेएक॥ २७ ॥ चौवई॥ हार
नमांनतदोउबीर॥ दोउसमरबलीरनधी
र॥ एकहीगुरपेविद्यामाई॥ ज्योमथली॥
बाननिसौश्री॥ २८ ॥ दोउरनकोतबअ
तिवेढे॥ एकहिगुरपेविद्यापटे॥ ब्रह्मअ
स्त्रकरपारथलीनों॥ बहदोएसुतजोजि
तकीनों॥ २९ ॥ उपजीअग्रिडूहनतेंभारी
त्रिभुवनकंपेनरअरुनारी॥ हाहासबद
सकलथलभयो॥ महातापसुरअसुरनठ
यो॥ ३० ॥ सोरठा॥ आकंष्योसुरराजदेवन
बहुआतंकउर॥ प्रजयहोतहैआजुइहवि
धिजगजनउच्चरत॥ ३१ ॥ दोहा॥ ब्रह्मवां
नक्योंपथ्यकोरनमेनिर्फलजाय॥ सीसफो
रिकेंमनलईतबदीनोमुकराय॥ ३२ ॥ उग
र्भउताराकोहन्यो॥ एरसुतकैसंधान॥ भयो

विज्ञे०
॥१८१॥

मृतकमुत्ततिहिसमें॥सवकुलडुष्पनिधां
न॥३३॥कृष्णअनुग्रहसुतहैमैजीयो॥भ
योपरीक्षतनांम॥चलेपथ्यग्रहकौतवै
रहितभयोसंग्राम॥३४॥चौपई॥चलित।
हस्तनापुरसबआये॥नृपधृतराष्ट्रतवैस
मजाये॥भांतिभांतिविनयोकरजोरि॥निर्म
हैंहौतीकियेंकरोरि॥भयेसुध्दपांनीतिन
दयो॥काजकर्मकृतसबहीकियो॥रुदन
करैकौरवकीनारी॥डुष्पदवागनितेपरि
जारि॥३५॥तवभीषमसबत्रियासमजाई
होईरचैजोत्रिभुवनराई॥पंडपुत्रसवपांस
बुलाए॥दिनप्रतिराजनीतिसमुजाये॥३७
भीषम॥सवैया॥कोधब्रथानकरैक
वहंनमतौकहोंमूटमसोंकरियेज्ज॥मि
त्रनकोअपमानरचैनदयाउरसत्रुनिकी

धरियेंज ॥ शत्रुसदापरस्वारथकीजिये
लोकप्रलोकनिजैउरियेज ॥ होहुहठि
नाश्लीनरनाथन ॥ वित्तकहंदिजकीह
रियेज ॥ ३७ ॥ श्रेष्ठे ॥ दयाराखियेचिन्नभू
लिक्रतुहीननकरिये ॥ बुगलचोरकीसौ
हचिन्नमेराकनधरिए ॥ सदारश्रियेता
हिसरनसरनागतआवहि ॥ भूलिहुचि
त्तप्रवीननहीकातरतालावहि ॥ त्रिया
काजदिजगायके निजकाजनि सबपरि
हरत ॥ कबिशत्रुचलतइहिरीतिजेसु
न्यतामहिमंडलकरत ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ वि
रदबडाईपाईके ॥ मर्वनकीजियेचिन्न
नविसारहुहुहरिकोंहिये ॥ विसरावोजि
नमित्त ॥ ४० ॥ राजनीतितमसवकह्योभां

विजे०

॥१८२॥

तिभांतिसमजाई॥ अत्रक्रपाकरिभक्ति
वसि॥ श्रीहरिपङ्कजेआई॥ ४१॥ भीषमउ०॥
दोहा॥ सकलभईमनकामना॥ कलमस
सबैनसाई॥ अंतअवस्थामेंमुषद॥ श्री
हरिदरसनपाई॥ ४२॥ सवेया॥ लाजसदा
विरदावलीकी॥ कविअत्रसदाजनकोसु
षकारी॥ धांवनेचक्रगहैकरकीवह॥ बां
निकहंविमरैनविसारि॥ केहरिउत्तस्यो
गिरितैं॥ अबलोकतहीजिमिकुंजरभारी
बेदकीकांनिसाईतज्यौं॥ अतराषिक्र
पानिधिपैजहमारी॥ ४३॥ दोहा॥ करीवें
दनाकृष्णकीभीषमबुद्धिनिधान॥ प्रांन
तजेभीषमतबै॥ उत्तरआणभांन॥ ४४॥ इ
ति श्रीमहाभारतेपुराणविजयमुर्तवली

॥८॥

कवि शिव विर चितायां राजा दुर्गे
धन सं मोहनं राजा युधिष्ठिर विजय नरें
॥५२॥ दोहा ॥ तवैराज्य प्रभिवेक करि
भूषण युधिष्ठिर आषाढे बौध्द पुलि पाटपर
बादलो अमित प्रताप ॥५॥ करतानि कंठ
राजधर ॥ नासे सत्र समूल ॥ अत्र सज्जन नि
केहिये ॥ तन मन मे बाढी फूल ॥२॥ दंडक
कर्म जे कु कर्म जे ते ॥ मिटे है ॥ अधर्म सर्व भूत
लस फल धर्म सरसा ययतु है ॥ ठोर ठोर दान
सनमान घने विप्र निके ॥ आनंद निधान में
न गाययतु है ॥ अत्र तत्र अत्र कवि ॥ कोऊ
नही सत्र रह्यो ॥ अस्त्र शिखो डि सो न
टुट पाईयतु है ॥३॥ भूपति युधिष्ठिर के रा
ज मे सुचे नौ जग मे दिकै ॥ असत्र सत्र धरा धरा

विजे०

॥१८३॥

ईयतु है ॥३॥ दोहा ॥ चारि बरन ते सब भइ
परि पारत नही कोई ॥ पर दोही नही क
त धन ॥ अजसन का झ होय ॥४॥ भुजंग
ममयात ॥ दरिद्रें दरिद्रि अधर्मै अधर्मी
महासाक साकी के कर्म के कर्म
लसे इइकी सी पुरी राजधानी ॥ सबे स
नी के महा दुष्पदानी ॥५॥ सुहाए अटा देषि
ये धां मधां मां ॥ पुरखी विराजै मनो कां मा
मां मां ॥ कहा लोक हो ता पुरी की निकाई
चहं वोर दोष महा घोर घाई ॥६॥ सबे बाग
फूले फले चित्त मो है ॥ मनो तेल ता कल्प की
छत्र मो है ॥ तहां धां महे नीर संयुक्त असे
मनो देव देव स के स अजैसे ॥७॥ छहौ काल
के ब्रध फूले फले है ॥ तहां को किला आदि
पंछि भले हैं ॥ कहां लो बघां नो महा सो भनी

की ॥ तहां सो कसं कान सैं सर्व जी की
८ ॥ दो ॥ धर्म सुवन भूपति वने ॥ गो
बंधव च्यारि ॥ सेवत मनवच कर्म सौं स
कतन प्राप्सु सडारि ॥ ९ ॥ गीतिका ॥ गो
तथा उ उ विचारि कै ॥ रिषिराज तहां बो
ले धनै ॥ व्यासरि पिडुर बासरि पि ॥ रिषि
राज जेतिक को गनै ॥ जगपत है हय मेध
की नौ ॥ सर्व विधि न बनाई कै ॥ पण्य ले
चतुरंग सेना ॥ भूमि जीति जाय कै ॥ १०
दोहा ॥ आयो दिसि दिसि जीति कै ॥ प्रा
मों बा ॥ जी धाम ॥ घूरन की नौ जगपत व
सब ह्ये मन काम ॥ ११ ॥ चौ ॥ जगपति
रायो सुर सुरि तीर ॥ धर्म धुरंधर गुन न मो
र ॥ सम देरि धीने प्राये भूप ॥ भूपति बहे

विजे

॥१८४॥

रेवसनभूष ॥१२॥ नितीकृतीकौरव
कीनारी ॥ यसीसकलदुष्पनसौभारी ते
सबव्यासमहारिषीराई ॥ लीनीअपनैपा
सबुलाई ॥ १३॥ दो० ॥ मायाबीतिनकौं
पुरुषदीनैरिषीदरसाय ॥ पतिलहिसब
आनंदजुत ॥ पगनपरीसबजाई ॥ १४॥ ध
सीसुरसरीकेसलीलभईसुअंतरध्यान
कैहैसोईजोकधू रचिराषीभगवान ॥ १५॥
दोहा ॥ रहैतहांधृतराष्ट्रउरुगंधारिसंग
नारि ॥ बकुतबीसरेरैनिदिन ॥ सुतकोसो
कबिचारि ॥ १६॥ एकध्वजमहीभोगई
भूपजुधिषिराई ॥ गंगचंद्रज्यौअवधि
मेदिसिदिसिवद्रोप्रताप ॥ १७॥ निसि
दिनसेवामातुकी करैनसासनभंग अ

॥८४॥

आग्याकारी सर्वदा ॥ या ॥ १० ॥ बंधवसं
गा ॥ ११ ॥ हृद्धिभईससिबंसकी ॥ अरुसाह
नभंडार ॥ वाढो ॥ अत्रविशेषिकें ॥ जडकुल
वडूपरिवार ॥ १२ ॥ चो ॥ करिभारथउबरेद
शजने ॥ अबकबितिनकेनामभने ॥ पां
चौपंडवपुत्रवलवांन ॥ अठयेसोभित
श्रीभगवान ॥ २० ॥ करनपुत्रसोभितत्र
षकेत ॥ मेघवरनबहुविधिसुषदेत ॥ क
तवर्माजादोवलिवंड ॥ प्राणपुत्रसंग्राम
अघंड ॥ २१ ॥ दिहा ॥ उबरेभारथमेंइते
ओररह्योनहीकोई ॥ जोईचतुराननरची
सोईसोईहोई ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ करनपुत्र
वषकेतसुतसरवरिभूपतिगने ॥ करि।
कुंतीवडुदेत ॥ जानतताकहग्रांनसम

विज्ञे०

॥ १५ ॥

२३ ॥ **छप्पे** ॥ नित्यनित्यरिषीराजभूरि
भोजनतहांपावहि ॥ घटदरसननितिवा
ससकलमंगलउपजावहि ॥ सपतदीप
नवरखंडसकलबंदीगुनगावहि ॥ हरषी
हरषीमणिमुक्तदुरदवाजीगनपावहि
कविशत्रुसकलभुवपतिजपतदीननर
कोउनदिषिये ॥ भूवभूषजुधिषिराजा
मेंसुथलथलआनंदलिषिये ॥ २४ ॥ **दो**
हा ॥ द्वादसवरखेंवनरहे ॥ त्रयोदशोअ
ग्नात ॥ मारिकीचकनिजसल्यो हर्ष
वंतद्वैगात ॥ २५ ॥ सबकौरवपरिवाखु
तमारेजसजगजीति ॥ रहतहस्तनापुर
नृपति ॥ आसौअनुजसमीति ॥ २६ ॥ **छ**

ये॥ फूले दो नगंगे वसकल को रव तरसा
जे॥ बारिज यदुध भयउल हरि विनं नरा
जे॥ मधुकषजल जंतु॥ सत्यतहां भयेउ
सुसर्मा॥ भूरिश्रवा भगदंत भयोत है ग्राह
सुसर्मा॥ करिनां वधनं जयधीरकों॥ त्रिभु
वनपतिषे वट भयेऊ॥ जसतिलक धर्म सु
तसीस करि सुरन सरिता इमि तरि गगये
ऊ॥ २७॥ दोहा॥ जीयो भारथ कृष्णमत
तिनही सहाई पाई॥ एक छत्र मही भोगई
छत्र बुधि छिर गई॥ २८॥ भारथ सुनि भा
षा कियो॥ छत्र सुबुधि हि पाई॥ कहत सु
नत पातक न सत॥ अघ दीर्घ दुष जात २८
चारि वरन मैं सो सुनै॥ तरुनी पुरुष जो को
ई॥ प्रगटे हरि की भक्ति उर॥ मोचन अघ को

विज्ञे०
॥१८६॥

होई ॥३०॥ **सवेया** ॥ जोफलतीरथजात
कियेअरुजोफलघोउशदानदीयेतैं जो
फलसंगमैंनेमरचे ॥ अरुजोफलहैस
तजग्यकीयेतैं ॥ ग्यानकथाभिसुनैंफ
लजोकवि ॥ छत्रवटेबहुबुद्धिहियेतैं
जोफलरुद्रप्रसन्नभये ॥ फलसोईजुधि।
धिरनावलियेतैं ॥३१॥ सेवतसाधकसि
द्धनकौ ॥ अरुईसप्रसन्नभयेवरणायें
तीरथराजप्रयागगये ॥ अरुसागरसंग
मैगंगअन्होये ॥ जोनरवद्रिकाथान
धरै ॥ अरुपर्वतराजचटेसिरनाये ॥ सो
इहभारथग्रंथकीध्याया ॥ सुनैनरहो
तपवित्रसुनाये ॥३२॥ **दोहा** ॥ जोइह
भाषाकविसुकवि ॥ लीजोचूकसुधा

॥८६॥

रि श्रीहरिके परतापहे कियो ग्रंथ उर
धारि ३३ नाम विजय मुक्तावली वि
जय जुद्ध में होत अरिगन वाकैं अग्रभु
जक देन होत उदोत ३४ सदा लक्ष्म भार
थकी संख्या कहियत व्यास हरिके
पद पद तापते कौरव भये निरास जी
न कैं सदा सदा रहे निसिदिन श्रीगो
विंद जिन जिन कैं हा करि सकत रहे तत
मित होत मिकंद ३५ छत्र कहत क
र जोरि कैं हों मुक बिन कों दास भार
थकी भाषा करी बचन सुने जो व्यास
३६ ॥ इति श्रीमहाभारत पुष्पे विज
य मुक्तावली कवि छत्र विरचिता यांना
मतियाली समो ध्यायः ॥ ४३ ॥ श्रीरक्त
संवत् १६०२ मा सोममे मासे कार्तिके मा

॥विजे०॥
॥१८७॥

श्रीगणेशाय नमः

सेषु भेषु च पदे स्तिथौ ॥३॥ वधवा सेर
लीखितमीश्वरामणेन ॥ पठनार्थक
वरजीश्रीलक्ष्मणजीपठनार्थक
यादिसंपुस्तकं दद्यात् ॥ तादृशं लिखितं मा
या यदि शुद्धमशुद्धं वा ॥ मम दोषो न दीय
ते ॥ १ ॥ जले रक्षं स्य जले रक्षं ॥ रक्षं सिधल
बंधनात् ॥ मुखे हस्तेन दातव्यं ॥ एवं व
दति पुस्तकं ॥ २ ॥ कर्कटग्रीवाने न मु
ख ॥ सबुद्धसेहे सुजां न ॥ लिप्थो जात
अतिकष्टो सठजानत आमान ॥ ३ ॥
मोजपुरमधे पुस्तक लिखितं ॥ ग्राम
लीधरमातमा केयरलक्ष्मणजीकी ॥
श्री ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री ॥
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

॥१८८॥

یادگار

سازگار

رامین
عظیم نیکو کتب خانہ

